# बुन्देलखण्ड में विभिन्न प्रबन्धतन्त्रों द्वारा संचालित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के समान सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्र/छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धियों और अनुशासनात्मक व्यवहारों का तुलनात्मक अध्ययन

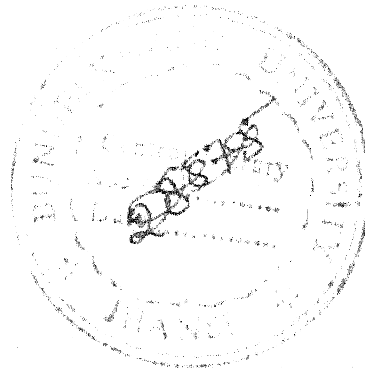
●

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के शिक्षा संकाय
में० पी–एच० डी० की उपाधि
हेतु प्रस्तुत

## शोध-प्रबन्ध




**1994**



●

शोध निर्देशक :
डा० रामलखन विश्वकर्मा
एम०ए०, एम०एड०, पी–एच०डी०
दयानन्द वैदिक कालेज, उरई (उ.प्र.)

शोधकर्ता :
अशोक कुमार तरसौलिया
प्रवक्ता : बी०एड० विभाग
गान्धी महाविद्यालय, उरई (उ.प्र.)

प्रमाणित किया जाता है कि श्री अशोक कुमार तरसौलिया, प्रवक्ता, बी०एड० विभाग, गान्धी महाविद्यालय, उरई ने "बुन्देलखण्ड में विभिन्न प्रबन्धतंत्रों द्वारा संचालित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के समान सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्र/छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धियों और अनुशासनात्मक व्यवहारों का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर मेरे मार्गदर्शन में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध तैयार किया है। ये बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी को पी-एच०डी० परीक्षा की नियमावली के सभी उपबन्धों की पूर्ति करते हैं।

यह शोध प्रबन्ध उन्हीं के अनुसन्धान, परिश्रम और अध्ययन का परिणाम है तथा इस योग्य है कि परीक्षण के लिए भेजा जाय। यह उनकी मौलिक कृति है इसको किसी अन्य विश्वविद्यालय की शोध उपाधि के विचारार्थ प्रस्तुत नहीं किया गया है।

दिनाँक: 3-5-94

(डा० रामलखन विश्वकर्मा)
प्रवक्ता - बी०एड०विभाग
दयानन्द वैदिक कालेज, उरई

## आमुख

शिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास करते हुए देश के लिये कुशल नागरिकों का निर्माण करती है। कुशल नागरिकों के तैयार होने से ही समाज तथा देश दोनों का विकास होता है। बालकों की शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान प्राथमिक शिक्षा का है। यह शिक्षा की आधारशिला होती है। मुदालियर आयोग ने माध्यमिक शिक्षा को रीढ़ की हड्डी बतलाते हुए उसके महत्व को स्वीकार किया है। यह उच्च शिक्षा हेतु बालकों को तैयार करती है तथा प्राथमिक एवं उच्च शिक्षा को जोड़ने वाली कड़ी का कार्य करती है।

माध्यमिक शिक्षा का अपना अलग महत्व है। यह प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा को जोड़ती है। इस स्तर तक सभी को समान शिक्षा प्रदान की जाती है। सरकार ने भी इस स्तर के महत्व को स्वीकार करते हुए इस स्तर तक निःशुल्क एवं अनिवार्य बनाने का विकल्प चुना है, सरकार इस विकल्प की पूर्ति हेतु विद्यालयों की संख्या में तेजी से वृद्धि कर रही है। परन्तु संख्या की वृद्धि के साथ-साथ इनके स्तर में दिन-प्रतिदिन गिरावट आती जा रही है। उत्तर प्रदेश में इन विद्यालयों का संचालन स्थानीय निकायों तथा निजी अभिकरणों द्वारा किया जा रहा है। निजी अभिकरण कोई भी धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थायें हो सकती हैं। प्रायः यह देखा जाता है कि विभिन्न अभिकरण अपने संसाधनों के आधार पर विद्यालयों की व्यवस्था करते हैं, परिणाम स्वरूप इन विद्यालयों के परिणामों में भी भिन्नता होती है।

आज सामान्य अभिभावक अपने बच्चों को व्यक्तिगत एवं स्थानीय निकायों के विद्यालयों में भेजना नहीं चाहते। अभिभावक इन विद्यालयों को उपेक्षित दृष्टि से देखते हैं। विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक अभिकरणों द्वारा संचालित विद्यालयों में धनाभाव के कारण वे अपने बच्चों को भेज नहीं पाते। मेरे मन में अभिभावकों का इन विद्यालयों को उपेक्षित दृष्टि से देखने के कारणों

का पता लगाने तथा इनको लोकप्रिय बनाने के सम्बन्ध में विचार उत्पन्न हुए।

मूलरूप से इस शोध कार्य के प्रेरणा स्रोत पूज्य गुरूदेव शिक्षाविद दिवंगत डा0 आत्मानन्द जी मिश्र हैं, जिन्होंने मेरे विचारों को समझकर शोध विषय को निरूपित किया तथा मार्गदर्शन किया। मैं स्वर्गीय डा0 आत्मानन्द जी मिश्रा का हृदय से आजीवन ऋणी रहूँगा।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मेरे पूज्य पिता श्री द्वारिका प्रसाद तरसौलिया की प्रेरणा एवं आर्शीवाद की ही परिणित है, जिन्होंने मुझे उक्त कार्य की पूर्णता के लिए पारिवारिक दायित्वों से मुक्त रखा है तथा समय-समय पर मेरा मार्गदर्शन भी किया है।

मैं शोध निर्देशक डा0 रामलखन जी विश्वकर्मा, प्रवक्ता, बी0एड0 विभाग, दयानन्द वैदिक कालेज, उरई का अत्यन्त आभारी हूँ। डा0 रामलखन जी विश्वकर्मा ने शोध प्रबन्ध के विषय चयन से लेकर कार्य पूर्ण होने तक निरन्तर सहानुभूति पूर्ण एवं विद्वतापूर्ण निर्देश प्रदान किये हैं।

मैं डा0 श्रीमती देवकी तिवारी, प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, डा0 योगेश कुमार गुप्ता, शिक्षा विभाग, हिन्दू कालेज, मुरादाबाद तथा श्रद्धेय गुरूवर श्री रमनबिहारी लाल जी, निवर्तमान प्रभारी, बी0एड0 विभाग, डी0वी0 कालेज, उरई के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने समय-समय पर अपना सहयोग प्रदान किया तथा कार्य में बाधायें आने पर कार्य को गतिशील बनाये रखने की प्रेरणा प्रदान की।

गाँधी महाविद्यालय उरई के निवर्तमान प्रवक्ता हिन्दी विभाग डा0 श्री नारायण अग्निहोत्री, डा0 सतीश चन्द्र शर्मा, प्रवक्ता, मनोविज्ञान, डा0 राजेन्द्र नाथ शर्मा, प्रवक्ता, बी0एड0विभाग, श्री महेश चन्द्र शुक्ला, प्रवक्ता भूगोल विभाग, गांधी महाविद्यालय उरई, डा0 रामनिवास मानव, प्रवक्ता -

बी०एड० विभाग, डी०वी० कालेज उरई से मुझे समय-समय पर जो सहयोग एवं प्रेरणा प्राप्त हुई, उसके लिए मैं उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

सभी झाँसी मण्डल के चयनित विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों, अध्यापकों तथा संख्याधिकारियों एवं बेसिक शिक्षाधिकारियों ने शोध प्रबन्ध के संकलन में जो अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया। इन सभी लोगों के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रगट करता हूँ।

विभिन्न पुस्तकालयों के पुस्तकालयाध्यक्षों ने अपने पुस्तकालयों में अध्ययन की सुविधायें प्रदान की हैं। मैं इन सभी लोगों के प्रति हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करता हूँ। अपने विभाग के सभी साथियों एवं इष्ट मित्रों का आभारी हूँ, जिन्होंने शोधकार्य हेतु समय-समय पर मेरा उत्साहवर्धन किया है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा इस शोधकार्य के लिये दस हजार रूपये की आर्थिक सहायता प्रदान की गयी है, जिसके लिये मैं उसका आभारी हूँ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के अन्तर्गत तथ्यों एवं निष्कर्षों के आधार पर जो सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं, यदि सभी सरकार, प्रबन्धतंत्र, प्रधानाध्यापक, अध्यापक तथा अभिभावक उन पर निष्ठापूर्वक अमल करें तथा अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह करें, तो विद्यालयों की गिरती हुई स्थिति में पर्याप्त सुधार हो सकता है तथा यह सभी विद्यालय लोकप्रिय बनाये जा सकते हैं। सरकार भी कम व्यय करने पर ही अपने उद्देश्य में सफल हो सकती है।

शोधकर्ता,

(अशोक कुमार तरसौलिया)
प्रवक्ता - बी०एड० विभाग
गाँधी महाविद्यालय, उरई

अनुक्रमणिका


| अध्याय | पृष्ठ सं0 |
| --- | --- |
| प्रथम अध्याय | 01 - 36 |

1. प्रस्तावना
2. प्राथमिक एवं कनिष्ठ माध्यमिक शिक्षा की प्रगति एवं विकास की पृष्ठभूमि
3. उत्तर प्रदेश में शिक्षा का शैक्षिक प्रशासन तथा शैक्षिक अभिकरण
4. बालकों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारक
5. बालकों के आचरण को प्रभावित करने वाले कारक
6. शोध समस्या का महत्व
7. शोध कार्य के उद्देश्य
8. परिकल्पना
9. परिसीमन

द्वितीय अध्याय — 37 - 52

पूर्व शोध कार्यो का विवरण

तृतीय अध्याय — 53 - 70

बुन्देलखण्ड सम्भाग की पृष्ठभूमि

1. बुन्देलखण्ड सम्भाग की भौगोलिक संरचना
2. बुन्देलखण्ड सम्भाग की सामाजिक पृष्ठभूमि
3. बुन्देलखण्ड सम्भाग की राजनैतिक पृष्ठभूमि
4. बुन्देलखण्ड सम्भाग का जनसंख्यात्मक विवरण
5. बुन्देलखण्ड सम्भाग के शैक्षिक पिछड़ेपन के कारण
6. बुन्देलखण्ड सम्भाग में स्थित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालय एवं उनके प्रबन्धतंत्र

चतुर्थ अध्याय 71 - 87

1. जनसंख्या एवं न्यादर्श
2. प्रयुक्त परीक्षण सामग्री
3. प्रदत्तों का संग्रह
4. सांख्यिकीय विश्लेषण

पंचम अध्याय 88 - 111

शैक्षिक उपलब्धि : प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

षष्टम् अध्याय 112 - 135

1. अनुशासनात्मक व्यवहार : प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या
2. प्रशासनिक व्यवस्था : प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

सप्तम् अध्याय 136 - 145

1. निष्कर्षों का तुलनात्मक अध्ययन
2. परिकल्पनाओं का सत्यापन

अष्टम् अध्याय 146 - 158

1. आशय एवं सुझाव
2. भावी शोध कार्य हेतु सुझाव

संदर्भ ग्रन्थ सूची 159 - 169

परिशिष्ट

(अ) 1. शैक्षिक उपलब्धि, अनुशासनात्मक व्यवहार तथा प्रशासनिक व्यवस्था के औसत मध्यमान प्राप्तांक तालिका 170 - 176
2. तालिकाओं का विवरण

(ब) 1. शैक्षिक उपलब्धि के मूल प्राप्तांक 177 - 198

2. अनुशासनात्मक व्यवहारों से सम्बन्धित
   अध्यापकों के मतों के मूल प्राप्तांक

3. प्रशासनिक व्यवस्था से सम्बन्धित अध्यापकों
   के मतों के मूल प्राप्तांक

(स) 1. हिन्दी, गणित, सामान्य विज्ञान तथा सामाजिक
   विज्ञान के प्रश्न पत्र

2. व्यवहार मापनी

3. सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी (शहरी)
   (एस0पी0 कुलश्रेष्ठ)

4. सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी (ग्रामीण)
   (एस0पी0 कुलश्रेष्ठ)

- - - - - - -

## ग्राफ का विवरण


| क्रम संख्या | विवरण | पृष्ठ सं० |
| --- | --- | --- |
| 1 | शैक्षिक उपलब्धि {विभिन्न विषयों} का लेखाचित्र | 108 |
| 2 | शैक्षिक उपलब्धि लेखाचित्र | 110 |
| 3 | अनुशासनात्मक व्यवहार का लेखाचित्र | 122 |
| 4 | प्रशासनिक व्यवस्था का लेखाचित्र | 134 |

## प्रथम अध्याय

1. प्रस्तावना

2. प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा की प्रगति एवं विकास

3. उत्तर प्रदेश में शिक्षा का शैक्षिक प्रशासन तथा अभिकरण

4. बालकों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारक

5. बालकों के आचरणों को प्रभावित करने वाले कारक

6. शोध समस्या का महत्व

7. शोधकार्य के उद्देश्य

8. परिकल्पना

9. परिसीमन

## प्रस्तावना

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा का उद्देश्य वर्तमान सभ्यता एवं संस्कृति की सुरक्षा तथा उसका विकास करना है। शिक्षा के द्वारा हम आगे आने वाली पीढ़ी को अपनी संस्कृति एवं सभ्यता से अवगत कराते हैं तथा कुशल एवं विचारशील नागरिक के रूप में तैयार करते हैं। शिक्षा ही बालकों में संस्कृति के प्रति सम्मान एवं राष्ट्र के प्रति प्रेम की भावना को जाग्रति करती है। शिक्षा के द्वारा ही बच्चों का शारीरिक, मानसिक एवं चारित्रिक गुणों का विकास करते हुए उनको जीवकोपार्जन में दक्ष एवं राष्ट्र प्रेम की भावना को उत्पन्न करती है। जिसके फलस्वरूप बालक का विकास ही नहीं वरन् उसमें देश प्रेम की भावना का सन्निहन होता है। उचित शिक्षा के अभाव में बालकों को राष्ट्र के लिये कुशल एवं राष्ट्र प्रेमी नागरिक नहीं बनाया जा सकता है।

प्लेटो ने शिक्षा को वांछित आदतों के विकास की प्रक्रिया माना है। उनके अनुसार बालक शिक्षा के द्वारा ही गुण एवं सतकर्म की ओर आकर्षित होता है। शिक्षा के द्वारा बालक जितने अधिकाधिक गुणों को विकसित करेगा, उतना ही समाज उन्नति करेगा। जैसा व्यक्ति निर्मित होगा, उसी प्रकार के समाज का निर्माण होगा। बालक की शिक्षा के लिये तीन प्रमुख शैक्षिक, संस्थायें मानी गयी हैं। परिवार, समुदाय तथा विद्यालय । परिवार बालक की शिक्षा की सर्वोत्तम संस्था मानी जाती है। शिशु जन्म के पश्चात जिन गुणों को ग्रहण करता है, वह उन्हीं संस्थाओं से प्राप्त करता है। विद्यालयी शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात बालक अपने में आवश्यकतानुसार परिवर्तन लाता है और फिर समाज को भी परिवर्तित करने का प्रयास करता है।

बालक की विद्यालयी शिक्षा में सबसे महत्वपूर्ण स्थान प्राथमिक शिक्षा का होता है। यह पेड़ की जड़ की तरह महत्वपूर्ण होती है। इसी के सहारे उसकी

आगे की शिक्षा चलती है। प्राथमिक शिक्षा के साथ-साथ माध्यमिक शिक्षा भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। यह बालक की शिक्षा की मध्य की सीढ़ी है, जो बालक को उच्च शिक्षा के लिये तैयार करती है।

माध्यमिक शिक्षा में ही कनिष्ठ माध्यमिक शिक्षा का अपना अलग महत्व है। इस स्तर तक सभी बालकों को एक समान शिक्षा प्रदान की जाती है। इसके पश्चात ही शिक्षा जगत में शिक्षा को विभिन्न शाखाओं में विभक्त किया जाता है। इसी शिक्षा के आधार पर ही बालकों को अपने-अपने भविष्य तथा देश के भविष्य को बनाने का अवसर प्राप्त होता है। सरकार ने भी इस शिक्षा को अधिक महत्वपूर्ण माना है, इसीलिये कक्षा प्रथम से अष्टम् कक्षा तक के छात्रों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का विकल्प रखा है। सरकार इस विकल्प के लिये ही अधिक से अधिक विद्यालयों की स्थापना कर रही है तथा व्यक्तिगत संस्थाओं द्वारा चलाये जा रहे हैं। विद्यालयों को मान्यता प्रदान कर रही है, परन्तु इन विभिन्न प्रकार की संस्थाओं द्वारा संचालित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के परिणाम विभिन्न प्रकार के हैं। इन संस्थाओं में बालकों को उचित रूप से तैयार करने की क्षमता नहीं है। अतः इस ओर अध्ययन कर इसमें सुधार लाने की आवश्यकता है।

## प्राथमिक एवं कनिष्ठ माध्यमिक शिक्षा की प्रगति तथा विकास की पृष्ठभूमि

### 1. वैदिककालीन शिक्षा :-

वैदिक काल में ऐसा विश्वास था कि प्रत्येक व्यक्ति पर तीन प्रकार के ऋण होते हैं, जिनसे उऋण होना उनका परम कर्तव्य है। यह ऋण है, देव ऋण, पितृ ऋण एवं ऋषि ऋण । यह तीनों ऋण क्रमशः दान और यज्ञ, सन्तान-उत्पत्ति तथा शिक्षा और ग्रन्थों के अध्ययन एवं अध्यापन के द्वारा चुकाये जा सकते हैं।

भारत में प्राचीन शिक्षा प्रणाली ने ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में मौलिक विचारकों एवं विद्वानों को जन्म देकर वैदिक साहित्य को सुरक्षित रखा है। ऐसा कोई भी देश नहीं है, जहाँ पर ज्ञान के प्रति प्रेम इतने प्राचीन समय में आरम्भ हुआ हो या जिसने इतना स्थायी और शक्तिशाली प्रभाव उत्पन्न किया हो। वैदिक युग के साधारण कवियों से लेकर आधुनिक युग के बंगाली दार्शनिकों तक शिक्षकों और विद्वारों का एक निर्विघ्न क्रम रहा है। वैदिक युग से लेकर अद्यतन भारत में शिक्षा का मूल तात्पर्य यह रहा है – "शिक्षा प्रकाश का वह श्रोत रहा है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ प्रदर्शन करती है।"

वैदिक काल में शिक्षा के मुख्य उद्देश्य, ईश्वर भक्ति तथा धर्म की भावना को जागृत करना, चरित्र निर्माण तथा व्यक्तित्व का विकास करना माने जाते रहे हैं। इसके अतिरिक्त नागरिक तथा सामाजिक कर्तव्यों का पालन, सामाजिक उन्नति, राष्ट्रीय संस्कृति का रक्षण और प्रसार ये भी शिक्षा के आदर्शों के अन्तर्गत ही आते थे।

वेदों में अनेक ऐसे उदाहरण मिलते हैं जिनसे ज्ञात होता है कि अतीत में भी भारत में संगठित रूप से गुरूओं द्वारा शिक्षा दी जाती थी। ऋग्वेद में कुछ इस प्रकार का संकेत मिलता है, जिसमें पाठशाला के समान किसी संस्था का अनुमान किया जा सकता है। "छान्दाग्य उपनिषद" से ज्ञात होता है कि बालक गुरू गृह में रहकर विद्याध्ययन करते थे। वैदिक साहित्य से इस बात की पुष्टि होती है कि इस समय आश्रम स्थापित हो गये थे, जहाँ गुरू वैयक्तिक रूप से शिष्यों को शिक्षा प्रदान करते थे।

गुरूकुल प्रणाली प्राचीन भारतीय शिक्षा की ही विशेषता थी। इसके अनुसार विद्यार्थी को दीर्घकाल तक गुरू गृह पर रहकर विद्याध्ययन करना पड़ता था। गुरूकुल गाँवों के कोलाहल से दूर शांत तथा एकांत स्थान में हुआ

करते थे, जिससे विद्यार्थी नगरीय आकर्षणों से विरत रहकर विद्याध्ययन में अपना चित्त लगा सके। विद्यार्थी गुरूओं के साथ रहकर गुरू के उच्च चरित्र तथा आदर्श जीवन को देखकर उसका अनुकरण करके अपने जीवन का निर्माण करते थे।

गुरूकुल प्रवेश करते समय एक विशेष संस्कार होता था, जिसे "उपनयन" संस्कार कहते थे। इसकी आयु साधारणतः आठ वर्ष थी। ब्राम्हण तथा क्षत्रिय के लिए 11 वर्ष तथा वैश्य के लिए 12 वर्ष की आयु में गुरूकुल प्रवेश का विधान था। इस संस्कार के बाद बालक ब्रम्हचारी, अंतेवासी अथवा आचार्य कुलवासी कहलाने लगता था। इस प्रकार प्राचीन भारत में समाज या राज्य की ओर से प्राथमिक या पूर्व माध्यमिक शिक्षा संस्थाओं की व्यवस्था नहीं थी, इस स्तर की शिक्षा मात्र गुरूकुलों में ही दी जाती थी।

2. बौद्धकालीन शिक्षा :-

वैदिक धर्म की भाँति ही महात्मा बुद्ध ने भी शिक्षा को मोक्ष प्राप्ति एवं जीवन का अन्तिम उद्देश्य माना है, किन्तु उन्होंने यज्ञ के स्थान पर ज्ञान प्राप्ति, अहिंसा, सदाचार तथा पवित्र जीवन की प्राप्ति के उपाय बतलाये हैं। आरम्भ में यह शिक्षा पद्यति बौद्ध धर्म के प्रचारकों के प्रशिक्षणार्थ ही प्रचलित की गई थी, किन्तु कालान्तर में बौद्ध विद्यापीठ के द्वार प्रत्येक जाति तथा धर्म के लिये खोल दिये गये।

वैदिक कालीन शिक्षा की तरह ही बौद्ध कालीन शिक्षा का भी प्रारम्भ संस्कार से होता था, जिसे "पब्बजा" अथवा "प्रवज्या" कहते थे। इस संस्कार के द्वारा 8 वर्ष का बालक संघ या मठों में प्रवेश करता था। वह विद्यार्थी सिर मुड़ाकर, पीत वस्त्र धारण कर शिष्य रूप में स्वीकार करने की प्रार्थना करता था। प्रार्थना की स्वीकृति के पश्चात उसे अपने उपाध्याय के

सम्मुख शरणमयी के तीन प्रणों को तीन बार तीव्र ध्वनि में उच्चारण करना पड़ता था -

बुद्धं शरणं गच्छामि ।

धम्मं शरणं गच्छामि ।।

संघं शरणं गच्छामि ।।।

संस्कार के उपरान्त प्रविष्ट छात्र "समनेर" अथवा "श्रमण" कहलाता था ।

आरम्भ में "श्रमण" तथा भिक्षु वनों में पेड़ों के नीचे तथा गुफाओं में निवास करते थे परन्तु बाद में अपने उपाध्यायों के साथ मठों तथा विहारों में रहने लगे। प्राचीन गुरूकुलों की भाँति मठ तथा विहारों से जुड़े हुये विद्यालय अथवा शिक्षा मण्डल होते थे। जहाँ विद्यार्थी अपने उपाध्यायों के चरणों में बैठकर विद्याध्ययन करते थे।

जातक कथाओं के द्वारा हमें यह ज्ञात होता है कि बौद्ध युग में बौद्ध मठ प्राथमिक शिक्षा के केन्द्र थे। प्रारम्भ में यह शिक्षा धर्म संपृत्त थी, परन्तु बाद में यहाँ पर भी सांस्कारिक शिक्षा दी जाने लगी। हमें चीनी यात्रियों हृानसांग और आइसिंग जो भारत में 7वीं शताब्दी में आये थे, उनके लेखों में सार्वजनिक या प्राथमिक शिक्षा का उल्लेख मिलता है। बौद्ध मठों में धार्मिक शिक्षा के अतिरिक्त शब्द विद्या, शिल्प विद्या, चिकित्सा विद्या आदि का भी अध्ययन करना पड़ता था। शिक्षा का माध्यम पाली भाषा थी जो जनसाधारण द्वारा बोली जाती थी।

इसप्रकार हम देखते हैं कि जिन शिक्षा संस्थाओं का अभाव वैदिक युग में रहा है, उनका श्री गणेश सर्वप्रथम बौद्धकाल में बौद्ध विद्वानों द्वारा किया गया।

तक्षशिला बौद्धकालीन शिक्षा केन्द्र के रूप में विख्यात था। यहाँ पर

सहस्त्रों विद्वान आचार्य व्यक्तिगत रूप से पारिवारिक प्रणाली पर छात्रों को शिक्षा देते थे । विद्वान व प्रसिद्ध शिक्षकों के कारण ही इस शिक्षा केन्द्र की इतनी ख्याति थी। भारत के कोने कोने से ही नहीं अपितु विदेशों के छात्र भी यहाँ विद्याध्ययन करने के लिए आते थे। कभी-कभी तो एक-एक आचार्य के पास 500 छात्र तक हो जाते थे। तक्षशिला उच्च शिक्षा के लिए प्रसिद्ध था । लगभग 16 वर्ष की आयु के छात्र यहाँ पहुँचते थे। वेदान्त, व्याकरण, ज्योतिष विद्या, चिकित्सा विज्ञान तथा सैनिक विद्या आदि यहाँ के विशेष अध्ययन के विषय थे। 600 ई0पू0 में तो यह शिक्षा केन्द्र अपनी प्रसिद्धि की पराकाष्ठा पर पहुँच गया था।

नालन्दा का प्रथम संस्थापक सम्राट अशोक को ही कहा जाता है। नालन्दा विश्वविद्यालय का लगभग 1 मील लम्बा और आधा मील चौड़ा सम्पूर्ण क्षेत्र एक विशाल व दृढ़ चार दीवारी से घिरा था। इसमें 8 बड़े सभा भवन तथा 300 अध्ययन कक्ष थे ये भवन छः मंजिलें थें । एक विशाल पुस्तकालय था जिसमें सभी धर्मों, विषयों, कलाओं, विज्ञानों तथा कौशलों की अप्राप्य पुस्तकों का प्रचुर संग्रह था। पुस्तकालय तीन खण्डों "रत्न सागर", "रत्नोदधि" तथा "रत्नरंजक" थे। यहाँ का शिक्षा स्तर बहुत ऊँचा था इसी कारण इसकी ख्याति देश विदेशों में थी । तिब्बत, चीन, कोरिया, ब्रम्हा, जावा, सुमात्रा आदि अनेक सुदूर देशों से छात्र तथा विद्वान यहाँ विद्याध्ययन के लिए आते थे।

3. <u>मुस्लिम कालीन शिक्षा :-</u>

भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना के पूर्व यहाँ बौद्ध तथा ब्राम्हणीय शिक्षा पर्याप्त प्रचार में थी। मुस्लिम युग में शिक्षा की व्यवस्था मकतबों तथा मदरसों में की गयी।

मुस्लिम शिक्षा पद्धति में प्रारम्भिक शिक्षा प्रदान करने के लिए

मकतबों की व्यवस्था थी। मकतब शब्द से अभिप्राय उस स्थान विशेष से लिया जाता था जहाँ लिखना पढ़ना सिखाया जाता था। साधारणतया प्रत्येक मकतब किसी न किसी मस्जिद के साथ जुड़ा रहता था। कहीं-कहीं मकतब मौलबियों के घर अथवा अन्य स्थानों पर भी लगते थे। शिक्षक का भरण-पोषण राज्य के धनी, विद्या प्रेमी व्यक्तियों अथवा राज्य के द्वारा किया जाता था। शिक्षा पर व्यय करने के लिये राज्य की ओर से पर्याप्त धन मिलता रहता था। मकतब में प्रवेश के समय विस्मिल्लाह की रस्म होती थी, यह रस्म उस समय सम्पन्न होती थी, जब बालक 4 वर्ष 4 माह 4 दिन का हो जाता था। उच्च शिक्षा की व्यवस्था मदरसों में की जाती थी।

देशभर के गाँवों, कस्बों तथा नगर के मोहल्लों में जहाँ मुस्लिम जनसंख्या अधिक होती मस्जिदों का निर्माण कराया गया। इन मस्जिदों के साथ ही मकतब होते थे। उच्च शिक्षा के केन्द्र मदरसों को नगरों में निर्मित किया जाता था जो मुस्लिम शासकों की राजधानी होती थी। उस समय शिक्षण विधि मौखिक थी। बालकों को "कलमा" रटना पड़ता था तथा कुरान की आयतें कंठस्थ करनी पड़ती थी।

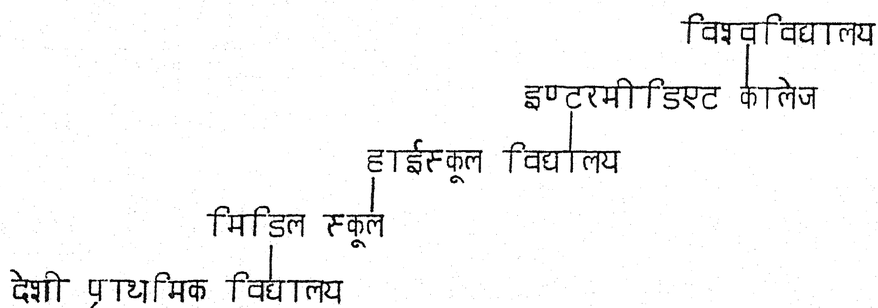
## 4. ब्रिटिश काल में शिक्षा :-

ब्रिटिश शासन काल में शिक्षा पर व्यक्तिगत अधिकार क्षीण होने लगे और उस पर राज्याधिकार की अभिवृत्ति स्वीकार की जाने लगी। सन् 1812 ई0 में शिक्षा राजकीय विषय के रूप में आंशिक ढंग से मान्य ठहराई गई और इसी समय से भारत में राजकीय शिक्षा का सूत्रपात हुआ। इस समय कम्पनी का सर्वोच्च अधिकारी लार्ड मिन्टो ने कम्पनी के संचालकों को एक पत्र लिखकर भारतीय शिक्षा की दयनीय दशा का चित्र अंकित किया और लिखा कि यदि भारतीयों की शिक्षा पर तत्काल ध्यान नहीं दिया गया तो उनके ज्ञान की परिधि अत्यन्त संकीर्ण हो जायेगी तथा विद्वानों की संख्या कम हो जायेगी,

योग्य शिक्षित व्यक्तियों के अभाव में आगे चलकर शिक्षा का पुनरूद्धार असम्भव हो जायेगा। परिणाम स्वरूप 1813 ई0 में जब कम्पनी के आज्ञा पत्र का पुर्नशोधन किया गया, उस समय गम्भीर विचार करने के पश्चात उसमें शिक्षा सम्बन्धी धारा जोड़ी गयी एवं 1813 ई0 में शिक्षा को राजकीय विषय के रूप में स्वीकार किया गया।

सन् 1813 के आज्ञा पत्र के अनुसार शिक्षा का उत्तरदायित्व कम्पनी पर आ गया। इस पत्र के अनुसार यह निश्चय किया गया कि कम्पनी द्वारा एक लाख रूपये की धनराशि प्रतिवर्ष शिक्षा के ऊपर व्यय की जायेगी। 1823 में बंगाल में लोक शिक्षा समिति की स्थापना की गयी, जिसमें 10 सदस्य मनोनीत किये गये, जिन्हें इस एक लाख रूपये की धनराशि को व्यय करने का अधिकार दिया गया। 1842 ई0 में इस समिति को भी भंग कर दिया गया तथा इसके स्थान पर शिक्षा परिषद की स्थापना की गयी।

1854 के वुड के घोषणा पत्र के आधार पर भारत के प्रत्येक प्रांत में जनशिक्षा विभाग (Department of Public Instruction) की स्थापना की गयी। इस विभाग का सर्वोच्च अधिकारी जन शिक्षा संचालक कहलाता था। आदेश पत्र में यह मत प्रकट किया गया कि सम्पूर्ण भारत में क्रमबद्ध शिक्षा संस्थाओं की योजना को क्रियान्वित किया जाय। "आदेश पत्र" ने इन संस्थाओं के स्वरूप को निम्नप्रकार रखा :-



सन् 1882 ई0 हन्टर आयोग के आधार पर प्राथमिक शिक्षा के संगठन एवं प्रशासन सम्बन्धी महत्वपूर्ण कार्यो के लिये सुझाव दिये गये। इसने इंग्लैण्ड की काउण्टी कौंसिल के समान प्राथमिक शिक्षा का भार नगरपालिकाओं और जिला परिषदों को सौंप देने का प्रस्ताव रखा। जिससे यह दोनों अपने क्षेत्र की शिक्षा सम्बन्धी बातों के लिए उत्तरदायी हों और यह स्थानीय संस्थायें अपने क्षेत्र की शिक्षा व्यवस्था, विकास एवं व्यय तथा निरीक्षण का सम्पूर्ण कार्यभार वहन करें। इन सुधारों के फलस्वरूप सन् 1802 ई0 से 1902 ई0 तक प्राथमिक शिक्षा पर व्यय की जाने वाली धनराशि को स्थानीय संस्थाओं में 22 लाख रूपये तक बढ़ा दिया गया, परन्तु सरकार ने केवल 15 लाख रूपये ही स्वीकृत किये।

1902 ई0 में इंग्लैण्ड में बालफोर कानून के आधार पर प्राथमिक शिक्षा राज्य का विषय बन गई। इसी आधार पर भारत में भी 1904 ई0 के पश्चात प्राथमिक शिक्षा राज्यों का भाग बन गई और इसका यथेष्ट प्रसार हुआ। नूरूल्ला एवं नायक ने आयोग की सराहना करते हुए लिखा है कि -

"आयोग की जाँच के फलस्वरूप भारत में महान शैक्षिक जागृति हुई और उसके मुख्य निर्णयों का 1902 तक भारत की शिक्षा नीति पर प्रभुत्व रहा।"

1882 से 1902 तक की शिक्षा की अवधि में प्राथमिक शिक्षा के विकास में शिथिलता रही, परन्तु माध्यमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा का अभूतपूर्व विस्तार हुआ। नूरूल्लाह व नायक ने लिखा है कि -

"इस अवधि की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि माध्यमिक और कालेज शिक्षा का अभूतपूर्व विस्तार था।"

1912 ई0 में सीमान्त प्रान्त में निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था की गयी। 1935 में भारत सरकार अधिनियम 3 के अनुसार शिक्षा के कार्य को दो भागों में बाँट दिया गया। केन्द्रीय एवं प्रांतीय । प्रत्येक प्रांत में

शिक्षा पुर्नगठन प्रारम्भ हो गया। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु सार्जेन्ट रिपोर्ट प्रस्तुत हुई। इस प्रकार धीरे-धीरे शिक्षा का पुर्नगठन होने लगा।

5. स्वतंत्रयोत्तर काल में शिक्षा :-

सन् 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त होने के पश्चात भारतीय शिक्षा के इतिहास में एक नवीन युग का सूत्रपात हुआ। स्वतंत्र भारत में पृथक शिक्षा मंत्रालय का गठन हुआ। जनवरी सन् 1948 में शिक्षा मंत्री के रूप में श्री मौलाना अब्दुल कलाम आजाद ने पद ग्रहण किया। शिक्षा व्यवस्था का सम्पूर्ण भार शिक्षा मंत्री ने संभाला। सन् 1937 में जो महात्मा गांधी ने बेसिक शिक्षा प्रणाली का प्रारूप दिया था, इसके अनुसार पूरे देश में बेसिक शिक्षा की स्थापना हुयी एवं प्रदेशों में राजकीय बेसिक स्कूलों की व्यवस्था की गयी, जिसमें कक्षा 1 से 8 तक की कक्षाओं में पठन-पाठन की व्यवस्था की गयी थी।

ताराचंद्र समिति (1948) :-

सन् 1948 में ताराचन्द्र जी की अध्यक्षता में शिक्षा के क्षेत्र में सुझाव देने के लिये एक समिति नियुक्त की गयी। इस समिति ने सुझाव दिया कि प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा का अवधिकाल 12 वर्ष का हो। इस 12 वर्ष की अवधि का विभाजन इस प्रकार हो कि 5 वर्ष जूनियर बेसिक, 3 वर्ष सीनियर बेसिक तथा 4 वर्ष उच्चतर माध्यमिक शिक्षा प्रदान की जाये। उच्चतर माध्यमिक स्कूल बहुमुखी बनाने का भी सुझाव दिया गया।

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49) :-

सन् 1948 में डा० राधाकृष्णन की अध्यक्षता में शिक्षा आयोग की नियुक्ति की गयी। इसका मुख्य कार्यक्षेत्र विश्वविद्यालय की शिक्षा था परन्तु आयोग ने माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण सुझाव दिए हैं।

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53) :-

ताराचन्द्र समिति और केन्द्रीय सलाहकार बोर्ड की सिफारिशों के फलस्वरूप माध्यमिक शिक्षा आयोग की नियुक्ति की गयी, जिसने माध्यमिक शिक्षा में सुधार के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण सुझाव दिये ।

कोठारी शिक्षा आयोग (1964-66) :-

प्रोफेसर डी0एस0 कोठारी की अध्यक्षता में सन् 1964 में एक विशिष्ट प्रकार के आयोग का गठन किया गया। इस आयोग ने प्राथमिक माध्यमिक एवं विश्वविद्यालय तीनों शिक्षा स्तरों का अध्ययन करने के पश्चात सुझाव दिये ।

उत्तर प्रदेश में शिक्षा के विकास की ओर यदि हम दृष्टि डालें तो पता चलता है कि उत्तर प्रदेश प्राचीन काल से ही शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी रहा है। वाराणसी, नालन्दा तक्षशिला आदि अनेक संस्थायें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा का कार्य करती रही थी। मुस्लिम काल में जौनपुर, बदायुं में भी मदरसों के द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती थी। सन् 1950 में भारत का संविधान निर्मित किया गया, जिसमें शिक्षा का उत्तरदायित्व राज्यों को प्रदान किया गया। देश में पंचवर्षीय योजनाओं को लागू किया गया। इन योजनाओं के अन्तर्गत शिक्षा को प्रमुखता प्रदान की गई एवं शिक्षा को विकास के सुनहरे अवसर प्रदान किये गये। किन्तु स्वतंत्रता के पश्चात भी प्राथमिक तथा कनिष्ठ माध्यमिक शिक्षा के ढांचे में अद्यतन कोई परिवर्तन नहीं परिलक्षित होता।

उत्तर प्रदेश में शिक्षा का शैक्षिक प्रशासन तथा शैक्षिक अभिकरण :-

1. शैक्षिक प्रशासन :-

गैटजेल तथा गुवा (1967) ने शैक्षिक प्रशासन को एक सामाजिक

प्रक्रिया माना है जो एक सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत कार्य करती है। इस प्रक्रिया को देखने के तीन दृष्टिकोण हैं:-

§।§ प्रशासन के दृष्टिकोण से :-

यह एक तारतम्य है जो अधिकारी तथा अधीनस्थ कर्मचारी के बीच स्थापित एक सामाजिक व्यवस्था है।

§।।§ कार्य के दृष्टिकोण से :-

यह सम्बन्धों का तारतम्य है जो एक निश्चित स्थान का निर्धारण कर उपलब्ध सुविधाओं का एकीकरण करके उसके माध्यम से अपने लक्ष्य को ओर बढ़ता है।

§।।।§ परिचालन के दृष्टिकोण से :-

प्रशासन कार्य में लगे लोगों की अपनी क्रिया तथा उनकी परिस्थितियों का निरीक्षण करना ही प्रशासन है।

इसप्रकार हम यह देखते हैं कि शैक्षिक प्रशासन समूह में निवास कर रहे व्यक्तियों की आपसी क्रिया है। इसे हम किसी प्रक्रिया या अभिकरण के रूप में भी ले सकते हैं जो एक सामाजिक व्यवस्था के अन्दर कार्य कर रहे शैक्षिक संगठन में व्याप्त समस्याओं का केवल वास्तविक निदान ही न निकाले वरन् उस शैक्षिक संगठन के उद्देश्यों तथा प्राप्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये उचित प्रयास करें।

चूँकि शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है तथा विद्यालय एक सामाजिक संस्था है, अतः इस संस्था के घटक निम्नलिखित हैं:-

§।§ व्यक्ति और व्यक्तित्व की स्थिति

§II§ औपचारिक संगठन और उनसे की गयी अपेक्षा ।

§III§ अनौपचारिक संगठन, उनकी संस्कृति तथा उनको कार्यविधि ।

व्यक्ति एवं व्यक्तित्व को स्थिति :-

व्यक्ति के व्यवहार एवं उसके पारस्परिक क्रिया से ही व्यक्ति के व्यक्तित्व की झलक देखने को मिलती है। व्यक्ति का व्यक्तित्व पर्यावरण एवं वातावरण के गुणों से प्रभावित होता है। व्यक्ति के भौतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक गुण बहुत से कारकों से प्रभावित होते हैं, जिनमें से मुख्यत: हैं- परिवार, सहयोगी विद्यालय तथा समाज ।

औपचारिक संगठन :-

औपचारिक संगठन कार्यों की एक अन्योनाश्रित विधि है, जो किसी भी संस्था का प्रारूप तैयार करती है। जहाँ पर प्रत्येक कार्य किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया जाता है।

अनौपचारिक संगठन :-

अनौपचारिक संगठन वे नियामक अभिकरण हैं, जो उस समय कार्य करते हैं जब औपचारिक संगठनों तथा व्यक्तियों के भीतर कोई उलझन पैदा हो जाती है। एक तरफ वह व्यक्ति को संगठन की प्रणालियों के समायोजन करने को सिखलाते हैं और दूसरी तरफ इसके द्वारा कुछ व्यवहार के तरीके निर्धारित करते हैं। जो कुछ विशेष मूल्यों में औपचारिक संगठनों से मेल नहीं रखते हैं। परिणाम स्वरूप व्यक्ति अपने आपको परस्पर विरोधी माँगों के बीच पाता है।

2. शैक्षिक अभिकरण :-

भारतवर्ष में स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत शैक्षिक प्रशासन एवं संगठन

का कार्य अनेक प्रकार के अभिकरणों के द्वारा सम्पन्न होता है जिनमें से मुख्य निम्न हैं:-

§।§ केन्द्रीय सरकार :-

भारत सरकार विभिन्न योजनाओं तथा पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से शिक्षा के क्रमिक विकास को अत्यन्त योजनाबद्ध ढंग से सम्पन्न कर रही है। शिक्षा वास्तव में राज्य का एक अंग है।

शिक्षा विभाग केन्द्रीय सरकार में केन्द्रीय मंत्री के अधीन होता है, जोकि शिक्षा मंत्री कहलाता है। शिक्षा मंत्री विभिन्न राज्यों में शिक्षा के सम्बन्ध में सामान्य नीतियों का निर्धारण कर विभिन्न राज्यों में शिक्षा की रूपरेखा में समानता लाने का प्रयत्न करता है। शिक्षा मंत्री की सहायतार्थ, उपमंत्री भी केन्द्र में नियुक्त किये जाते हैं।

शिक्षा मंत्रालय का प्रबन्ध एक सरकारी सचिव के अधीन होता है। वह शिक्षा मंत्री को नीति एवं संगठन सम्बन्धी मामलों में परामर्श देता है। शिक्षा मंत्रालय को परामर्श देने के लिये अनेक प्रकार की समितियाँ होती है।

§।।§ राज्य सरकार :-

भारतीय संविधान के अनुसार प्रान्तीय सरकार पूर्णरूप से शिक्षा के दायित्व की पूर्ति के लिए सक्षम है। कतिपय विशिष्ट क्षेत्रों को छोड़कर शेष सभी के शैक्षिक, प्रशासनिक संगठन तथा विकास का पूर्ण भार राज्य सरकार के ऊपर रहता है। राज्यों के शिक्षा विभाग एक शिक्षा मंत्री के अधीन होता है। शिक्षा मंत्री राज्य की विधान सभा के प्रति उत्तरदायी होता है। केन्द्रीय सरकार राज्य सरकारों को शिक्षा सम्बन्धी कुछ विशेष कार्यक्रमों को पूर्ण करने के लिये समुचित आर्थिक सहायता प्रदान करती है तथा प्रदान की गयी आर्थिक

सहायता का समुचित रीति से उपयोग किये जाने के विषय में भी उचित निरीक्षण की व्यवस्था करती है।

शिक्षा मंत्री अपने उत्तरदायित्व का पालन राज्य के शिक्षा विभाग द्वारा करता है। शिक्षा विभाग के दो प्रमुख अंग है:-

§अ§ शिक्षा सचिवालय

§ब§ शिक्षा निदेशालय

शिक्षा सचिवालय का प्रधान प्रत्यक्ष रूप से शिक्षा मंत्री अथवा शिक्षा उपमंत्री होता है। सचिवालय का सचिव इसका प्रधान अधिकारी होता है। शिक्षा सचिवालय का मुख्य कार्य शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर नीतियों का निर्धारण एवं उनका पालन कराने का प्रयास रहता है।

शिक्षा निदेशालय एक प्रबन्धक संस्था है, यह उन नीतियों को जो सरकार के शिक्षा सचिवालय द्वारा निर्धारित की गई है, उनका अनुपालन करती है। यह सरकार एवं शैक्षिक संस्था के मध्य सम्पर्क सूत्र का कार्य करती हैं एवं सरकार को शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं से अवगत कराती है।

जनपद स्तर पर जिला विद्यालय निरीक्षक होते हैं। इनकी सहायता के लिये शिक्षा निरीक्षक, उपशिक्षा निरीक्षक तथा सहायक शिक्षा निरीक्षक होते हैं। यह सब माध्यमिक स्तर के विद्यालयों का निरीक्षण करते हैं। कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों का अधिकारी बेसिक शिक्षा अधिकारी होता है। माध्यमिक शिक्षा पूर्णरूप से राज्य सरकार के नियंत्रण में होती है।

राज्य का शिक्षा विभाग उन नियमों को निर्धारित करता है, जिनके अनुसार शिक्षा संस्थाओं को मान्यता प्रदान की जा सकती है। शिक्षा विभाग ही विद्यालयों के प्रबन्ध एवं आर्थिक सहायता सम्बन्धी नियम भी निर्धारित करता है।

राज्य सरकार उच्च शिक्षा के लिये उत्तरदायी है। विश्वविद्यालय राज्य सरकार द्वारा बनाई गई धारा पर निर्भर रहता है, जिससे उसका संविधान और शक्तियां सरकार द्वारा ही निर्धारित की जाती हैं तथा आर्थिक सहायता प्राप्त हेतु भी सरकार पर निर्भर रहना पड़ता है।

§।।।§ स्थानीय निकाय :-

स्थानीय निकायों द्वारा शैक्षिक प्रशासन का कार्य बहुत समय पहले से किया जा रहा है। बहुत से शोधकर्ताओं से जिन्होंने शिक्षा के ऐतिहासिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था के सम्बन्ध में शोध किया है, जिनसे यह जानकारी प्राप्त होती है कि स्थानीय निकायों द्वारा जनपद स्तर पर जिला विद्यालय परिषद का गठन किया गया है, जो जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का प्रसार तथा व्यवस्था का कार्य करते हैं तथा शहरी क्षेत्रों में उक्त कार्य नगर पालिकाओं द्वारा किया जाता है।

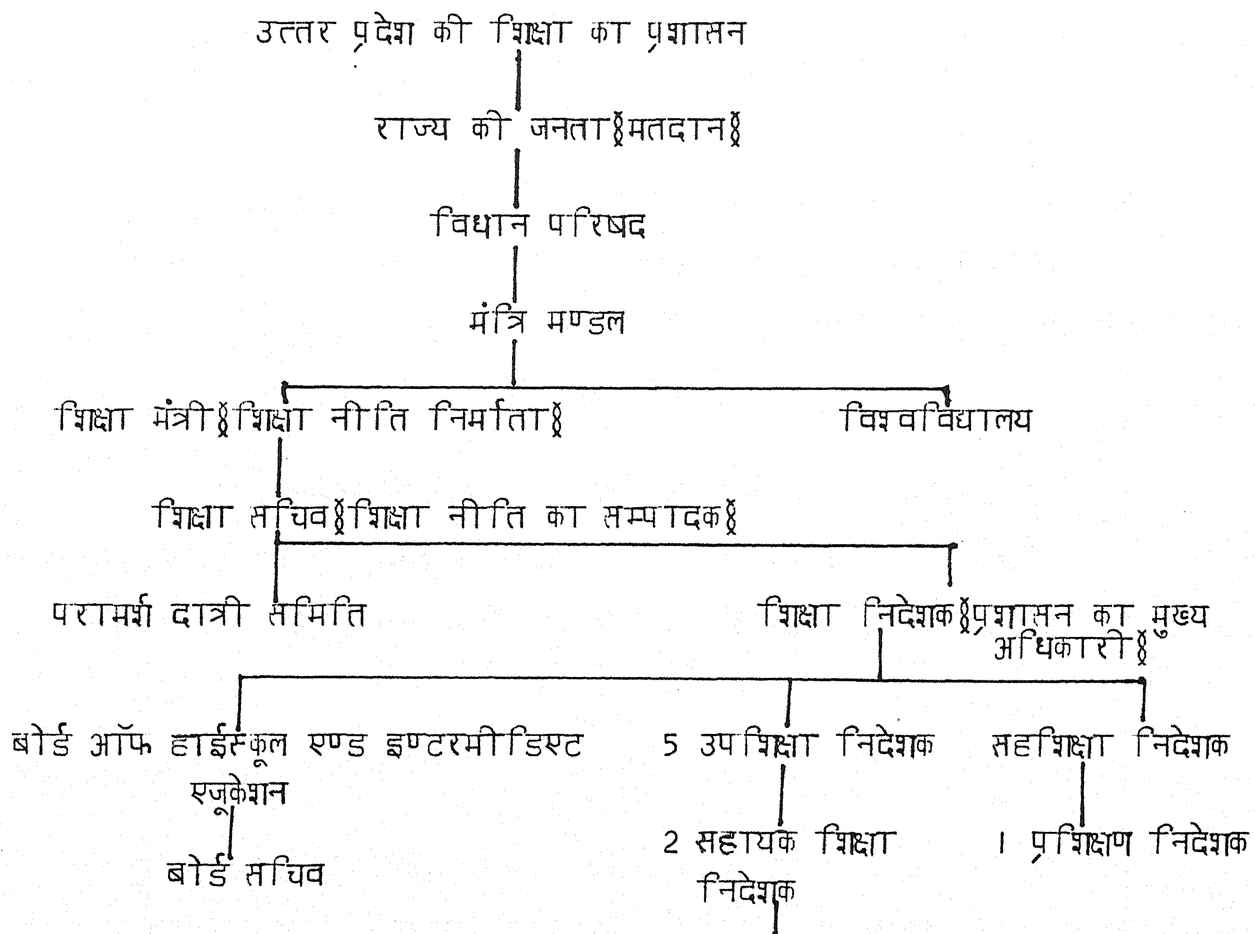
स्थानीय निकाय अधिकांशतः प्राथमिक एवं कनिष्ठ माध्यमिक शिक्षा से सम्बन्धित है। उच्चतर माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा सम्बन्धी उत्तरदायित्व इन संस्थाओं पर बहुत ही अल्प मात्रा में है।

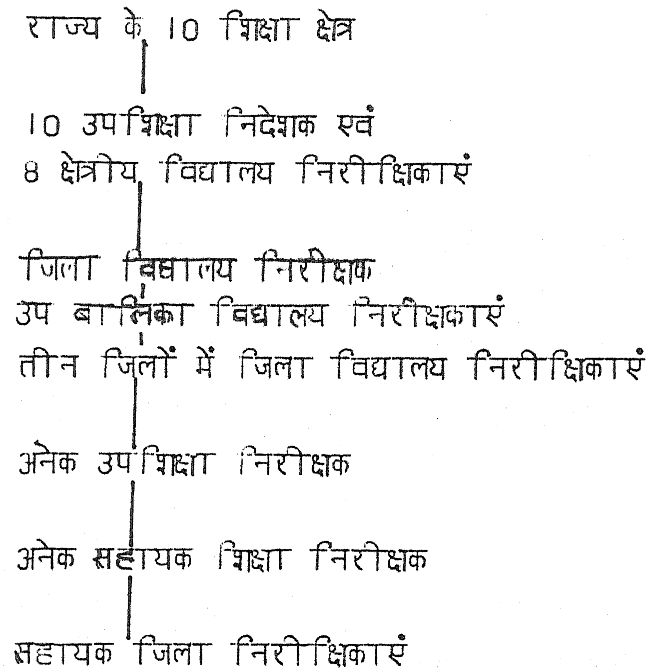
वर्लाक §1973§ ने, "शैक्षिक प्रशासन में जिला परिषद के योगदान" पर कार्य किया तथा यह पाया कि ग्रामीण शिक्षा में इनका बहुत योगदान है। उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा अधिनियम सत्र 1972 के आधार पर प्रदेश के विभिन्न भागों में जनता के प्रतिनिधियों की देखरेख में "बेसिक शिक्षा परिषद" का गठन किया गया है, इसमें जिला स्तर पर एक प्रबन्ध समिति कार्य करती है। जिसका प्रधान जिला परिषद या नगरपालिका का अध्यक्ष होता है। इन प्रबन्ध समितियों को अपने क्षेत्र की प्राथमिक एवं कनिष्ठ माध्यमिक शिक्षा के निरीक्षण, पर्यवेक्षण तथा संचालन के लिये वैधानिक अधिकार प्राप्त है।

§1.1/§ व्यक्तिगत अभिकरण :-

सन् 1854 के उपरान्त भारतवर्ष में अधिकांशतः उत्तर प्रदेश में व्यक्तिगत निकायों द्वारा शिक्षा प्रशासन का कार्य किया जा रहा हैं। किसी विशेष स्थान के कुछ व्यक्ति मिलकर एक प्रबन्धतंत्र का गठन करते हैं और इनकी देख-रेख में विद्यालय का कार्य चलता रहता है। भारत एक धर्म निरपेक्ष देश है, अतः यहाँ किसी भी धर्म के लोगों पर कोई प्रतिबंध नहीं है। अनेक धार्मिक तथा सामाजिक संगठन भी व्यक्तिगत अभिकरणों के रूप में शिक्षा की व्यवस्था तथा प्रसार का कार्य करते हैं।

प्रशासन रेखाचित्र






## उत्तर प्रदेश में कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों का संचालन :-

भारत के प्रत्येक प्रदेश में शिक्षा विभाग का प्रधान शिक्षा मंत्री होता है, जो मंत्रि परिषद का सदस्य होता है। शिक्षा मंत्री ही शिक्षा सम्बन्धी सभी नीतियों का निर्धारण करता है तथा उसका संचालन करता है। शिक्षा मंत्री की सहायतार्थ शिक्षा सचिव एवं शिक्षा संचालक होते हैं।

शिक्षा सम्बन्धी समस्त नीतियों का निर्धारण सचिवालय में किया जाता है। सचिवालय का प्रमुख अधिकारी शिक्षा संचालक होता है। इसका कार्य प्रशासनात्मक होता है। शिक्षा मंत्री का कार्य दो भागों में विभाजित रहता है:-

{अ} वैधानिक कार्य
{ब} प्रशासन सम्बन्धी कार्य

शिक्षा मंत्री स्थायी पदाधिकारी नहीं होता है क्योंकि यह मतदान के आधार पर चुना जाता है तथा मंत्रि मण्डल के परिवर्तित होने पर स्वयं ही

परिवर्तित हो जाता है।

शिक्षा प्रशासन का समुचित कार्यभार शिक्षा संचालक पर होता है। यह शिक्षा विभाग का स्थायी कर्मचारी होता है, जो राजकीय शिक्षा सेवा से चुना जाता है। यह शिक्षा मंत्री को समय-समय पर सुझाव देता है। प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा का कार्यभार इसी पर होता है।

उत्तर प्रदेश में शिक्षा संचालन का प्रधान कार्यालय इलाहाबाद में है परन्तु शिक्षा व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने हेतु एक शिविर कार्यालय लखनऊ में भी रखा गया है। शिक्षा संचालक स्थायी रूप से लखनऊ में ही निवास करता है। लखनऊ में शिक्षा संचालक की सहायता के लिये उपशिक्षा संचालक तथा दो अन्य सहायक कार्यकर्ता होते हैं। इनके साथ-साथ विशिष्ट पदाधिकारी भी होते हैं जो प्राथमिक शिक्षा का कार्य देखते हैं।

राज्य की शिक्षा व्यवस्था के सही रूप से चलाने के लिये राज्य को 13 मण्डलों में बाँटा गया हैं :-

1. इलाहाबाद
2. लखनऊ
3. वाराणसी
4. मेरठ
5. रूहेलखण्ड
6. आगरा
7. गोरखपुर
8. गढ़वाल
9. फैजाबाद
10. झाँसी
11. कुमायूँ

12. कानपुर

13. मुरादाबाद

मण्डल में शिक्षा का मुख्य अधिकारी उप शिक्षा संचालक होता है तथा एक मण्डल में कई जिले होते हैं। बालिकाओं की शिक्षा की देखरेख हेतु मण्डल निरीक्षकाएं होती हैं। बालिका विद्यालयों की संख्या कम होने के कारण यह सम्पूर्ण मण्डल का कार्य सम्भालती हैं। बालकों की संख्या अधिक होने के कारण प्रत्येक जिले में एक जिला विद्यालय निरीक्षक होता है, जो माध्यमिक शिक्षा का कार्यभार सम्भालता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक जनपद में एक पुरूष तथा एक महिला बेसिक शिक्षा अधिकारी होते हैं, जो कनिष्ठ माध्यमिक स्तर के बालकों एवं बालिकाओं की शिक्षा व्यवस्था की देखरेख करते हैं। प्रत्येक ब्लाक स्तर पर एक विद्यालय उप निरीक्षक तथा सहायक उप निरीक्षक होते हैं।

इनके अतिरिक्त प्राथमिक एवं कनिष्ठ माध्यमिक शिक्षा की व्यवस्था अनेक संस्थायें वहन करती हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख संस्थायें निम्न हैं:-

(अ) नगर महापालिकाएं

(ब) नगर पालिकाएं

(स) जिला परिषद

(द) ग्राम पंचायत

(य) अन्य संगठन

<u>नगर महापालिकाएं :-</u>

प्रत्येक महानगर की नगर महापालिका में एक नगर प्रमुख होता है, जिसे मेयर कहते हैं तथा एक उपनगर प्रमुख होता है। इसमें कार्य की सुविधा के लिये दो मुख्य समितियों का निर्माण किया जाता है :-

(I) कार्यकारिणी

(II) विकास समिति

इन समितियों का अध्यक्ष उपनगर प्रमुख होता है। यह महानगर पालिकायें अपने क्षेत्र में प्राथमिक एवं कनिष्ठ माध्यमिक स्कूलों का संगठन एवं विकास करती हैं।

नगर पालिकाएं :-

नगर महापालिकाओं की भाँति ही कम जनसंख्या वाले क्षेत्र में नगर पालिकाएं होती हैं तथा इसका प्रमुख अध्यक्ष कहलाता है। नगर का प्रबन्ध अध्यक्ष कार्यकारिणी का प्रधान तथा सचिव द्वारा होता है। नगर पालिकाओं में एक विभाग शिक्षा से सम्बन्धित होता है, जो निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था करता है। यह विभाग शिक्षा अधीक्षक के अधीनस्थ होता है।

जिला परिषद :-

जिला परिषद का प्रधान जिला परिषद अध्यक्ष होता है। उसको ग्रामीण क्षेत्रों की शिक्षा संस्थाओं की व्यवस्था के दायित्व का निर्वाह करना पड़ता है। इन विद्यालयों का निरीक्षण कार्य बेसिक शिक्षा अधिकारी के अधीन कार्यरत शिक्षा निरीक्षक एवं निरीक्षिकाएं करती हैं। इन निरीक्षक एवं निरीक्षिकाओं की संस्तुति पर ही विद्यालयों का विकास एवं निर्माण कार्य होता है।

ग्राम पंचायत :-

विकेन्द्रीकरण के सिद्धान्तों पर उत्तर प्रदेश में ग्राम पंचायत, क्षेत्रीय समिति तथा जिला परिषदों को एक सूत्र में बांधा गया है। गाँव सभा का प्रधान क्षेत्रीय समिति का पदेन सदस्य होता है तथा उसका कार्य शिक्षा संस्थाओं की देखरेख करना होता है।

अन्य संगठन :-

उपर्युक्त उल्लिखित स्थानीय निकायों के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश में

आठवीं कक्षा तक की शिक्षा का संचालन कुछ व्यक्तिगत अभिकरणों के द्वारा भी किया जाता है। इन व्यक्तिगत अभिकरणों में मुख्य हैं - व्यक्तिगत निकाय, मिशनरी, भारतीय शिक्षा समिति तथा रेलवे । हाईस्कूल तथा इण्टरमीडिएट कालेज भी आठवीं कक्षा के छात्रों की पठन पाठन को व्यवस्था करते हैं। उत्तर प्रदेश में अनेक शिक्षा सम्बन्धी अधिकारी हैं जो पाठ्यक्रम एवं पाठ्य पुस्तकों का चयन करते हैं। नवीन कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की मान्यता शिक्षाधिकारी द्वारा प्रदान को जाती है। इस समय सभी कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बेसिक शिक्षाधिकारी की देखरेख में चलाये जा रहे हैं।

शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारक :-

शैक्षिक उपलब्धि अनेक कारकों पर निर्भर करती है। इसमें से कुछ कारक शिक्षण में सहायक होते हैं तथा इन कारकों की उपस्थिति शैक्षिक उपलब्धि को स्थायी रूप भी प्रदान करती है। इन कारकों का विस्तृत वर्णन निम्नप्रकार है:-

1. प्रेरणा :-

प्रेरणा का अभिप्राय आवश्यकता से होता है और आवश्यकता तनाव उत्पन्न करती है। जैसे पुरूस्कार एवं दण्ड का प्रभाव निन्दा एवं प्रशंसा, नींद, स्पर्धा आदि। प्रेरणाओं के कारण शिक्षण क्रिया तीव्र होती है तथा उसमें स्थायित्व आ जाता है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अपने शिक्षण के सिद्धान्त को स्वीकार किया है। पुरूस्कार एवं दण्ड भी प्रेरक का कार्य करते हैं। हरलॉक (1925) ने अपने प्रारम्भिक अध्ययन में बताया कि प्रशंसा एवं निन्दा की अपेक्षा प्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि पर अच्छा प्रभाव पड़ता है।

2. शिक्षण सामग्री का स्वरूप :-

शैक्षिक उपलब्धि शिक्षण सामग्री से सीधे प्रभावित होती है। सीखने

वाली सामग्री जटिल तथा अस्पष्ट है तो सरल, रूचिकर एवं स्पष्ट सामग्री की अपेक्षा उसको सीखना कठिन होता है। सार्थक सामग्री का शिक्षण तीव्र एवं निरर्थक का मन्द होता है। सामग्री की अर्थपूर्णता के अतिरिक्त सामग्री में अनुक्रमिक पराधीनता व्याकरण संरचना तथा प्रयोज्य का सामग्री से पूर्व परिचय भी शिक्षण को तीव्र बनाते हैं, इससे उपलब्धि अच्छी होती है।

3. शारीरिक कारक :-

अधिगम करने वाले व्यक्ति की ग्राह केन्द्रियाँ, प्रभाव केन्द्रियाँ तथा शारीरिक दशा आदि अधिगम को प्रभावित करती है। अधिगम, धारक की ज्ञानेन्द्रियाँ यदि दोषपूर्ण हों, थकान आदि हो तथा यदि उसने नशीले पदार्थ आदि का सेवन किया हो, तो निश्चय ही अधिगम की मात्रा एवं गुण कम होंगे तथा बच्चे की उपलब्धि कम होगी। शारीरिक अंगों की पूर्णता शारीरिक सीमा को निर्धारित करती है। शिक्षण कार्य का निर्धारण यदि शारीरिक सीमा को ध्यान में रखकर किया जाय, तो शिक्षण अधिक लाभप्रद होता है तथा उपलब्धि अच्छी होती है।

4. वातावरण :-

दैनिक जीवन में अनुभव किया जा सकता है कि शान्त एवं सुखद वातावरण में उपलब्धि अच्छी होती है। वातावरण से सम्बन्धित अधिक कारक हो सकते हैं, जो उपलब्धि की मात्रा एवं गुण को प्रभावित करते हैं। ये कारक हैं - प्रकाश, शोरगुल, वायु का अभाव, दुर्गन्ध, तापक्रम तथा अन्य व्यक्तियों की उपस्थिति आदि ।

5. शिक्षण विधि :-

सीखने की अनेक विधियाँ होती है, जिनमें से प्रमुख है- अनुकरण

विधि, समग्र एवं अंश विधि, विराम तथा अविराम विधि, सक्रिय एवं निष्क्रिय विधि आदि। कौन सी विधि किस अवस्था में प्रभावशाली होगी तथा उपलब्धि अधिक होगी, यह शिक्षण सामग्री पर निर्भर करती है।

6. अभ्यास एवं प्रशिक्षण :-

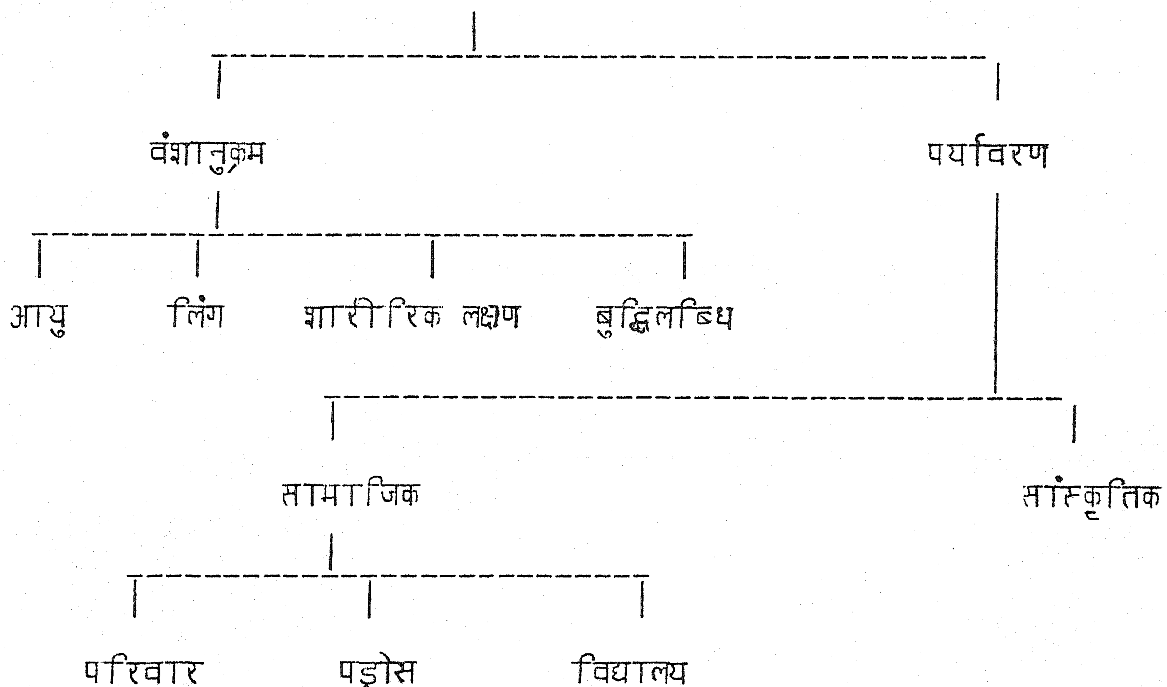
अभ्यास एवं प्रशिक्षण भी शैक्षिक उपलब्धि को अत्यधिक प्रभावित करता है। अभ्यास शिक्षण का एक आवश्यक अंग है। थार्नडाइक ने शिक्षण में अभ्यास को अत्यधिक महत्व दिया है किन्तु उसने यह भी कहा है कि अभ्यास के साथ ही साथ यदि परिणामों का ज्ञान भी मिले तो शिक्षण प्रगति में और अधिक तीव्रता आती है। अभ्यास के अतिरिक्त उचित प्रशिक्षण भी शिक्षण में सहायक होता है, इससे उपलब्धि और अधिक प्रभावित होती है। आवश्यकता से अधिक अभ्यास अधिक लाभप्रद नहीं होता है क्योंकि अधिक अभ्यास में शक्ति भी अधिक खर्च होती है और फल अपेक्षाकृत कम प्राप्त होता है।

व्यक्तिगत कारक :-

उपलब्धि अधिगम धारक अथवा सीखने वाले प्रयोज्य की प्रकृति पर निर्भर करती है। पशुओं की अपेक्षा मनुष्य सीखने में अधिक दक्ष होते हैं। इसी प्रकार व्यक्ति की आयु, लिंग, बुद्धि, मानसिक योग्यतायें, भावनायें, इच्छायें तथा आकांक्षा स्तर भी अधिगम को प्रभावित करता है और उसी के अनुरूप उपलब्धि होती है। जब यह सभी अधिक मात्रा में होते हैं तो उपलब्धि अधिक होती है। उच्च योग्यता वाले विद्यार्थियों में जब चिंता की मात्रा उच्च होती है तब अधिगम अधिक करते हैं और उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च स्तर की होती है, जबकि इसके विपरीत साधारणतः निम्न श्रेणी के छात्रों में चिंता की अधिक मात्रा उनके अधिगम में बाधक होती है, फलतः उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी कम होती है।

बालकों के आचरण को प्रभावित करने वाले कारक तत्व :-

बहुत से मनोवैज्ञानिकों एवं शोधकर्ताओं का विचार रहा है कि बालकों का आचरण मुख्य रूप से दो कारक तत्वों से प्रभावित होता है। प्रथमतः वंशानुक्रम तथा द्वितीय पर्यावरण। वंशानुक्रम के अन्तर्गत चार बातें आती हैं - आयु, लिंग, शारीरिक लक्षण तथा बुद्धिलब्धि । पर्यावरण के अन्तर्गत परिवार तथा पड़ोस सामाजिक तथा सांस्कृतिक क्रियाकलाप आते हैं, जो बालकों के आचरणों को प्रभावित करते हैं। सामाजिक पर्यावरण के अन्तर्गत परिवार, पड़ोस, विद्यालय तथा समुदाय आता है, जो आचरण को प्रभावित करता है।




आयु :-

अनेकों शोधकर्ताओं के मतों के अनुसार बालकों की आयु के विकास के साथ ही साथ उनके आचरण में भी परिवर्तन होने लगता है। थामसन (1949)

तथा सिन्हा §1972§ ने यह मत व्यक्त किया है कि ग्यारह वर्ष की आयु के बालक का चोरी करना, झूठ बोलना, मारना, माता पिता तथा गुरू की आज्ञा की अवहेलना करना आदि आयु के परिवर्तित होने के साथ-साथ परिवर्तित होते जाते हैं। एवहर्ट §1942§ ने यह मत व्यक्त किया कि सम्पत्ति अधिकार वह पहला मूल्य है जो बालक की नैतिकता को प्रभावित करता है।

लिंग :-

लैंगिक भिन्नता का आचरण एवं व्यक्तित्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। भारतीय समाज में बालक-बालिकाओं में स्पष्ट कार्य एवं आचरण विभाजन है इसी कारण बालक एवं बालिकाओं में आचरण एवं व्यक्तित्व से सम्बन्धित भिन्नतायें अधिक स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती हैं। अतः लड़के अधिक उदण्ड होते हैं और वह आज्ञापालन नहीं करते तथा कभी-कभी उनका विरोध भी करने लगते हैं जबकि लड़कियां आज्ञा का पालन करती हैं, उदण्डता नहीं करती तथा समाज द्वारा बनाये गये नियमों का पालन करती हैं। पाश्चात्य देशों में जहाँ बालक एवं बालिकाओं के मध्य इस तरह की विभाजक रेखायें स्पष्ट नहीं है, आचरण एवं व्यक्तित्व सम्बन्धी विभिन्नतायें कम पायी जाती हैं।

शारीरिक लक्षण :-

केशमर ने शारीरिक लक्षणों के आधार पर व्यक्ति को तीन रूपों में विभाजित किया है:-

§1§ स्थूलकाय :-

इस तरह के बालक खुश मिजाज, मिलनसार किन्तु आलसी एवं सुस्त होते हैं। इन्हें भोजन अधिक प्रिय होता है।

§11§ बलिष्ठ :-

सुगठित शरीर वाले बालक दृढ़ निश्चयी, साहसी, खेलकूद में आगे

रहने वाले होते हैं। ऐसे बालकों को साहसिक कार्य करने में अधिक आनन्द मिलता है।

§।।।§ दुर्बल :-

क्षीणकाय बालक आत्म केन्द्रित, एकांतप्रिय, शांत, बुद्धिमान एवं चिंतक होते हैं।

परिवार :-

परिवार बालक की शिक्षा की प्रथम पाठशाला है। जन्म के समय बालक के आचरण स्पष्ट नहीं होते, स्वभाव अवश्य ही स्पष्ट हो जाता है। उसके पश्चात उसका विकास होता है। उम्र के साथ-साथ उसके आचरण में भी विकास होने लगता है। परिवार के सदस्यों के आचरणों के अनुरूप ही बालक उनका अनुकरण कर उसी प्रकार का आचरण करने लगता है। शिष्ट, आज्ञाकारी, धर्म प्रधान, अनाचारी, झगड़ालू, क्रोधी आदि जैसा भी परिवार होता है, उसी प्रकार का बालक का आचरण बन जाता है। शताब्दी के मध्यकाल में प्राप्त सभी आंकड़ें एच0एल0 वीटमार तथा कोटोनेसके §1952§ इस बात की सत्यता प्रमाणित करते हैं कि बालक तथा नवजवान पीढ़ी के ऊपर उनके परिवार के अच्छे तथा बुरे आचरणों का बहुत प्रभाव पड़ता है।

पड़ोस :-

बालक के आचरण को पड़ोस भी बहुत प्रभावित करता है। किसी बालक के पड़ोसी चोर, उदण्ड, लड़ाकू तथा अनीति का व्यवहार करने वाले होते हैं तो वहाँ पर रहने वाला बालक उनके आचरणों से अपने को बहुत समय तक असंयत नहीं रख सकता। बालक को अपना शैशव काल अपने पड़ोस में ही व्यतीत करना पड़ता है यथा उनके साथ खेलना अथवा अन्य व्यवहार आदि। अतः शनैः शनैः बालक भी पड़ोस के बालकों के आचरण के समान ही कार्य करने

लगता है। बालक के आचरण पर उस पड़ोसी समाज वर्ग का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है, जिसमें वह रहता है। मारग्रेट तथा भीड़ (1950) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि बालक के नैतिक विकास में उसके पड़ोसी समाज का बहुत बड़ा योगदान होता है।

विद्यालय :-

बालक के नैतिक मूल्यों के विकास में विद्यालय की अहम् भूमिका रहती है। विद्यालय के अन्तर्गत ही बालक नैतिकता एवं चरित्र निर्माण की शिक्षा प्राप्त करता है। विभिन्न प्रकार के दुर्गणों को त्यागकर सद्गुणों का विकास करता है। विद्यालय के अध्यापक बालकों को महापुरूषों के जीवन की शिक्षा आदि प्रदान कर उनके चरित्र का विकास करते हैं। विद्यालय वह पवित्र स्थल है, जहाँ पर बालक अपनी अन्तर्निहित शक्तियों को विकसित करता है। विद्यालय ही वह स्थल है, जहाँ का वातावरण बालकों की अन्तर्निहित शक्तियों का समुचित विकास करता है। अध्यापक के नैतिक आदर्श, वेशभूषा, वाक संयम बालक के चरित्र को विकसित करते हैं। अध्यापक का उचित मार्गदर्शन बालक के जीवन का सम्बल बनता है।

सांस्कृतिक मूल्य :-

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह एकाकी जीवनयापन नहीं कर सकता। उसको समाज या समुदाय की आवश्यकता होती है। बालक जन्म के पश्चात परिवार में रहकर अपना विकास करता है और परिवार के अनुसार ही अपने को विकसित करता है। इसके पश्चात वह पड़ोस के वातावरण से अपने अच्छे एवं बुरे आचरण सीखता है। तत्पश्चात वह विद्यालय में प्रवेश करता है, और फिर वह अपने आचरण विद्यालय के अनुसार परिवर्तित करता है। तत्पश्चात विद्यालय से निकलकर समुदाय का सदस्य बन जाता है और वहाँ वह पुनः अच्छे बुरे आचरण को ग्रहण कर अपने आचरण में परिवर्तन लाता है। समुदाय भी अपने अनुसार आने

वाले बालकों के आचरण को प्रभावित किये बिना नहीं छोड़ता।

धर्म भी बालक के आचरण को प्रभावित किये बिना नहीं रहता। धार्मिक भावनायें यदि बालक के अन्तर्गत भर दी जाती है तो वह अपने आदर्श एवं मान्यताओं को उन्हीं के अनुसार परिवर्तित कर लेता है। विकासशील बालक अपने जीवन के उद्देश्यों की प्राप्ति में धर्म को ही मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार करता है। धर्मप्रधान पर्यावरण में बालकों के अन्तर्गत चारित्रिक विकास होता है। वह सद्गुणी एवं सदाचारी होता है। अधार्मिक पर्यावरण के अन्तर्गत रहने वाले बालकों में सदाचरण, सद्गुण आदि का कोई स्थान नहीं होता है, वरन् वह दुराचारी एवं क्रूर होता है।

## शोध समस्या का महत्व :-

बालकों की शिक्षा प्राथमिक स्कूलों से प्रारम्भ होती है। इस स्तर पर बालकों के लिये उचित शिक्षा का प्रबन्ध होना चाहिए क्योंकि यह स्तर बालकों की दृष्टि से एवं शिक्षा की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण माना गया है। यह प्राथमिक शिक्षा ही माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा को जन्म देती है। प्राथमिक शिक्षा को माध्यमिक शिक्षा से जोड़ने का कार्य कनिष्ठ माध्यमिक शिक्षा का होता है। अतः यह शिक्षा भी प्राथमिक शिक्षा से कम महत्वपूर्ण नहीं है। प्राथमिक स्तर पर बालक ज्ञान एवं आचरण की आधारशिला रखता है तो माध्यमिक स्तर पर उन आचरणों एवं ज्ञान में वृद्धि होती है तथा आवश्यकतानुसार उनमें परिवर्तन भी होता है। यह शिक्षा रीढ़ की हड्डी की तरह ही महत्वपूर्ण होती है। यह पूर्ण एवं उच्च शिक्षा में सामंजस्य लाने का प्रयत्न करती है। बालक इस स्तर पर जो कुछ भी ज्ञान ग्रहण करता है या अपनी आदतों में विकास करता है, वह संस्थाओं में दी जाने वाली शिक्षा तथा वहाँ के वातावरण के अनुसार ही करता है। इस स्तर पर बालक जो कुछ सीखता है, वह बालक के व्यक्तित्व एवं व्यवहार के रूप में प्रकट होता है। भारत के संविधान में यह स्पष्ट रूप से उल्लिखित है कि-

"भारत एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य है।"

जनता राज्य चलाने वालों का निर्वाचन करती है। जनता योग्य व्यक्तियों का निर्वाचन करती है। जनता योग्य व्यक्तियों का निर्वाचन कर सके, इसके लिए उसका शिक्षित होना आवश्यक है। अतः भारत के संविधान के अनुच्छेद 45 में 14 वर्ष की अवस्था समाप्त होने तक प्रत्येक व्यक्ति को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा देने का राज्य द्वारा अनुबंध किया गया है। परन्तु अनेक कारणों से राज्य अपना यह उत्तरदायित्व आज तक निर्वाह नहीं कर पा रहा है। उत्तर प्रदेश में 14 वर्ष तक की शिक्षा का प्रबन्ध शासकीय, स्थानीय निकाय तथा निजी अभिकरणों द्वारा किया जा रहा है। निजी अभिकरण कोई भी धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक संस्था हो सकती है। यह संस्थायें अपने संसाधनों के अनुसार शिक्षा व्यवस्था करती है और उसी के अनुसार संस्था का कीर्तिमान बन जाता है।

अधिकांशतः यह देखा जाता है कि विभिन्न अभिकरणों द्वारा संचालित विद्यालयों में उपलब्ध शैक्षिक सुविधाओं में भिन्नता होती है। जिसके फलस्वरूप वहाँ के बालकों के ज्ञान तथा आचरण का विकास एक समान नहीं हो पाता है, जिस प्रकार की शिक्षा की सुविधायें एवं व्यवस्थायें होंगी, उसी के अनुरूप छात्रों को शैक्षिक उपलब्धियाँ और अनुशासनात्मक व्यवहार तथा आचरण होंगे।

शैक्षिक उपलब्धियों, अनुशासनात्मक व्यवहारों और आचरणों पर केवल शिक्षा संस्थाओं का ही प्रभाव नहीं पड़ता है वरन् उनके सामाजिक आर्थिक स्तर का भी प्रभाव पड़ता है। जैसा बालक का आर्थिक स्तर होगा, उसी के अनुरूप बालक को सुविधायें प्रदान की जावेगी तथा उसी के अनुरूप बालक की उपलब्धि होगी। जिस प्रकार का सामाजिक स्तर उसी के अनुरूप उसका आचरण तथा अनुशासनात्मक व्यवहार होगा। यदि हम समान सामाजिक एवं आर्थिक

स्तर के छात्रों का अध्ययन करें, तो हम विभिन्न संस्थाओं के द्वारा बालकों पर प्रभाव का अध्ययन कर सकते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में यह जानना रूचिपूर्ण एवं शिक्षाप्रद होगा कि तुलनात्मक रूप से समान सामाजिक आर्थिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की किस प्रबंधतंत्र की शिक्षा संस्थाओं में छात्रों की कैसी उपलब्धियाँ और व्यवहार होते हैं?

बुन्देलखण्ड सम्भाग के पिछड़ेपन को दूर करने का सरकार द्वारा काफी प्रयास किया जा रहा है, फिर भी सरकार द्वारा निर्धारित शैक्षिक लक्ष्य की पूर्ति नहीं हो पा रही है। बड़ी तीव्रता से विभिन्न संस्थाओं द्वारा नये-नये विद्यालय खोले जा रहे हैं। सरकार स्थानीय निकायों के माध्यम से विद्यालयों की संख्या में भी वृद्धि कर रही है परन्तु वह सफल नहीं हो पा रही है, क्योंकि स्थानीय निकायों द्वारा संचालित विद्यालयों में अभिभावक बच्चों को भेजना नहीं चाहता है। व्यक्तिगत संस्थाओं द्वारा संचालित विद्यालयों में आर्थिक कमी के कारण भेज नहीं पाता, केवल उच्च वर्ग के अभिभावक ही इन विद्यालयों में अपने बच्चों को शिक्षा दिला पाते हैं। वह अभिभावक इन विद्यालयों को उपेक्षित दृष्टि से देखने लगे हैं।

अभिभावकों का इन परिषदीय तथा निजी अभिकरणों द्वारा संचालित विद्यालयों को उपेक्षित दृष्टि से देखने के क्या कारण है तथा इनको लोकप्रिय कैसे बनाया जा सकता है? इन्हीं विचारों से प्रेरित होकर शोधकर्ता ने इस क्षेत्र में अपना शोध कार्य किया है।

इस शोध कार्य के अन्तर्गत बुन्देलखण्ड सम्भाग में स्थित विभिन्न अभिकरणों द्वारा संचालित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 8 के समान सामाजिक, आर्थिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अनुशासनात्मक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

शोध शीर्षक :-

"बुन्देलखण्ड में विभिन्न प्रबन्धतन्त्रों द्वारा संचालित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के समान सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्र/छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धियों और अनुशासनात्मक व्यवहारों का तुलनात्मक अध्ययन ।"

परिभाषीकरण :-

1. बुन्देलखण्ड सम्भाग :-

प्रशासनिक दृष्टि से बुन्देलखण्ड सम्भाग उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के भागों से मिलकर बना हुआ है। बुन्देलखण्ड सम्भाग के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश के पाँच जनपद - बाँदा, हमीरपुर, झाँसी, जालौन एवं ललितपुर और मध्य प्रदेश के चौदह जनपद - रायसैन, विदिशा, गुना, मुरैना, शिवपुरी, दतिया, ग्वालियर, भिण्ड, नरसिंहपुर, सागर, दमोह, पन्ना, छतरपुर तथा टीकमगढ़ जनपद आते हैं। शोध कार्य हेतु उत्तर प्रदेश में आने वाले पाँच जनपदों को ही लिया गया है।

2. प्रबन्ध तन्त्र :-

विद्यालयों का प्रबन्ध एवं संचालन करने वाले संगठन जिनके अन्तर्गत स्थानीय निकाय, धार्मिक, सामाजिक तथा वैयक्तिक या निजी अभिकरण सम्मिलित हैं।

3. कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालय :-

कक्षा 6 से 8 तक चलने वाली शिक्षा संस्थायें या विद्यालय जो स्वतंत्र इकाई के रूप में चलती हैं।

4. समान सामाजिक आर्थिक स्तर :-

सामाजिक प्रतिष्ठा एवं सम्पन्नता के दृष्टिकोण से तीन स्तर हो सकते हैं, जैसे- उच्च, मध्य तथा निम्न। बालकों के स्तर का मापन माता-पिता, भाई-बहिनों का व्यवसाय, शिक्षा, आर्थिक, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक आधार पर किया गया है। प्रस्तुतः अध्ययन में औसत सामाजिक एवं आर्थिक स्तर के परिवार के बालक एवं बालिकाओं को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है।

5. शैक्षिक उपलब्धियाँ :-

कनिष्ठ विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले प्रमुख विषयों - हिन्दी, गणित, सामान्य विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान में छात्रों की सम्पन्नता ।

6. अनुशासनात्मक व्यवहार :-

कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों का विद्यालय, अध्यापक के प्रति सम्बन्ध, सामाजिक व्यवहार, दैनिक क्रिया-कलापों में विद्यार्थियों का आचरण तथा विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव ।

## शोध कार्य के उद्देश्य :-

शोध कार्य हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं:-

1. स्थानीय निकायों, सामाजिक, धार्मिक तथा निजी अभिकरणों द्वारा संचालित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों में उपलब्ध शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना ।
2. स्थानीय निकायों, सामाजिक, धार्मिक तथा निजी अभिकरणों द्वारा संचालित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों के

अनुशासनात्मक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

3. स्थानीय निकायों, सामाजिक, धार्मिक तथा निजी अभिकरणों द्वारा संचालित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

परिकल्पना :-

उपर्युक्त उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित परिकल्पनायें निर्मित की गयी हैं:-

1. स्थानीय निकायों, सामाजिक, धार्मिक तथा निजी अभिकरणों द्वारा संचालित विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण अन्तर है।
2. स्थानीय निकायों की अपेक्षा सामाजिक, धार्मिक तथा निजी अभिकरणों द्वारा संचालित विद्यालयों के छात्रों का अनुशासनात्मक स्वरूप अच्छा है।
3. स्थानीय निकायों, सामाजिक, धार्मिक एवं निजी अभिकरणों द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न विद्यालयों की प्रशासनिक व्यवस्था एवं रखरखाव में अन्तर होता है।

परिसीमन :-

बुन्देलखण्ड सम्भाग के उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत आने वाले पाँच जनपदों को शोध कार्य हेतु चुना गया है। बुन्देलखण्ड में इन जनपदों का भौगोलिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अपना विशेष स्थान रहा है। यह जनपद झाँसी, बाँदा, हमीरपुर, जालौन एवं ललितपुर है। इन जनपदों में स्थित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं पर प्रस्तावित अध्ययन किया जायेगा।

## संदर्भ

1. Thomas, F.W. - The history & prospects of British Education in India, Cambridge, Bell 1891, P.1.

2. Altekar, A.S. - Education in Ancient India, Nand Kishore & Brothers, 1948, P.4.

3. सिंघल, एम0सी0 - भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्यायें, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1971, पृष्ठ सं0 35

4. नायक, जे0पी0 एवं सैयद नूरूल्ला - भारतीय शिक्षा का इतिहास, मैकमिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया लिमिटेड, दिल्ली, 1976, पृष्ठ सं0 38

5. उत्तर प्रदेश वार्षिका 1990-91, 1991-92, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश, 1991, पृष्ठ सं0 10

6. माथुर, एस0एस0, विद्यालय संगठन एवं स्वास्थ शिक्षा, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, 1988-89, पृष्ठ सं0 56

7. Thompson, G.G. - Age trends in Social values during the adolescent years amer, Psychologist, 1949,4,250.

8. Sinha, D & Varma, M- Knowledge of Moral Values in Children Psychol.studies, Vol.17, No.1, 1972, P.1-6.

9. Eberhart, J.C., Attitudes towards property: A Genetic study by the pained comparisons rating of offences. J. Genet, Psychology, 1942, P.60, 3-35.

10. भूषण, इन्दु - प्रारम्भिक मनोविज्ञान, भारतीय भवन, पटना, 1972, पृष्ठ सं0 145-153

11. सुखिया, एस0पी0 - विद्यालय प्रशासन एवं संगठन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1993, पृष्ठ सं0 69

## द्वितीयं अध्याय

पूर्व शोध कार्यों का विवरण ।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा प्रसार का कार्य विभिन्न शैक्षिक संगठनों को सौंप दिया गया है। इन शैक्षिक अभिकरणों द्वारा संचालित विद्यालयों का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों पर क्या प्रभाव पड़ता है, जिसके कारण इनमें अध्ययन करने वाले छात्रों की उपलब्धियों में अन्तर दिखाई देता है। इस विषय पर शाह §1951§, सिंह §1964§, बेकर §1976§, जोशी §1973§ आदि ने विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया है। देव §1976§ ने छात्रों के अनुशासन एवं अनुशासनहीनता को संकल्पना विषय पर शोध किया है। गयेन §1961§ ने गणित में उपलब्धि परीक्षण के मापन पर शोध कार्य किया तथा गुप्ता जे0एस0 ने कक्षा 8 के छात्रों के लिये सामान्य विज्ञान विषय में परीक्षण का निर्माण तथा उसकी उपलब्धि की प्रमाणिकता ज्ञात की है। इस विषय पर देश-विदेश में अनेकों शोध कार्य किये गये हैं। इन शोध कार्यों में से जो अपने शोध विषय से सम्बन्धित है तथा महत्वपूर्ण है, उनका यहाँ पर उल्लेख किया जा रहा है। इन शोध कार्यों का वर्गीकरण हम दो प्रकार से कर सकते हैं। प्रथम वर्गीकरण में वह शोध कार्य है जो भारतवर्ष में किये गये हैं तथा दूसरे के अन्तर्गत वह शोध कार्य हैं, जो विदेशों में किये गये हैं।

1. भट्ट §1961§ :-

जी0पी0 भट्ट ने 1961 में भारत वर्ष में बेसिक स्कूल तथा नॉन बेसिक स्कूलों में अध्ययन करने वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों का अध्ययन किया है। अपने इस शोध कार्य में सामाजिक अध्ययन, सामान्य विज्ञान एवं भाषा के अतिरिक्त अन्य विषयों में इन छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों में अधिक अन्तर पाया है।

2. माथुर §1963§ :-

श्री के0 माथुर ने 1963 में शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यवहार पर सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन किया। यह शोध कार्य हायर

सेकेण्डरी स्कूल के विद्यार्थियों पर किया गया। इस शोध कार्य के अन्तर्गत उन्होंने यह पाया कि छात्रों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर पड़ता है। इसके साथ ही साथ उन्होंने यह भी अध्ययन किया कि छात्रों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति का प्रभाव उनके व्यवहारों पर पड़ता है।

3. पन्डेकर §1965§ :-

श्री पन्डेकर ने 1965 में अपना शोध कार्य किया। शोध कार्य के अन्तर्गत उन्होंने जूनियर हाईस्कूल की कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिये अंकगणित विषय में मानकीकृत उपलब्धि परीक्षण का निर्माण किया था। अपने इस शोध कार्य के अन्तर्गत पन्डेकर ने यह पाया कि बालिकाओं की गणित लब्धि पर स्तरीय विद्यालयों का प्रभाव पड़ता है।

4. पिल्ले §1969§ :-

श्री एन0पी0 पिल्ले ने 1969 में केरल विश्वविद्यालय से "माध्यमिक विद्यालयों के संगठन एवं प्रशासन का उनमें अध्ययन कर रहे छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों पर प्रभाव" विषय पर शोध कार्य किया। अपने शोध कार्य के अन्तर्गत उन्होंने सरकारी तथा व्यक्तिगत निकायों द्वारा संचालित विद्यालयों का चयन किया था।

शोध कार्य के अन्तर्गत 12 सरकारी तथा 12 व्यक्तिगत निकायों द्वारा संचालित विद्यालय थे। यह विद्यालय नगरीय तथा ग्रामीण दोनों क्षेत्रों से लिये गये थे और उनमें छात्र तथा छात्राओं दोनों ही प्रकार के विद्यालयों का समावेश किया गया था।

श्री पिल्ले ने अपने शोध कार्य में यह पाया कि 9 विद्यालयों में अध्ययन कर रहे छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियाँ अच्छी थी और सात विद्यालयों

में अध्ययन कर रहे छात्र एक दम कमजोर थे। जबकि शेष 8 विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्र औसत स्तर के थे।

शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य में यह भी पाया कि इस प्रभाव के मुख्यतः तीन कारण थे, जिससे शैक्षिक उपलब्धियों में यह अन्तर पाया गया। यह कारण निम्नलिखित थे-

(1) योग्य अध्यापक एवं उचित निर्देश का अभाव ।

(2) सामाजिक एवं पर्यावरणीय प्रभाव ।

(3) संगठन एवं प्रशासन का अभाव ।

उपर्युक्त उल्लिखित तीनों तत्वों में सामाजिक पर्यावरण का प्रभाव छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों पर अधिक पाया गया।

5. <u>बनर्जी (1972)</u> :-

श्री एन0पी0 बनर्जी ने 1972 में विश्वभारती विश्वविद्यालय से, "बेसिक एवं नॉन बेसिक स्कूल में अध्ययन करने वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों तथा व्यक्तित्व पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया। अपने शोध कार्य हेतु उन्होंने पाँच प्रकार के बेसिक विद्यालयों का चयन किया था। अपने शोध अध्ययन के अन्तर्गत बनर्जी ने यह पाया कि व्यक्तित्व के गुणों में अधिकांश तत्व सार्थक नहीं थे। शैक्षिक उपलब्धियों के क्षेत्र में बेसिक तथा नॉन बेसिक स्कूल के छात्रों में बहुत अन्तर उपस्थित था। शोध कार्य में यह भी देखा गया कि बेसिक स्कूलों के छात्र नॉन बेसिक स्कूलों के छात्रों से गणित, मातृभाषा एवं लेखन के क्षेत्र में अधिक आगे थे।

6. सुदेम ¤1973¤ :-

श्री जी0आर0 सुदेम ने 1973 में एम0एस0 विश्वविद्यालय बड़ौदा से "शैक्षिक उपलब्धि में पुस्तकालय उपयोग के प्रभाव का एक अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया। शोध कार्य हेतु उन्होंने परास्नातक कक्षाओं के विद्यार्थियों को चुना ।

7. रेड्डी ¤1973¤ :-

श्री वाई0एल0एन0 रेड्डी ने मैसूर विश्वविद्यालय से 1973 में, "प्रथम वर्ष की डिग्री परीक्षा में शैक्षिक उपलब्धि के साथ सम्बद्ध निश्चित कारणों का अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया।

8. मैनन ¤1973¤ :-

श्री एस0के0 मैनन ने केरल विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान में 1973 में "उच्च योग्यता को अधिक या कम प्राप्त करने वाले व्यक्तित्व के अभिलक्षणों का एक तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया।

9. आनन्द ¤1973¤ :-

श्री सी0एल0 आनन्द ने शिक्षा शास्त्र विषय में मैसूर विश्वविद्यालय से 1973 में "मैसूर राज्य में मानसिक क्षमताओं और शैक्षिक उपलब्धि पर निर्देशन का माध्यम और सामाजिक-आर्थिक वातावरण के प्रभाव का एक अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया।

सुदेम, रेड्डी, मैनन तथा आनन्द ने अपने अध्ययन के अन्तर्गत यह पाया कि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों पर उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति

का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है।

10. बासवाया (1974) :-

श्री डी० वासवाया ने 1974 में मैसूर विश्वविद्यालय से "भाषा की उपलब्धि पर द्विभाषावाद का प्रभाव" विषय पर शोध कार्य किया। शोध कार्य के अन्तर्गत उन्होंने पाया कि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों पर पैतृक पेशे का भी प्रभाव स्पष्ट होता है।

11. त्रिपाठी (1978) :-

श्री बी०के० त्रिपाठी ने राजस्थान विश्वविद्यालय से 1978 में "व्यक्तित्व प्रकारों एवं सामाजिक स्वीकृति, कक्षा व्यवहार तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध निर्धारण हेतु एक अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया। शोध कार्य के अन्तर्गत उन्होंने 506 इण्टरमीडिएट कक्षा के 16 से 19 वर्ष की आयु के छात्रों का चयन किया।

अध्ययन के अन्तर्गत निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए :-

1. चिंता, सामाजिक स्वीकृति और विकृत कक्षा व्यवहार के चरों ने विचरण की उच्च लब्धियाँ प्राप्त की, जो 52, 26, 82, 37 एवं 105, 85 है।

2. सामाजिक स्वीकृति और चिन्ता तथा स्नायु दौर्बल्य के बीच ऋणात्मक सह-सम्बन्ध रखता है।

12. दास (1983) :-

दास, ममता (1983) प्रवक्ता, शिक्षा विभाग, दयालबाग शैक्षणिक

संस्थान, आगरा ने 1983 में "माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के प्रशासकीय व्यवहार विद्यालय परिवेश और छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध" विषय पर शोध कार्य किया। उन्होंने शोध कार्य हेतु गुजरात प्रान्त के 26 माध्यमिक विद्यालय 260 अध्यापक तथा 1020 नवीं कक्षा के छात्रों को चुना। शोध कार्य के निम्न लिखित परिणाम प्राप्त हुए :-

1. माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के प्रशासकीय व्यवहार एवं विद्यालय परिवेश के मध्य कोई महत्वपूर्ण सम्बन्ध नहीं है।

2. ऊँचे और नीचे स्तर के प्रशासकीय व्यवहार वाले प्रधानाचार्यों वाले विद्यालयों के परिवेश में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है। परिणामों से यह भी संकेत मिलता है कि प्रधानाचार्यों के प्रशासकीय व्यवहार और छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है।

3. उन विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है, जिनके प्रधानाचार्यों का प्रशासकीय व्यवहार ऊँचे स्तर का है और जिनका प्रशासकीय व्यवहार नीचे स्तर का है।

13. सुजातारानी (1983) :-

आर० सुजातारानी तथा वी० कुमार ने 1983 में केरल विश्वविद्यालय से, "किशोरों की विद्यालय उपस्थिति और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन", विषय पर शोध कार्य किया। उन्होंने शोध कार्य हेतु त्रिवेन्द्रम के कक्षा 10 के 594 किशोर छात्र और 393 किशोर छात्राओं को चुना। शोध कार्य से निम्नस्थ परिणाम प्राप्त हुआ -

अध्ययन के अन्तर्गत पता चला कि विद्यालय उपस्थिति और शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक और महत्वपूर्ण सम्बन्ध है। परिवार की आर्थिक स्थिति

और परिवार का आकार शैक्षिक उपलब्धि की वृद्धि और विद्यालय में एक कारक परिलक्षित हुए।

14. शाही (1984) :-

श्री यू० शाही ने 1984 में "विभिन्न संगठनों द्वारा प्रबंधित आठवीं कक्षा के स्तर पर संचालित संस्थाओं के विद्यार्थियों की हिन्दी विषय में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन" किया। अध्ययन के निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए-

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में शिक्षा संस्थाओं के पर्यावरण का महत्वपूर्ण स्थान है। विभिन्न संगठनों द्वारा प्रबंधित संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों को उपलब्ध सुविधाओं में अन्तर है। इस अध्ययन के अन्तर्गत अनुसंधान कर्ता ने यह पता लगाने का प्रयास किया है कि विभिन्न संस्थाओं में उपलब्ध सुविधाओं का कक्षा 8 स्तर के विद्यार्थियों का हिन्दी में शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है। नगरपालिकाओं के विद्यालयों में शिक्षा की सबसे दयनीय स्थिति है, जबकि व्यक्तिगत प्रबन्धतंत्रों द्वारा संचालित विद्यालयों में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अच्छी है।

15. मेहता (1985) :-

श्री पी० मेहता एवं डी० कुमार ने 1985 में शिमला विश्वविद्यालय से "शैक्षिक उपलब्धि का बुद्धि, व्यक्तित्व, सामंजस्य, अध्ययन आदतों और शैक्षिक प्रेरणा से सम्बन्ध" विषय पर कार्य किया। इस शोध कार्य के अन्तर्गत निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए :-

आशाओं के विपरीत, शैक्षिक उपलब्धि की प्राप्ति पुरूषों, स्त्रियों और सम्पूर्ण निर्देशनों में बुद्धि, व्यक्तित्व, सामंजस्य अध्ययन आदतों और शैक्षिक प्रेरणा में स्वतंत्र रूप से हुई। कारक जैसे परीक्षा के प्रति रूझान और पर्यावरणीय सामग्रियाँ, ग्राह्य और अग्राह्य तत्व की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण हो सकती है।

16. कपूर (1986) :-

श्री के० कपूर ने 1986 में मेरठ विश्वविद्यालय से "सरस्वती शिशु मंदिर और पब्लिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के संदर्भ में मनोविज्ञान सामाजिक लक्षणों का अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया। शोध कार्य के अन्तर्गत उन्होंने निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किए -

(1) पब्लिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में सरस्वती शिशु मंदिर के विद्यार्थियों की अभिरूचि प्राच्य संस्कृति की और अधिक है।

(2) पब्लिक विद्यालयों के विद्यार्थी धनी परिवारों से आते हैं।

(3) सरस्वती शिशु मंदिर के विद्यार्थी गुरूजनों, माता-पिता, अनुशासन, देश और धर्म के प्रति पब्लिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं।

(4) सरस्वती शिशु मंदिर के विद्यार्थी धार्मिक, सामाजिक, प्रजातांत्रिक, ज्ञान और शक्ति मूल्यों को अधिक सम्मान देते हैं। तथा पब्लिक विद्यालयों के विद्यार्थी सौन्दर्य, आर्थिक, सुखवादी और स्वास्थ्य मूल्यों के प्रति अधिक अभिरूचि रखते हैं।

(5) पब्लिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में सरस्वती शिशु मंदिर के विद्यार्थी शिक्षा के प्रति अधिक आस्था रखते हैं।

12. चक्रवर्ती (1988) :-

"कक्षा पाँच के बालकों की बुद्धि, परिवार की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, परिवार में शैक्षिक पर्यावरण तथा विद्यालयों की गुणात्मकता का एक आलोचनात्मक अध्ययन पुणे में तथा पास के कुछ विद्यालयों की दशा का एक

अध्ययन" विषय पर 1988 में पूना विश्वविद्यालय से शोध कार्य किया। अपने शोध कार्य हेतु उन्होंने पुणे तथा उसके पास के कुछ विद्यालयों को चुना है। अपने शोध कार्य के अन्तर्गत उनकी उपलब्धि निम्नस्थ है-

{1} ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की तुलना में नगरीय क्षेत्रों के विद्यार्थी सार्थक रूप से अधिक अच्छे पाये गये हैं।

{2} जिला परिषद और निगम के विद्यार्थियों की तुलना में व्यक्तिगत विद्यालयों के विद्यार्थियों ने अधिक अंक प्राप्त किये हैं।

{3} डी और ई वर्ग के विद्यालयों की तुलना में सी वर्ग के विद्यार्थियों {जैसाकि विद्यालय परीक्षण के द्वारा वर्गीकरण का प्रस्ताव किया गया है} ने अधिक अंक प्राप्त कियेहैं।

{4} अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की तुलना में मराठी माध्यम के विद्यालयों के विद्यार्थियों ने अधिक अंक प्राप्त किये हैं।

{5} बालकों एवं बालिकाओं की उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं पाया गया।

स्मिथ तथा ई0ए0 डेल ने 1910 में इन्द्रियाना में अपने किये गये सर्वेक्षण "विभिन्न विद्यालयों की व्यवस्था का मूल्यांकन एवं उनमें अपेक्षित सुधार करने की विधियों पर अध्ययन करना था" में पाया कि विभिन्न प्रकार की संस्थाओं द्वारा चलाये जा रहे विद्यालयों की व्यवस्था में बहुत ही अन्तर है और इसका प्रभाव छात्रों पर पड़ता है।

बानवेगनेन्स ने 1929 में मीनीसोटा के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में चल रहे विभिन्न विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के गणित एवं भूगोल विषय की शैक्षिक उपलब्धियों के विषय में अध्ययन किया एवं पाया कि इन छात्रों के गणित

एवं भूगोल के क्रियात्मक विधियों के ज्ञान में बहुत ही कम अन्तर है। इन विद्यालयों से प्राप्त आंकड़ें भी सांख्यिकीय दृष्टिकोणों से सार्थक थे, जबकि इन विद्यालयों के गणित एवं भूगोल विषय के शिक्षण में कम अन्तर उपस्थित था।

ग्रीजेल ने 1928, कूक ने 1929 एवं हील ने 1930 में प्रान्तीय सरकारों द्वारा चलाये जा रहे विद्यालयों एवं क्षेत्रीय संस्थाओं द्वारा चलाये जा रहे विद्यालय के स्तर का अध्ययन किया एवं पाया कि यह एक दूसरे से बहुत भिन्न है। हील ने अपने शोध अध्ययन के अन्तर्गत यह पाया कि वह हाईस्कूल विद्यालय जिनका पाठ्यक्रम 4 वर्षीय है तथा अपने यहाँ सभी प्रकार की सुविधाओं की समुचित व्यवस्था किये हुए हैं तथा शिक्षा के विभिन्न दृष्टिकोणों को ध्यान में रखकर कार्य करते हैं, उन विद्यालयों में आपस में बहुत भिन्नता होती है।

ग्रीजेल एवं कूक ने 1929 में इन विद्यालयों की शिक्षा व्यवस्था में निम्नलिखित बिन्दुओं पर अध्ययन किया-

(1) इकाई की परिभाषा

(2) विद्यार्थियों की आवश्यकतायें

(3) विद्यालयों में शिक्षण कार्य की अवधि

(4) विद्यालयों में कक्षाओं का आकार एवं समय

(5) विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों एवं कर्मचारियों की संख्या

(6) अध्ययन की विधि

(7) अध्यापकों पर पड़ने वाला कार्यभार

(8) लेखा-पत्र

(9) वेतन

§10§ पुस्तकालय एवं प्रयोगशाला

§11§ गैस उपकरण

§12§ सामान्य कार्यक्षमता ।

केवल तीन क्षेत्रीय संस्थाओं द्वारा चलाये जा रहे विद्यालय ही ऊपर वर्णित आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रयत्न कर रहे थे। अर्ध सरकारी विद्यालय एवं माध्यमिक विद्यालयों ने अपनी बैठक में उपर्युक्त बिन्दुओं पर विचार करके निम्न विचार प्रस्तुत किये:-

§1§ विद्यालयों के मुख्य उद्देश्य

§2§ शैक्षिक प्रोग्राम

§3§ पुस्तकालय

§4§ विद्यालय के अध्यापक

§5§ विद्यालय कर्मचारी

§6§ स्कूल प्लांट

§7§ विद्यालय का प्रशासन

§8§ विद्यालय तथा समाज से सम्बन्ध

यह उपरोक्त तत्व महत्वपूर्ण रूप से विद्यालयों के कार्यों पर प्रभाव डालते हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न शोध कार्यों द्वारा भी इसी प्रकार के शोध परिणाम प्राप्त हुए हैं।

शोधकर्ताओं के अध्ययनों एवं परिणामों से स्पष्ट होता है कि उत्तर-मध्य में कार्यरत कालेज एवं माध्यमिक विद्यालयों में अत्यन्त सुधार की आवश्यकता है।

राउस ने 1945 में टैक्सास विश्वविद्यालय में किये गये अपने शोध "डिपार्टमेंट स्कूल एवं नॉन डिपार्टमेंट स्कूलों के पाठ्यक्रम विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं कक्षा की अध्यापन विधियों का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि इन विद्यालयों के पाठ्यक्रम और विधियों में अन्तर विद्यमान हैं। इन सबका प्रभाव वहाँ के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर पड़ता है।

डियरबर्न, कैटेल तथा साइके ने 1932 में व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों की बुद्धि क्षमता एवं शैक्षिक उपलब्धियों पर अलग-अलग शोध कार्य किये, जिससे यह ज्ञात हुआ कि व्यक्तिगत विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों की बौद्धिक क्षमता पब्लिक स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों की बौद्धिक क्षमता की अपेक्षा बहुत अधिक थी। इन शोधकर्ताओं ने व्यक्तिगत निकायों को पब्लिक स्कूलों की अपेक्षा अच्छा बतलाया है।

## REFERENCES

1. Shah, M.R. -Some problem of educational administration in India, Ph.D. Edu.,Bombay U.,1951.

2. Singh, R.R. -The growth and evaluation of Educational administration in Bihar state, Ph.D. Edu.,Patna U.,1964.

3. Baker, M.A. -Centrestate relations in Indian Education during the Four Plan Periods, Ph.D. Edu.,M.S.U.,1976.

4. Joshi, S.V. -An Investigation into the purposes, functions & special problem of one teacher school in Western Maharastra, Ph.D. Edu.,SNDT U., 1973.

5. Deo, P. -Self concept of disciplined & indisciplined students, Dep.of Edu., Punjab U.,1976.

6. Bhatt, G.P.-"An experimental study of the achievements in basic education in the state of Saurashtra", Ph.D. Edu. Mysore U.,1961.

7. Mathur, K.- Effects of Socio-economic status on the achievement and behaviour of higher secondary schools, Ph.D. Psy., Agra U., 1964.

8. Pandhrkar, V.V. -Construction & standardisation of an Vth, VIth & VIIth for children study through Marathi as medium of instructions in greater Bombay, Ph.D. Edu., Bombay U.,1965.

9. Pillai, N.P. An investigation into the organisational & administrative factors which affect the achievement of pupils in secondary schools, Dep.of Edu., Ker.U., 1969.

10. Banerjee, N.P. A comparative study of students in basic & non-basic schools in respect of their scholastic achievement & some aspects of personality development, Ph.D. Edu., Viswabharti U.,1972.

11. Sudame, G.R. A study of the effect of library use on academic achievement of post graduate students in the Mysore U.of Baroda, Ph.D. Edu., Mysore U., 1973.

12. Reddy, V.L.N. A study of certain factors associated with academic achievement in the first year degree examinations, Ph.D. Edu., Mysore U.,1973.

13. Menan, S.K. A comparative study of personality charactersties of over achievers & under achievers of high ability, Ph.D. Psy., Keral U.,1973.

14. Anand, C.L. A study of the effect of socio economic environment & medium of instruction on the mental abilities & the academic achievement of children in Mysore state, Ph.D. Edu., Mysore U.,1973.

15. Basvayya, D. Effect of Bilingulism on language achievement, CIIL, Mysore, 1974.

16. Tripathi, B.K.- A study of relationship between personality patterns and social acceptance, classroom behaviour and academic achievement, Ph.D. Edu., Raj.Uni., 1978.

17. Das, Mamata - Administrative behaviour of secondary schools principals in relation to school climate and student achievement, D.E.I. Research Journal of Education Psychology, 1983, I(J), 37-43.

18. Sujatarani, R. & Ram Kumar,V. - A study of the relationship between attendènce at school & academic achievement of adolescents. Indian Journal of applied Psychology, 1983, 20(2), 84-90.

19. Shahi, U.- A study of achievement of student of the institution managed by various agencies in Hindi at VIII class level perspectives in Psychological researches, 1982.

20. Mehta, P. & D. Kumar - Relationship of academic achievement with intelligence, personality, adjustment, study havits and academic motivation Journal of Personality & clinical studies, 1985, 1(2), 57-68.

21. Kapoor, K. - A study of Saraswati Shishu Mandirs and Public Schools with reference to some Psycho social characteristics of their students- Ph.D.Edu.,Meeruth U.,1986.

22. Chakrabarti, S. - A critical study of intelligence, socio-economic background of the family, educational environment on the family & quality of schools in children, Ph.D. Edu., Poona U.,1988.

23. Vanwagenon, M.J. - Comparative pupil achievement in rural, town & city school, University of Minnesota, 1929, P.144.

24. Cook, W.A. - A comparative study of standardizing agencies, North cen.assn.,Q.4, 377-455, 1929.

25. Grizzell, E.D. - A comparison of standards for secondary school of regional associations, sch.life 13: 147-49, 160, 1928.

26. Hill, H.H. - State high school standardization university of Kenlucky, Bureau of school service, Bulletin, Vol.2, No.3, 1930, P.96.

27. Rouse, Margaret, R. - A comparative study of Departmentization & Non Departmentization as form of Organisation for the elementry school Curriculum, University of Taxas, 1945.

28. Dearborn, W.E. & Gettell - The intelligence & achievement of private school pupils, J.Ed.Psy.,1930, 21:197-211.

## तृतीय अध्याय

1. बुन्देलखण्ड सम्भाग की भौगोलिक संरचना, सामाजिक तथा राजनैतिक पृष्ठभूमि

2. बुन्देलखण्ड सम्भाग का जनसंख्यात्मक विवरण

3. बुन्देलखण्ड सम्भाग के पिछड़ेपन के कारण

4. बुन्देलखण्ड सम्भाग में स्थित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालय एवं उनके प्रबन्धतंत्र

# बुन्देलखण्ड सम्भाग
(उत्तर प्रदेश)

बुन्देलखण्ड क्षेत्र उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश दो भागों में बटा हुआ है। मध्य प्रदेश सीमा के अन्तर्गत रायसैन, विदिशा, गुना, मुरैना, शिवपुरी, ग्वालियर, दतिया, भिण्ड, नरसिंहपुर, सागर, दमोह, पन्ना, छतरपुर तथा टीकमगढ़ जनपद आते हैं। उत्तर प्रदेश की सीमा के अन्तर्गत झाँसी, बाँदा, जालौन, हमीरपुर और ललितपुर जनपद आते हैं। उत्तर प्रदेश के इन्हीं जनपदों का भौगोलिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अपना विशिष्ट स्थान होने के कारण शोधकर्ता ने अपने शोध का क्षेत्र बनाया है।

## बुन्देलखण्ड सम्भाग की भौगोलिक संरचना :-

बुन्देलखण्ड सम्भाग का धरातल सर्पाकार है। इस क्षेत्र का उत्तरी भाग जिसमें जालौन तथा हमीरपुर जनपद आते हैं, का कुछ भाग लगभग समतल है। दक्षिणी भाग के भूतत्व में क्षेत्रीय पर्तदार भूरा गुलाबी पत्थर पाया जाता है, जिसके बीच कहीं-कहीं बड़े चमकीले पत्थरों के भाग दिखते हैं। पत्थर की चट्टानें उत्तरी पूर्वी दिशा में स्थाई रूप से फैली हुयी हैं। इन चट्टानों के उत्तर-पश्चिम में समकोण बनाती हुई भूरी चट्टानों के अवरोध पाये जाते हैं। चट्टानों के संकीर्ण दर्रों में होकर छोटे-छोटे नाले बहते हैं, जिसके फलस्वरूप बहुत सी प्राकृतिक झीले बन गई है तथा बहुत सी कृतिम झीलों के बनाने में, जोकि विभिन्न राजाओं द्वारा बनवायी गई है, सहायता की है। इन दरारों तथा नालों की विशेष उपयोगिता हैं। इस क्षेत्र की भूवैज्ञानिक संरचना मिश्रित है। सम्भाग के पठारी भाग में ऊँची-नीची समतल चोटियों वाली अनेकों पहाड़ियाँ समप्राय मैदानी क्षेत्र ही प्राप्त होते हैं। इस क्षेत्र को सिंचित करने वाली प्रमुख नदियों में बेतवा, धसान, यमुना एवं केन है। इसके अतिरिक्त भी अनेक छोटी-छोटी जलधाराओं के रूप में प्रभावित होने वाली प्रसवनी भी हैं, जिन्हें स्थानीय नामों से सम्बोधित किया जाता है। इन नदियों के आसपास के क्षेत्रों में गहरे बीहड़ फैले हुए हैं।

इस क्षेत्र में मुख्य रूप से मार, काबर, पडुआ और राकड़ मिट्टियाँ पायी जाती है। धरातल का प्रभाव मानव के प्रतिस्थापन एवं जनसंख्या पर भी पड़ता है। सम्भाग का अधिकांश धरातल उबड़-खाबड़ है। नदियों के किनारे बीहड़ क्षेत्रों में प्रति 100 वर्ग किलोमीटर में गाँवों का घनत्व बहुत ही कम है। लेकिन समतल क्षेत्रों की परिधि में प्रति 100 वर्ग किलोमीटर में गाँवों का घनत्व अधिक है।

इस क्षेत्र में मच्छर एवं कीट पतंगों का प्रकोप है, फलस्वरूप यहाँ की जलवायु स्वास्थ्य के लिये लाभप्रद नहीं है। विशेष कर उत्तरी-पश्चिमी भाग के रहने वाले व्यक्ति अधिकतर अस्वस्थ्य रहते हैं। इस सम्भाग में ग्रीष्म ऋतु में भीषण गर्मी तथा शरद ऋतु में भीषण सर्दी पड़ती है। इसका ग्रीष्मकालीन औसत तापमान 30 सेंटीग्रेड रहता है। इस क्षेत्र में औसत वार्षिक वर्षा 93 सेंटीमीटर होती है। मई और जून में तेज लू चलती हैं, जिसके कारण व्यक्तियों का बाहर निकलना कम हो पाता है। प्रतिवर्ष लू से अनेकों व्यक्ति प्रभावित हो जाते हैं।

किसी भी क्षेत्र की शिक्षा वहाँ की जलवायु, धरातल, जनसंख्या के घनत्व एवं संचार-साधनों पर भी निर्भर करती है। सांस्कृतिक जीवन के विकास में भौगोलिक संरचना का एक विशिष्ट स्थान होता है। भौगोलिक परिस्थितियाँ अनुरूप न होने पर मानसिक विकास में रूकावट आ सकती है। शिक्षा के दृष्टिकोण से यह सम्भाग भी उसी प्रकार पिछड़ गया है जिस प्रकार उत्तर प्रदेश का पर्वतीय क्षेत्र पिछड़ा है। यद्यपि शासन ने बुन्देलखण्ड के इस पिछड़ेपन को दूर करने का थोड़ा सा प्रयास किया है परन्तु यह अभी भी पिछड़ा हुआ ही है।

जनसंख्या का असमान वितरण, ऊँची-नीची भूमि, पर्वतों का अवरोध छोटे-छोटे नालों का प्रवाह जो वर्षा ऋतु में अपना विकराल रूप धारण कर लेता है, यहाँ के घने एवं भयानक जंगल, शिक्षा की प्रगति के क्षेत्र में अवरोध बने हुये हैं। यहाँ की कच्ची सड़कें, दलदल युक्त मार्ग यह सभी बालकों की शिक्षा में बाधक सिद्ध होते हैं।

सामाजिक पृष्ठभूमि :-

शिक्षा जहाँ वंशानुक्रम से प्रभावित होती है वहीं वह सामाजिक मूल्यों एवं परम्पराओं से अछूती नहीं रह पाती। अम्भाग के सामाजिक मूल्य, परम्परा, धार्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक संस्थाओं का प्रभाव शिक्षा पर अधिक पड़ा है। यहाँ की शिक्षा व्यवस्था में अनेक सामाजिक घटक अपनी भूमिका अदा कर रहे हैं।

यहाँ के कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालय तथा उसकी शिक्षा एक ओर भौगोलिक परिस्थितियों से प्रभावित है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक परम्पराओं मूल्य एवं मान्यताओं से भी प्रभावित है।

यहाँ के निवासी विभिन्न जातियों के हैं, सुविधा एवं कर्म के अनुसार उन्हें तीन वर्गो में विभक्त किया जा सकता है- उच्च वर्ग , मध्यम वर्ग तथा निम्न वर्ग। उच्च वर्ग में ब्राम्हण, क्षत्रिय और वैश्य आते हैं। यहाँ के ब्राम्हणों का मुख्य पेशा पुरोहित्य रहा है। अत: उन्हें शिक्षा प्राप्त करना आवश्यक है। क्षत्रियों में सैन्य सेवा तथा राज्य करना, इसके लिये शिक्षा अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। अत: इस वर्ग के व्यक्ति कम शिक्षित पाये जाते हैं। वैश्य वर्ग का कार्य व्यवसाय करना है, जिसके लिये शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है। अत: यह भी शिक्षित होते थे। इस वर्ग के व्यक्तियों में शिक्षा का प्रसार था। मध्यम वर्ग की जातियों में मुख्यत: कुम्भकार, लुहार, बढ़ई, काछी, लोधी, कुरमी, नाई, गुर्जर तथा निम्न वर्ग में चमार, कोरी, धोबी, धानुक आदि आते हैं। इन जातियों के जो पेशे हैं, वह पैतृक है जो शिक्षा के अभाव में भी किये जा सकते हैं। अत: पहले इन जातियों में शिक्षा लगभग शून्य थी परन्तु अब समय के अनुसार इन जातियों में भी परिवर्तन हो रहा है। सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में इनका आरक्षण कर दिया है तथा विभिन्न नौकरियों की ओर आकर्षित करने के लिये इनके स्थान भी आरक्षित कर दिये हैं। सरकार इनको शिक्षा के लिये

छात्रवृत्तियाँ भी प्रदान कर रही हैं। अतः अब निम्न तथा मध्यम वर्ग के बालकों में भी शिक्षा का प्रसार हो रहा हैं परन्तु अभी भी पूर्णरूप से प्रसार नहीं हो पाया है और न ही सभी बालक कनिष्ठ माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर पा रहे हैं।

अन्य धर्मावलम्बियों के अन्तर्गत मुसलमान भी हैं। इस समाज को जाति प्रथा से वह भी प्रभावित हुये बिना नहीं रह सके हैं। अधिकतर मुसलमान धुनियाँ, रंगरेज, बेहना, जुलाहे, कुंजड़े इत्यादि वर्गो में विभक्त हैं, जो सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े हुए हैं। नगरों में रहने वाले शेख, सैययद तथा पुराने जमींदार भी है, जो गाँवों के मुसलमानों की अपेक्षा अधिक शिक्षित है।

इस सम्भाग में मनुष्य जीवकोपार्जन के लिये अपने मुख्य व्यवसाय कृषि पर निर्भर रहता है। पत्थरों को खानों से निकालना, जंगलों से लकड़ी काटना, वस्त्र बुनना तथा रंगना आदि लघु उद्योगों के रूप में अपनाता है। बड़े उद्योग धन्धों के अभाव, अतिवृष्टि, अनावृष्टि तथा अलावृष्टि, बाढ़, सूखा आदि कारणों से यहाँ के व्यक्ति आर्थिक कठिनाईयों से त्रस्त रहते हैं और शिक्षा की ओर विशेष ध्यान नहीं दे पाते।

इस सम्भाग में आदिवासी जातियाँ कम पायी जाती है। इन जातियों की अपनी संस्कृति, आचार-विचार तथा जीवनयापन के मूल्य रहे हैं। यहाँ का धार्मिक इतिहास धर्म की विभिन्नताओं से जुड़ा हुआ है। यहाँ की धर्म भावना, भूतवाद, बहुदेव वाद, ऐकेश्वरवाद और सर्वेश्वरवाद तक विकसित हुयी है। यहाँ के व्यक्तियों में अंधविश्वास मूलक प्रवृत्तियाँ घर किये हुये हैं।

इस क्षेत्र में बाल विवाह, स्त्री शिक्षा के पिछड़ेपन का कारण रहा है। सह-शिक्षा के क्षेत्र में भी रूढ़िवादिता अपना प्रभाव दिखाती रहीं है। अभिभावक लड़कियों को लड़कों के साथ शिक्षा दिलाने के पक्ष में नहीं रहते थे।

परन्तु अब इस ओर भी काफी सुधार हो रहा है तथा व्यक्तियों की भावनायें बदल रही हैं। सामाजिक परम्पराओं में काफी परिवर्तन हो रहा है। यहाँ की शिक्षा के विकास में प्रौढ़ भी अवरोधक सिद्ध होते रहे हैं। प्रौढ़ व्यक्ति न तो स्वयं ही शिक्षित हो पाये और न वह अगली पीढ़ी के लिये शैक्षिक वातावरण उत्पन्न कर पाये हैं।

राजनैतिक पृष्ठभूमि :-

बुन्देलखण्ड का राजनैतिक इतिहास प्रतिशोध का इतिहास रहा है। इस भू-भाग ने अपनी प्राचीन प्रतिष्ठा एवं संस्कृति को पाश्चात्य सभ्यता के सम्पर्क में आने पर सुरक्षित रखा है। अंग्रेजों के शासन के पूर्व भारत में पाठशालायें स्थापित हो चुकी थी, जिसमें हिन्दू और मुस्लिम परम्पराओं के अनुसार संस्कृत, अरबी तथा फारसी भाषाओं के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती थी।

सन् 1857 के स्वतन्त्रता के प्रथम संग्राम में बुन्देलखण्ड की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण रही है। इसी क्षेत्र में झाँसी की रानी, बाँदा के नबाब नाना साहब, धुन्धूपन्त तथा तात्यां टोपे की तलवारों ने अंग्रेजों से टक्कर ली थी। यद्यपि अंग्रेजों की कूटनीति एवं शक्ति ने इन वीरों को सफलता प्राप्त नहीं होने दी, तथापि अंग्रेज इनकी वीरता को विस्मृत नहीं कर पाये। अंग्रेज यहाँ के लोगों को शिक्षित नहीं करना चाहते थे। ईसाई मिशनरियों ने कुछ शिक्षण संस्थायें खोली और शिक्षा की ज्योति जलाई। अंग्रेजों ने यहाँ के व्यक्तियों को आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा शैक्षिक क्षेत्र में प्रगति न करने देने का भरसक प्रयत्न किया।

यह क्षेत्र काफी समय से सामन्तवादी परम्परा के अन्तर्गत रहा है। अंग्रेजों के समय में भी यह परम्परा समाप्त नहीं हो सकी।

कुछ क्षेत्र जहाँ रजवाड़े थे, सामन्त प्रथा थी। ब्रिटिश आधिपत्य

वाले क्षेत्रों में जमींदारियाँ स्थापित कर सामन्तवादी प्रथा को बनाये रखा गया। रजवाड़ों का कार्य प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक विद्यालय खोलकर अपने कर्तव्य की खाना-पूरी करना मात्र था। प्राय: किसी मन्दिर में यह पाठशालायें चलाई जाती थी। पाठशालाओं में एक या दो अध्यापक नियुक्त कर उनको थोड़ा सा वेतन देकर कार्य कराया जाता था। अत: अध्यापक भी कुछ प्रमुख बच्चों को पढ़ाकर अपने कर्तव्य की पूर्ति मान लेते थे।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में राष्ट्रीयता की भावना से अनुप्राणित व्यक्तियों के प्रयास से शिक्षा का उन्नयन भी हुआ। पाठशालाओं एवं छात्रों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि होने लगी।

भारत शासन अधिनियम सन् 1919 के अन्तर्गत प्रान्तों में द्वैध शासन की स्थापना को गयी। इस व्यवस्था के अन्तर्गत शासन के विभागों को दो भागों में विभक्त कर दिया गया। सुरक्षित विभाग एवं हस्तान्तरित विभाग। हस्तान्तरित विभाग भारतीय मंत्रियों के हाथ रहा तथा सुरक्षित विभाग अंग्रेजों के हाथ। शिक्षा विभाग हस्तान्तरित विभाग में था। अत: इस समय में भी शिक्षा के क्षेत्र में कुछ वृद्धि हुयी।

भारत शासन अधिनियम 1935 को 1937 ई० में लागू किया गया। इसके अन्तर्गत द्वैधशासन समाप्त कर दिया गया और सभी विभाग भारतीय मंत्रियों के हाथ में हस्तान्तरित कर दिये गये। उत्तर प्रदेश में कांग्रेस मंत्रिमण्डल के हाथों में शासन की बागडोर आ गयी। कांग्रेसी मंत्रियों के नये उत्साह के कारण इस समय पुन: शिक्षा की प्रगति हुयी। कांग्रेस की हरिजनों के विकास नीति के परिणाम स्वरूप निम्न वर्ग के बालकों की शिक्षा में पर्याप्त सुधार हुआ।

सन् 1939 में ब्रिटिश नीति के विरोध में कांग्रेस सरकार ने त्यागपत्र दे दिया। परिणामत: पुन: शिक्षा में गतिरोध उत्पन्न हो गया। इसी समय

राजनीति में एक नया परिवर्तन आया और स्वशासन मंत्रालय जनता के चुने हुए प्रतिनिधि के हाथ में आ गया। जिला बोर्डों में भी निर्वाचन हुये। जिला बोर्डों के अध्यक्षों एवं शिक्षा समितियों के अध्यक्षों पर जमींदारों एवं प्रभावशाली व्यक्तियों की राजनीति का प्रभाव पड़ने लगा। अध्यापकों की योग्यता, स्थानीय प्रभाव एवं जातिवाद स्पष्टतः परिलक्षित होने लगा। इसने शिक्षा को अन्दर ही अन्दर खोखला कर दिया। इसके पश्चात शिक्षा बेसिक शिक्षा अधिकारी के अधीन कर दी गयी किन्तु इसका भी शिक्षा पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा।

जनसंख्यात्मक विवरण :-

बुन्देलखण्ड के भू-क्षेत्र के असमान धरातलीय बनावट के कारण जनसंख्या के घनत्व में काफीअसमानता है। ऐसे स्थल जो उर्वरक हैं, वहाँ जन-संख्या का घनत्व अपेक्षाकृत उन स्थानों के कहीं अधिक है जहाँ उनका अभाव है। बुन्देलखण्ड सम्भाग की जनसंख्या का अधिक भाग गाँवों में निवास करता है। अब नगरीकरण की प्रवृत्ति ने नगरों को जनसंख्या में पर्याप्त वृद्धि की है।

सन् 1991 की जनगणना के आधार पर बुन्देलखण्ड सम्भाग के विभिन्न जनपदों की जनसंख्या निम्नप्रकार हैं:-

तालिका सं0-1

बुन्देलखण्ड सम्भाग का क्षेत्रफल, जनसंख्या तथा उसका घनत्व

| क्र0सं0 | जनपद | पुरूष | स्त्री | कुल संख्या | क्षेत्रफल वर्ग कि0 | घनत्व |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | जालौन | 664739 | 552282 | 1217021 | 4565 | 267 |
| 2. | झाँसी | 765005 | 661746 | 1426751 | 5753 | 248 |
| 3. | ललितपुर | 402008 | 386989 | 748997 | 5039 | 149 |
| 4. | हमीरपुर | 795493 | 669908 | 1465401 | 7192 | 205 |
| 5. | बाँदा | 1004874 | 846140 | 1851014 | 7621 | 249 |

सन् 1991 की जनगणना के आधार पर बुन्देलखण्ड सम्भाग में चल रहे कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों, उनमें कार्यरत अध्यापकों तथा उन विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र/छात्राओं का विवरण निम्नप्रकार हैं:-

तालिका सं0-2

बुन्देलखण्ड सम्भाग में कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों, अध्यापकों तथा कक्षा 6 से 8 तक अध्ययन करने वाले छात्र-छात्राओं की संख्या

| क्र0सं0 | जनपद | कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की सं0 | | | कार्यरत अध्यापकों की सं0 | कक्षा 6 से 8 तक पढ़ने वाले विद्यार्थियों की सं0 | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | नगरीय | ग्रामीण | कुल योग | | छात्र | छात्रायें | कुल योग |
| 1. | जालौन | 52 | 221 | 273 | 624 | 16014 | 5716 | 21730 |
| 2. | झाँसी | 37 | 199 | 236 | 614 | 4997 | 2934 | 7931 |
| 3. | ललितपुर | 14 | 95 | 109 | 289 | 2323 | 289 | 2612 |
| 4. | हमीरपुर | 31 | 169 | 200 | 1152 | 3200 | 1400 | 4600 |
| 5. | बाँदा | 53 | 154 | 207 | 1389 | 5402 | 2887 | 8289 |

बुन्देलखण्ड सम्भाग के शैक्षिक पिछड़ेपन के कारण :-

बुन्देलखण्ड सम्भाग अन्य सम्भागों की तुलना में शिक्षा के क्षेत्र में काफी पिछड़ा हुआ है। सरकार के काफी प्रयासों के पश्चात भी इसका पिछड़ापन दूर नहीं हो सका है। यह सम्भाग जब तक कुछ शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति करता है तब तक अन्य सम्भाग इससे कई गुनी प्रगति कर चुके होते हैं और यह पुनः पिछड़ा का पिछड़ा ही रह जाता है। अन्य सम्भागों के अनुसार शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति

न कर पाने या शैक्षिक दृष्टि से अन्य सम्भागों की अपेक्षा पिछड़े रहने के प्रमुख कारण यहाँ की भौगोलिक संरचना, सामाजिक पृष्ठभूमि, राजनैतिक पृष्ठभूमि तथा जनसंख्यात्मक कारण है। इन सब कारणों के साथ-साथ मानवीय प्रयत्नों तथा संचालन या प्रशासन में भी कमी है। जिसके सुधार किये बिना शिक्षा के पिछड़ेपन को दूर नहीं किया जा सकता है।

शैक्षिक पिछड़ेपन के अन्तर्गत पृथक समस्या विद्यालयों के संचालन की है। यहाँ पर विद्यालय दो प्रकार के हैं- प्रथम शासकीय और दूसरे अशासकीय। शासकीय विद्यालयों में सरकार कोई ध्यान नहीं देती जिसके कारण उन विद्यालयों में भवन, साज सज्जा, उपकरण तथा अध्यापकों के अनुशासन का अभाव रहता है, जिससे अभिभावक यहाँ बच्चों को शिक्षा प्राप्त कराने के लिये बच्चों को भेजने में हिचकता है।

दूसरे प्रकार के अशासकीय विद्यालय हैं, जिनको विभिन्न प्रबंधतंत्र संचालित करते हैं। यह विद्यालय प्राय: शोषण प्रवृत्ति के होते हैं। वह विद्यालयों में उपयुक्त शिक्षकों को न रखकर तथा विद्यालय में व्यय कर शैक्षिक पिछड़ेपन को यथास्थिति रखते हैं। कुछ विद्यालयों में अभिभावक नहीं पढ़ाना चाहता, कुछ के प्रबन्धक शैक्षिक प्रगति नहीं होने देते और कुछ विद्यालयों का शैक्षिक वातावरण वहाँ का प्रशासन नहीं बना पाता। अत: उपर्युक्त उल्लिखित कारण शैक्षिक पिछड़ेपन का कारण बने हुये हैं।

बुन्देलखण्ड सम्भाग की निर्धनता भी शिक्षा के पिछड़ेपन का कारण बनी हुयी है। केवल नि:शुल्क शिक्षा व्यवस्था ही बालकों को शिक्षित कराने के लिये पूर्ण नहीं है। बच्चों के लिये वस्त्र, पुस्तकें, उत्तर पुस्तिकायें तथा आने-जाने या ठहरने के स्थान का अभाव उनकी शिक्षा में बाधक है। विद्यालयों में पहुँच कर उनके असमान, सामाजिक, आर्थिक स्तर भी बच्चों में कुंठा पैदा कर देते हैं। जिससे वह अपने को शिक्षा की ओर एकाग्र नहीं कर पाते हैं।

इस सम्भाग के शैक्षिक पिछड़ेपन में यहाँ की सामाजिक परिस्थितियों का भी हाथ है। यहाँ के निवासियों में अभी तक अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, निरक्षरता, कुप्रथायें अभो तक अपना घर किये हुये हैं। जब तक यह पूर्णरूप से नष्ट नहीं हो जाती, शैक्षिक प्रगति सम्भव नहीं है।

इस सम्भाग के विद्यालयों के पाठ्यक्रम के द्वारा बालकों की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पा रही है। यह बालकों को बोझ सा प्रतोत होता है। यह अमनोवैज्ञानिक है फलस्वरूप बालकों की रचनात्मक शक्ति को कुंठित कर दिया है। इस पिछड़े सम्भाग को उपयुक्त प्रशासकीय देखरेख, वित्तोय सहायता मिलनो चाहिये तथा प्रबन्धतंत्रों के द्वारा संस्थाओं के विकास एवं शैक्षिक विकास के अवसर प्रदान किये जाने चाहिए।

## बुन्देलखण्ड सम्भाग में स्थित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालय :-

बुन्देलखण्ड सम्भाग में 6 से 8वों कक्षा तक को शिक्षा व्यवस्था जो जूनियर विद्यालयों के माध्यम से होतो हैं, इन्हें ही कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कहते हैं। कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षा का संचालन स्थानोय निकायों तथा व्यक्तिगत निकायों द्वारा होता है।

## स्थानीय निकायों द्वारा संचालित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालय :-

स्थानोय निकायों द्वारा संचालित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालय वह हैं जो विभिन्न नगर पालिकाओं, जिला परिषदों द्वारा व्यवस्थित हैं। तथा राज्य सरकार द्वारा नियुक्त शिक्षाधिकारियों के नियंत्रण में कार्य करते हैं। इनके रख-रखाव की पूरी व्यवस्था सरकार के ऊपर निर्भर करती हैं। जिला बेसिक शिक्षाधिकारी के अधोन कार्य करने वाले अधिकारी विद्यालय उपनिरोक्षक एवं सहायक विद्यालय उपनिरीक्षक कहलाते हैं। इनका कार्य विद्यालयों का

निरीक्षण करना होता है। इन अधिकारियों की नियुक्ति प्रखण्ड {ब्लाक} स्तर पर होती है। इन सभी विद्यालयों में भवन, भूमि, फर्नीचर आदि की व्यवस्था स्थानीय निकायों तथा सरकार के माध्यम से की जाती है। इन विद्यालयों के अध्यापकों को वेतन का भुगतान बेसिक शिक्षा अधिकारी के माध्यम से स्थानीय निकायों द्वारा किया जाता है।

व्यक्तिगत अभिकरणों द्वारा चलाये जा रहे विद्यालय :-

1. व्यक्तिगत निकायों द्वारा संचालित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालय :-

इसप्रकार के विद्यालय किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा संचालित न होकर नागरिकों द्वारा निर्मित प्रबंध समिति द्वारा संचालित होते हैं। अध्यापकों की नियुक्ति, भवन, फर्नीचर आदि सभी आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति प्रबंध समिति द्वारा की जाती है। इन विद्यालयों का व्यय मुख्यतया छात्रों द्वारा प्राप्त धनराशि पर ही निर्भर करता है। कभी-कभी विशेष आवश्यकता पड़ने पर चन्दे द्वारा धन एकत्र करके व्यय किया जाता है। मान्यता प्राप्त विद्यालयों को भवन, फर्नीचर आदि आवश्यक वस्तुओं के लिये सरकार द्वारा अनुदान प्रदान किया जाता है। इन विद्यालयों के अध्यापकों के वेतन समिति के द्वारा छात्रों से प्राप्त शुल्क से किया जाता है। इन विद्यालयों के अध्यापकों को स्थानीय निकायों के अध्यापकों के समान पेंशन, जीवन बीमा, भविष्य निधि इत्यादि की कोई सुविधा प्राप्त नहीं है। अवकाश आदि प्रदान करने की कोई विशेष सुविधा नहीं है। प्रबंध समिति जब चाहे तब किसी अध्यापक को बिना पूर्व सूचना के निकाल सकती है। इन अध्यापकों को आवश्यकता से कम वेतन प्रदान किया जाता है।

2. अखिल भारतीय शिक्षा समिति द्वारा संचालित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालय :-

सन् 1972 में स्थापित "अखिल भारतीय शिक्षा समिति" द्वारा संचालित सरस्वती विद्या मंदिर पूरे भारतवर्ष में चलाये जा रहे हैं। इसका प्रधान कार्यालय माधव भवन, मॉडल हाउस, लखनऊ में है।

प्रत्येक प्रांत की एक अलग समिति होती है, जो प्रांत के सभी विद्यालयों का संचालन करती है। उत्तर प्रदेश में भारतीय शिक्षा समिति की स्थापना सन् 1958 में हुयी थी। प्रत्येक नये खुलने वाले विद्यालयों को भारतीय शिक्षा समिति से मान्यता प्राप्त करके उसका सदस्य बनना पड़ता है। इन विद्यालयों की स्थानीय प्रबंध समितियाँ होती हैं, जिनका गठन प्रत्येक दूसरे वर्ष किया जाता है। यह प्रबंध समिति विद्यालय के रख-रखाव तथा अध्यापकों की नियुक्ति करती हैं। प्रधानाध्यापक को एल०टी० वेतनमान एवं अन्य अध्यापकों को सी०टी० वेतनमान दिया जाता है। प्रधानाध्यापक एवं अध्यापकों को प्रधानाचार्य एवं आचार्य कहकर पुकारते हैं तथा इनका स्थानान्तरण प्रांत के किसी भी स्थान पर किया जा सकता है।

अखिल भारतीय शिक्षा समिति द्वारा संचालित सभी विद्यालय उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा स्थायी मान्यता प्राप्त है। वित्तीय व्यवस्था पूर्णतः विद्यालय के ऊपर निर्भर होती है। यह विद्यालय पर होने वाले व्यय को पूरा करके अखिल भारतीय शिक्षा समिति को प्रतिवर्ष सहायता स्वरूप कुछ धनराशि प्रदान करती है। शुल्क के रूप में प्रतिमाह रु080/= छात्रों से लिया जाता है। इन विद्यालयों में अधिकांशतः प्रत्येक विद्यालय के पास अपना भवन, फर्नीचर तथा शिक्षोपकरण की व्यवस्था है। इन विद्यालयों के अध्यापकों को पेंशन की सुविधा प्राप्त नहीं है। इनके वेतन से ही कुछ धनराशि भविष्य निधि के रूप में जमा होती रहती है जो सेवा निवृत्ति के बाद अध्यापकों को प्रदान की

जाती है। विशेष परिस्थितियों में अखिल भारतीय शिक्षा समिति के सहयोग से कुछ आर्थिक सहायता भी प्रदान की जाती है। अनुशासनिक व्यवहार पर प्रबंध समिति किसी भी अध्यापक को नोटिस देकर निकाल सकती है। इन विद्यालयों में अवकाश के रूप में वर्ष में पन्द्रह दिन का आकस्मिक अवकाश, संचयी अवकाश तथा अवैतनिक अवकाश की भी सुविधा प्रदान की जाती है। जूनियर हाईस्कूल परीक्षा, बोर्ड परीक्षा के रूप में संचालित होती है तथा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा मान्य पाठ्य पुस्तकों का अध्ययन कराया जाता है।

3. ईसाई मिशनरियों द्वारा संचालित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालय :-

भारतीय सभ्यता उदारतावादी होने के कारण अनेक सम्प्रदाय के लोगों को लेकर चल रही है। भारत को एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र कहा जाता है। यहाँ पर अनेकों जाति एवं सम्प्रदायों के लोग रहते हैं। इन्हीं में से एक ईसाई सम्प्रदाय भी है जो भारत में निवास करता है। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के समय में कार्य करने वाली सबसे पहली प्रोटेस्टेन्ट मिशनरी संस्था डेनमार्की मिशन थी। इस मिशन के प्रसिद्ध अग्रणियों जोगेन बल्ग और प्ल्यूशा ने सन् 1906 में दक्षिण भारत में डेनमार्क की एक छावनी ट्रांक्यूबर में अपनी गतिविधियाँ प्रारम्भ की। भारत में आधुनिक मिशनरी कार्य के विन्यास और पृष्ठभूमि में आंग्ल भारतीय साम्राज्य है, उसका इस साम्राज्य के प्रारम्भिक विकास के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। इस साम्राज्य के साथ-साथ यह कार्य देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैला हुआ है।

सन् 1813 के आज्ञा पत्र की 43वीं धारा ने भारतीयों की शिक्षा का उत्तरदायित्व कम्पनी पर रखकर मिशनरी संस्थाओं के लिये भारत के द्वार खोल दिये। परिणामस्वरूप सन् 1813 से सन् 1853 तक सम्पूर्ण भारतवर्ष में मिशनरियों का जाल सा बिछ गया। भारतीय शिक्षा के इतिहास में सन् 1833 से सन् 1853 की अवधि को शिक्षा के अंग्रेजीकरण की अवधि कहा जाता है। इसी

समय में मिशनरियों ने भारत में आकर अंग्रेजी विद्यालय स्थापित किये। इस प्रकार भारत में मिशनरी संस्थाओं की नींव रख दी गयी।

इस समय भारतवर्ष में इन मिशनरियों द्वारा देश के अधिकांश नगरों तथा कस्बों में अल्पसंख्यक वर्ग के रूप में मान्यता प्राप्त विद्यालय चलाये जा रहे हैं। इन विद्यालयों में प्रत्येक जाति के विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। छात्रों को प्रवेश के पूर्व एक साक्षात्कार देना होता है, उसी के आधार पर उनका प्रवेश होता है। इन विद्यालयों में रू० 90/- मासिक शुल्क लिया जाता है। सरकार द्वारा इन विद्यालयों को वर्ष में एक बार आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।

प्रधानाचार्य की नियुक्ति इन मिशनरियों के प्रधान कार्यालय के माध्यम से होती है। अध्यापकों का चयन विद्यालय में ही किया जाता है। अध्यापकों के चयन के समय मिशन के कुछ वरिष्ठ सदस्य चयन समिति में रहते हैं। इन विद्यालयों में महिलाओं की संख्या पुरूषों की संख्या से अधिक होती है। इनके अध्यापकों को उच्च वेतनमान, जीवन बीमा लाभ, भविष्य निधि लाभ आदि प्रदान किया जाता है। इसकी कोई क्षेत्रीय प्रबंध समिति नहीं होती है।

4. <u>रेलवे द्वारा संचालित विद्यालय :-</u>

बुन्देलखण्ड सम्भाग में पाँच जनपद हैं, जिनमें से चार जनपदों में रेलवे विद्यालय चलाये जा रहे हैं। यह विद्यालय मध्य रेलवे द्वारा रेलवे में कार्यरत वरिष्ठ सदस्यों की देखरेख में चलाये जा रहे हैं। सदस्यों द्वारा संचालित जूनियर हाईस्कूल में अध्यापकों की नियुक्ति प्रबंध समिति के द्वारा की जाती है तथा इन विद्यालयों की देखरेख भी प्रबंध समिति ही करती है। रेलवे विद्यालयों का रेलवे का ही भवन होता है तथा इनमें शुल्क बहुत ही कम लिया जाता है। इन विद्यालयों में रेलवे कर्मचारियों के बच्चों को शिक्षा प्रदान की जाती है।

इन विद्यालयों की अपनी भूमि, भवन, फर्नीचर आदि सभी होता है। इन विद्यालयों की देखरेख के लिये कोई क्षेत्रीय प्रबंध समिति नहीं होती। विद्यालयों की पूर्ण व्यवस्था प्रधानाचार्य के ऊपर निर्भर करती है। प्रधानाचार्य एवं अध्यापकों का चयन रेल सेवा आयोग द्वारा किया जाता है। अध्यापकों को एक विद्यालय से दूसरे विद्यालय में स्थानान्तरित किया जा सकता है। यहाँ के अध्यापकों एवं प्रधानाध्यापकों को केन्द्र के समान वेतन प्रदान किया जाता है।

विद्यालयों की वित्तीय व्यवस्था पूर्णतया रेलवे बोर्ड द्वारा चलायी जाती है। सरकार केवल हरिजन कोटा तथा फीस में दी जाने वाली रियायत हो वहन करती है। यहाँ पर छात्रों को प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण होने के पश्चात ही लिया जाता है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि बुन्देलखंण्ड में व्यक्तिगत संस्थाओं का बड़ा योगदान है। इस सम्बन्ध में धार्मिक एवं सामाजिक संस्थायें भी पीछे नहीं है। आर्य समाज, सनातन धर्म समाज, थियोसोफिकल सोसाइटी आदि जैसी संस्थायें भी भारत में शैक्षिक प्रसार कर रही हैं। व्यक्तिगत अभिकरणों द्वारा चलाये जाने वाले विद्यालयों को सरकार से अनुदान प्राप्त होता है। इसके लिये कुछ नियमों का पालन करना होता है। किसी धर्म विशेष की शिक्षा देने पर सरकार आर्थिक सहायता देना बन्द कर देती है।

## कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के प्रबंधतंत्र :-

कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षा का संचालन स्थानीय निकायों तथा व्यक्तिगत निकायों के माध्यम से होता है। स्थानीय निकायों के अन्तर्गत नगरपालिकाओं तथा जिला परिषदों द्वारा संचालित विद्यालय आते

हैं। व्यक्तिगत निकायों के अन्तर्गत वह विद्यालय आते हैं जो विभिन्न प्रकार के सामाजिक, धार्मिक तथा व्यक्तिगत प्रबंधतंत्रों द्वारा चलाये जा रहे हैं तथा वह स्थायी या अस्थायी तौर पर सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है। अतः हम कह सकते हैं कि बुन्देलखण्ड में कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों को संचालित करने वाले प्रबंधतंत्र निम्नलिखित हैं:-

1. स्थानीय निकाय

   (1) नगरपालिका

   (2) जिला परिषद

2. व्यक्तिगत निकाय

   (1) व्यक्तिगत प्रबंधतंत्र

   (2) अखिल भारतीय शिक्षा समिति

   (3) ईसाई मिशनरी तथा

   (4) रेलवे

## संदर्भ

1. ओ0, एच0के0 स्प्रेट, इण्डिया एण्ड पाकिस्तान, मैथ्यून, लंदन, 1954, पृष्ठ - 47

2. सिंह, आर0एल0 - इण्डिया ए रीजनल जौगरफी, एन0जी0एस0आई0, बनारस, 1971, पृष्ठ 600-601

3. बुन्देली, राधाकृष्ण एवं सत्यभामा , बुन्देलखण्ड का ऐतिहासिक मूल्यांकन, बुन्देलखण्ड प्रकाशन, बाँदा, 1989, पृष्ठ सं0 29

4. त्रिपाठी, मोतीलाल - बुन्देलखण्ड दर्शन, शारदा साहित्य कुटीर, झाँसी, 1980, पृष्ठ सं0 26, 272, 470

5. उ0प्र0 वार्षिकी 90-91, 91-92, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0, 1991, पृष्ठ सं0 10

6. सांख्यिकीय पत्रिका, झाँसी मण्डल, 1991, पृष्ठ सं0 99, 100, 102

## चतुर्थ अध्याय

1. जनसंख्या एवं न्यादर्श

2. प्रयुक्त परीक्षण सामग्री

3. प्रदत्तों का संग्रह

4. सांख्यिकीय विश्लेषण

प्रस्तुत अध्याय में निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत अनुसंधान पद्यति का वर्णन किया जा रहा है:-

1. जनसंख्या एवं न्यादर्श
2. अध्ययन में प्रयुक्त परीक्षण सामग्री
3. प्रदत्तों का संग्रह, एवं
4. सांख्यिकीय विश्लेषण ।

1. <u>जनसंख्या एवं न्यादर्श</u> :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन की जनसंख्या का सम्बन्ध उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड सम्भाग में अध्ययनरत कक्षा 8 के छात्र एवं छात्रायें हैं। केवल उन्हीं विद्यालयों को अध्ययन में शामिल किया गया है, जिनमें केवल कक्षा 8 तक ही अध्यापन कार्य किया जाता है तथा जो कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की श्रेणी में आते हैं।

बुन्देलखण्ड सम्भाग में कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों का संचालन पाँच प्रकार की संस्थायें कर रही हैं, जिनकी तालिका निम्नस्थ हैं:-

(1) अखिल भारतीय शिक्षा समिति
(2) व्यक्तिगत प्रबंध संस्थायें
(3) मिशनरी
(4) रेलवे
(5) परिषदीय
   अ. नगरपालिका (शहरी क्षेत्र में)
   ब. जिला परिषद (ग्रामीण क्षेत्र में)

पाँचों जनपदों में कुल 1105 कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हैं, जिसमें 107 विद्यालय नगरीय क्षेत्र में हैं। झाँसी जनपद में 37, ललितपुर जनपद में 14, जालौन जनपद में 52, हमीरपुर जनपद तथा बाँदा जनपद में क्रमशः 31 तथा 53 कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालय है (तालिका संख्या-2)

शोधकार्य हेतु पाँचों जनपदों से मिशन, रेलवे, परिषदीय (जिला परिषद तथा नगरपालिका द्वारा संचालित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालय) सरस्वती विद्या मन्दिर तथा व्यक्तिगत विद्यालयों में से एक-एक विद्यालय का चयन करना है। चूँकि रेलवे द्वारा संचालित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिर्फ झाँसी में है तथा मिशन विद्यालय उरई, झाँसी तथा बाँदा में ही केवल एक-एक विद्यालय हैं। अतः पाँचों जनपदों से व्यक्तिगत, परिषदीय एवं सरस्वती विद्या मंदिर के एक-एक विद्यालय का चुनाव करने के लिये या दृच्छिक न्यादर्श का प्रयोग किया गया है।

चूँकि मिशन, रेलवे विद्यालय नगरीय क्षेत्र में ही कार्य कर रहे हैं, अतः व्यक्तिगत विद्यालय, नगरपालिका द्वारा संचालित परिषदीय विद्यालय एवं सरस्वती विद्या मंदिर का चयन नगरीय क्षेत्र से तथा जिला परिषद द्वारा संचालित परिषदीय विद्यालय ग्रामीण क्षेत्र से चयनित किये गये हैं।

विद्यालयों के चयन हेतु सभी विद्यालयों के नामों की पर्ची तैयार की गयी तथा उनको मोड़कर अलग-अलग प्रकार के विद्यालयों के अनुसार एक टोकरी में मिलाकर रख दिया गया फिर एक छात्र से एक टोकरी से एक पर्ची निकलवाकर देखा गया और उस पर्ची पर लिखे गये विद्यालय को प्रदत्त संकलन हेतु चुन लिया गया। इस प्रकार प्रत्येक जनपद से चारों प्रकार के एक-एक विद्यालय को चुना गया है। तीन विद्यालय ईसाई मिशनरी द्वारा संचालित तथा एक विद्यालय रेलवे द्वारा संचालित चुने गये हैं। कुल मिलाकर चौबीस विद्यालय शोध कार्य हेतु चयनित किये गये, जो निम्नप्रकार हैं:-

तालिका सं0-3

प्रदत्त संग्रह हेतु चयनित विद्यालयों का नाम संस्था, स्थान एवं छात्रों की संख्या

| क्र0सं0 | जिला | विद्यालयों के नाम | संचालित संस्था का नाम | छात्रों की संख्या |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| 1. | जालौन | 1. सरस्वती विद्या मंदिर उरई | अखिल भारतीय शिक्षा समिति | 25 |
| | | 2. बी0सी0एच0मिशन, उरई | मिशनरी द्वारा | 25 |
| | | 3. गांधी जू0हा0 उरई | व्यक्तिगत निकाय | 25 |
| | | 4. जूनियर हाईस्कूल, कोंच | जिला परिषद | 25 |
| | | 5. जूनियर हाईस्कूल, उरई | नगरपालिका | 25 |
| 2. | झाँसी | 1. सरस्वती विद्या मंदिर झाँसी | अखिल भारतीय शिक्षा समिति | 25 |
| | | 2. सेन्टमेरीज स्कूल, झाँसी | कैथोलिक संस्था | 25 |
| | | 3. सतीश चन्द्र चतुर्वेदी जूनियर हाईस्कूल, झाँसी | व्यक्तिगत निकाय | 25 |
| | | 4. आर0एस0एन0ए0 बाल मंदिर, झाँसी | रेलवे | 25 |
| | | 5. जूनियर हाईस्कूल, रानीपुर | जिला परिषद | 25 |
| | | 6. जूनियर हाईस्कूल, सीपरी झाँसी | नगरपालिका | 25 |
| 3. | ललितपुर | 1. सरस्वती विद्या मंदिर ललितपुर | अखिल भारतीय शिक्षा समिति | 25 |

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
|---|---|---|---|---|
| | | 2. स्वामी विवेकानन्द पूर्व माध्यमिक विद्यालय, बार | व्यक्तिगत निकाय | 25 |
| | | 3. जू०हा०, सोजना | जिला परिषद | 25 |
| | | 4. जू०हा०, देवरान | नगरपालिका | 25 |
| 4. | बाँदा | 1. सरस्वती विद्या मंदिर बांदा | अखिल भारतीय शिक्षा समिति | 25 |
| | | 2. सेन्टमेरी कानवेंट स्कूल, बाँदा | कैथोलिक संस्था | 25 |
| | | 3. एस०एस०एन० शिक्षा निकेतन, बाँदा | व्यक्तिगत | 25 |
| | | 4. जूनियर हाईस्कूल, चहितारा | जिला परिषद | 25 |
| | | 5. जूनियर हाईस्कूल, पुलिस लाइन, बाँदा | नगरपालिका | 25 |
| 5. | हमीरपुर | 1. सरस्वती विद्या मंदिर, मौदहा | अखिल भारतीय शिक्षा समिति | 25 |
| | | 2. चित्रगुप्त जू०हा०, राठ | व्यक्तिगत | 25 |
| | | 3. जू०हा०, ददरी | जिला परिषद | 25 |
| | | 4. आ०न०जू०हा०, राठ | नगरपालिका | 25 |

इसप्रकार कुल मिलाकर 600 विद्यार्थियों पर सामाजिक, आर्थिक परीक्षण किया गया। इन जनपदों में 5 प्रकार के विद्यालय लिये गये क्योंकि यहाँ पर रेलवे द्वारा संचालित विद्यालय मात्र 5वीं कक्षा तक ही है। ललितपुर, बाँदा तथा हमीरपुर में रेलवे विद्यालय नहीं हैं। अतः रेलवे विद्यालय के छात्र

प्राप्त नहीं हो सके हैं। इसी प्रकार मिशन स्कूल हमीरपुर तथा ललितपुर में कक्षा 8 तक नहीं चलते। अतः शोधकर्ता ने शोधकार्य हेतु कुल 24 विद्यालयों तथा 600 विद्यार्थियों को लिया है।

प्रस्तुत अध्याय में न्यादर्श का चयन सम्भाव्य तथा असम्भाव्य दोनों प्रकारों से किया गया है। सर्वप्रथम कोटा न्यादर्श और तत्पश्चात वर्गीय सम्भाव्य न्यादर्श पद्यति का उपयोग किया गया। इस प्रकार कोटा न्यादर्श पद्यति के अनुसार प्रत्येक विद्यालय से पच्चीस छात्रों का चयन निर्धारित किया गया है। इन पच्चीस छात्रों के चयन के लिये वर्गीय न्यादर्श पद्यति का उपयोग किया गया है। कक्षा उपस्थिति पंजिका से हर तीसरे छात्र का चयन किया गया। कुछ विद्यालय ऐसे भी थे जैसे रेलवे विद्यालय एवं परिषदीय संस्थायें, जहाँ छात्रों की संख्या पच्चीस या उससे कम थी सोद्देश्य न्यादर्श का उपयोग करते हुए सभी छात्रों को अध्ययन में सम्मिलित कर लिया गया है।

2. <u>अध्ययन में प्रयुक्त परीक्षण सामग्री :-</u>

परिकल्पना का निर्माण तथा न्यादर्श के चयन के पश्चात अगला महत्वपूर्ण चरण प्रदत्त संग्रह के लिये आवश्यक परीक्षण सामग्री का चयन अथवा आवश्यकतानुसार उनका निर्माण हैं। प्रदत्तों के संग्रह हेतु निम्न परीक्षण सामग्री का प्रयोग किया गया हैः-

(1) सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी - एस0पी0 कुलश्रेष्ठ

(2) व्यवहार मापनी - शोधकर्ता द्वारा निर्मित

(3) कक्षा 8 के लिये हिन्दी, गणित, विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान के अध्यापक निर्मित उपलब्धि परीक्षण - शोधकर्ता द्वारा निर्मित

## सामाजिक आर्थिक स्तर का मापन :-

सामाजिक आर्थिक स्तर के मापन के लिये एस०पी० कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित एवं प्रभावीकृत सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी का प्रयोग किया गया है। इस मापनी के दो प्रारूप हैं। प्रथम प्रारूप शहरी क्षेत्रों के लिये और द्वितीय प्रारूप ग्रामीण छात्रों के लिये हैं। सामाजिक, आर्थिक स्तर मापनी में 20 कथन हैं। प्रत्येक कथन के 2 से 12 विकल्प उत्तर है। प्रयोज्य को स्वयं अपने से सम्बन्धित विकल्प के आगे (✓) का निशान अंकित करना है। सामाजिक, आर्थिक स्तर का मापन निम्न सूचनाओं के आधार पर किया जाता है:-

(1) माता-पिता एवं सगे भाई-बहिनों का व्यवसाय
(2) माता-पिता एवं सगे भाई-बहिनों की शिक्षा
(3) माता-पिता एवं सगे भाई-बहिनों की तकनीकी शिक्षा (सिर्फ शहरी फार्म हेतु)
(4) आर्थिक निदर्शक
(5) सांस्कृतिक निदर्शक
(6) मनोवैज्ञानिक निदर्शक ।

शहरी फार्म की परीक्षण, पुर्नपरीक्षण, विश्वसनीयता 0.87 है। पाँच अर्थशास्त्रियों एवं पाँच शिक्षाविदों का परामर्श प्राप्त किया गया और यह पाया गया कि परीक्षण अपने उद्देश्य के लिये वैध है। इस प्रकार परीक्षण में विषय वस्तु एवं निर्मित ( Content and Construct ) वैधता है। कुप्पू स्वामी एवं पाण्डेय के सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी से तुलना करके विषय वस्तु एवं निर्मित वैधता ज्ञात की गयी है, जो क्रमशः 0.57 तथा 0.89 है। ग्रामीण फार्म की परीक्षण पुर्नपरीक्षण विश्वसनीयता 0.85 है। इस परीक्षण में निर्मित वैधता भी काफी उच्च स्तर की पायी गयी है।

सामाजिक, आर्थिक स्तर मापनी के स्थानीय मानकों का निर्माण -(एस०पी० कुलश्रेष्ठ )

एस०पी० कुलश्रेष्ठ की सामाजिक, आर्थिक मापनी के मानक पश्चिमी उत्तर प्रदेश की जनसंख्या पर आधारित है, इसलिये आवश्यक है कि विश्वसनीय एवं वैध परिणामों की प्राप्ति के लिये इस परीक्षण के स्थानीय मानक तैयार करना चाहिए क्योंकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश की तुलना में बुन्देलखण्ड अत्यन्त पिछड़ा है। शहरी क्षेत्र के 475 छात्रों तथा ग्रामीण क्षेत्रों के 125 छात्रों पर सामाजिक, आर्थिक मापनी का प्रशासन किया गया। प्रथम चतुर्थांश $Q_1$ एवं तृतीय चतुर्थांश ({$Q_3$}) की गणना करके स्थानीय मानक ज्ञात किये गये। सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी (कुलश्रेष्ठ) के स्थानीय मानकों की गणना हेतु तालिका नं० 4 में आवृत्ति वितरण एवं $Q_1$ तथा $Q_3$ मूल्य दिये गये हैं।

तालिका सं०-4

मानक निर्धारण हेतु आवृत्ति वितरण एवं $Q_1$, $Q_3$ मूल्य सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी - कुलश्रेष्ठ

| शहरी N=475 | | ग्रामीण N=125 | |
|---|---|---|---|
| C.I. | आवृत्ति (f) | C.I. | आवृत्ति (f) |
| 10 - 34 | 9 | 10 - 29 | 3 |
| 35 - 59 | 10 | 30 - 49 | 20 |
| 60 - 84 | 26 | 50 - 69 | 52 |
| 85 - 109 | 45 | 70 - 89 | 27 |
| 110 - 134 | 100 | 90 - 109 | 15 |
| 135 - 159 | 99 | 110 - 129 | 8 |
| 160 - 184 | 105 | | |
| 185 - 209 | 60 | | |
| 210 - 234 | 21 | | |
| $Q_1$ = 68.78 | $Q_3$ = 127.31 | $Q_1$ = 52.76 | $Q_3$ = 87.51 |

उपर्युक्त सांख्यिकीय गणनाओं के आधार पर शहरी एवं ग्रामीण जनसंख्या को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। जैसे कि निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर $Q_1$ तथा इससे कम। औसत सामाजिक आर्थिक स्तर $Q_1$ एवं $Q_3$ के मध्य और उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर $Q_3$ एवं उससे अधिक। तालिका संख्या -5 में शहरी एवं ग्रामीण जनसंख्या से सम्बन्धित आर्थिक स्तर की तीनों श्रेणियों का प्रदर्शन किया गया है।

तालिका सं0-5

सामाजिक आर्थिक स्तर श्रेणी तालिका

| सामाजिक आर्थिक स्तर श्रेणी | मूल प्राप्तांकों का वितरण | |
|---|---|---|
| | शहरी | ग्रामीण |
| उच्च | 128 एवं उससे अधिक | 88 एवं उससे अधिक |
| औसत | 69 से 127 | 53 से 87 |
| निम्न | 68 एवं उससे कम | 52 एवं उससे कम |

व्यवहार मापनी का निर्माण :-

यह सामान्य धारणा है तथा शोध कार्यों से स्पष्ट हुआ है कि छात्रों के रहन, सहन एवं सामान्य व्यावहारिक आचरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। यदि विद्यालय का वातावरण अच्छा है अध्ययन एवं अध्यापन के लिये जितनी अच्छी सुविधायें दी जायेंगी उतना ही अच्छा प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ेगा। इस शोध कार्य के अन्तर्गत छात्रों के आचरण सम्बन्धी व्यवहार की जानकारी प्राप्त करने के लिये व्यवहार मापनी का निर्माण किया गया है। इस व्यवहार मापनी में वस्तुनिष्ठ प्रश्न रखे गये हैं। इन प्रश्नों के उत्तर विद्यालयों के प्रधानाचार्यो तथा अध्यापकों को देने हैं।

चूँकि शोध कार्य के अन्तर्गत शैक्षिक उपलब्धि के लिये हिन्दी, गणित, विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान विषयों को लिया गया है। अतः सभी विद्यालयों के इन्हीं विषयों के अध्यापकों तथा प्रधानाध्यापकों से जो छात्रों के सम्पर्क में लगातार रहते हैं, लिया गया है। इसके द्वारा जो व्यवहार मापनी के उत्तर प्राप्त हुये हैं उनसे छात्रों के व्यवहार की जानकारी प्राप्त की गयी है। व्यवहार मापनी को दो खण्डों में विभाजित करके बनाया गया है। प्रथम खण्ड में छात्रों के सामान्य व्यवहार एवं आचरण से सम्बन्धित प्रश्नों को रखा गया है। इन प्रश्नों के उत्तरों से उस विद्यालय के छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहार एवं आचरण का बोध होता है। इस खण्ड में प्रश्नों की संख्या 40 रखी गयी है।

व्यवहार मापनी के द्वितीय खण्ड में रखे गये प्रश्नों का सम्बन्ध विद्यालय की प्रशासन व्यवस्था एवं विद्यालय में शिक्षण कार्य हेतु उपलब्ध सुविधाओं से है। इस खण्ड में प्रश्नों की संख्या 21 रखी गयी हैं। चार प्रश्न संख्या 1, 2, 3 तथा 9 विविध जानकारी प्राप्त करने हेतु रखे गये हैं। इस प्रकार कुल मिलाकर 25 प्रश्न इस खण्ड में हैं।

व्यवहार मापनी पर निम्नलिखित निर्देश अंकित किये गये हैं:-

निर्देश - <u>खण्ड "अ"</u>

1. इस भाग में छात्रों के आचरण से सम्बन्धित कुछ प्रश्न है। आपको प्रत्येक प्रश्न से किसी एक विकल्प "हाँ" अथवा "नहीं" को चुनना है।

<u>खण्ड "ब"</u>

2. इस खण्ड में विद्यालय की व्यवस्था से सम्बन्धित कुछ प्रश्न हैं, आपको प्रत्येक प्रश्न में से किसी एक विकल्प "हाँ" अथवा "नहीं" को चुनना है।

अंक निर्धारण :-

व्यवहार मापनी में निम्न तालिका के अनुसार अंक प्रदान किये गये

हैं, यदि उत्तर तालिका के अनुसार उस प्रश्न का उत्तर है तो एक अंक, यदि नहीं तो शून्य अंक प्रदान किया गया है।

तालिका सं0-6

व्यवहार मापनी उत्तर तालिका (खण्ड-अ)

| प्रश्न सं0 | उत्तर | प्रश्न सं0 | उत्तर | प्रश्न सं0 | उत्तर | प्रश्न सं0 | उत्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | हाँ | 11 | नहीं | 21 | हाँ | 31 | नहीं |
| 2 | हाँ | 12 | हाँ | 22 | हाँ | 32 | नहीं |
| 3 | हाँ | 13 | नहीं | 23 | नहीं | 33 | नहीं |
| 4 | नहीं | 14 | हाँ | 24 | नहीं | 34 | नहीं |
| 5 | हाँ | 15 | नहीं | 25 | नहीं | 35 | हाँ |
| 6 | हाँ | 16 | नहीं | 26 | नहीं | 36 | नहीं |
| 7 | हाँ | 17 | हाँ | 27 | हाँ | 37 | नहीं |
| 8 | हाँ | 18 | नहीं | 28 | हाँ | 38 | नहीं |
| 9 | नहीं | 19 | हाँ | 29 | हाँ | 39 | हाँ |
| 10 | नहीं | 20 | नहीं | 30 | हाँ | 40 | नहीं |

तालिका सं0-7

व्यवहार मापनी उत्तर तालिका (खण्ड-ब)

| प्रश्न सं0 | उत्तर | प्रश्न सं0 | उत्तर | प्रश्न सं0 | उत्तर | प्रश्न सं0 | उत्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | हाँ | 10 | हाँ | 16 | हाँ | 22 | हाँ |
| 5 | हाँ | 11 | हाँ | 17 | हाँ | 23 | हाँ |
| 6 | हाँ | 12 | हाँ | 18 | हाँ | 24 | हाँ |
| 7 | हाँ | 13 | हाँ | 19 | हाँ | 25 | हाँ |
| 8 | हाँ | 14 | हाँ | 20 | हाँ | | |
| 9 | हाँ | 15 | हाँ | 21 | हाँ | | |

शैक्षिक उपलब्धि परीक्षणों का निर्माण :-

हिन्दी उपलब्धि परीक्षण :-

सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए बहुविकल्पीय वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का निर्माण किया गया है। प्रश्नों के प्रकार एवं उनसे सम्बन्धित प्रश्न संख्या निम्नप्रकार रखी गयी हैं:-

तालिका सं0-8

हिन्दी उपलब्धि परीक्षण में प्रश्नों के प्रकार एवं उनकी संख्या

| क्रम सं0 | प्रश्नों के प्रकार | प्रश्नों की संख्या |
|---|---|---|
| 1. | विषय वस्तु एवं शीर्षक से सम्बन्धित | 12 |
| 2. | समानार्थी प्रश्न | 9 |
| 3. | संधि विच्छेद | 5 |
| 4. | एकार्थी शब्द | 7 |
| 5. | वाक्य पूर्ति | 7 |
| 6. | कहावतें एवं मुहावरे | 10 |
| | प्रश्नों की कुल संख्या | 50 |

निर्देश :- वस्तुनिष्ठ प्रशासन हेतु छात्रों को निम्नलिखित निर्देश अंकित किये गये-

1. सभी प्रश्नों को हल करना है।
2. प्रश्नों का उत्तर अंदाज से नहीं लिखना है। उनका सही ज्ञान होने पर ही उत्तर दें।
3. सभी प्रश्न के उत्तर चार विकल्पों में दिये गये हैं, जिनमें सिर्फ एक सही है। सही उत्तर वाले कोष्ठक में (✓) का चिन्ह अंकित करना है।

अंक निर्धारण :-

प्रत्येक सही विकल्प के चयन पर एक अंक और गलत उत्तर के लिये शून्य अंक निर्धारित किया गया है। इस प्रकार अधिकतम प्राप्तांक 50 हो सकता है। वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन हेतु उत्तर कुंजी का प्रयोग किया है।

गणित उपलब्धि परीक्षण :-

कक्षा 8 के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर गणित विषय के लिये उपलब्धि परीक्षण का निर्माण किया गया। बहुविकल्पीय वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का प्रयोग किया गया। कक्षा 8 में गणित का पाठ्यक्रम दो भागों में विभक्त होता है - प्रथम भाग में अंकगणित एवं द्वितीय भाग में बीजगणित तथा रेखागणित । अतः शोधकर्ता ने प्रश्न पत्र को निम्न योजनानुसार तैयार किया -

तालिका सं0-9

गणित उपलब्धि परीक्षण में उपविषय एवं उनके प्रश्नों की सं0

| खण्ड | विषय | प्रश्नों की सं0 |
| --- | --- | --- |
| अ | अंकगणित से सम्बन्धित प्रश्न | 25 |
| ब | 1. बीजगणित से सम्बन्धित प्रश्न | 13 |
| | 2. रेखागणित से सम्बन्धित प्रश्न | 12 |
| | कुल प्रश्नों की संख्या | 50 |

निर्देश :- वस्तुनिष्ठ प्रश्न पत्र के प्रशासन हेतु छात्रों को निम्नलिखित निर्देश अंकित किये गये -

1. आपको प्रश्न पत्र के प्रत्येक खण्ड के सभी प्रश्नों को हल करना है।
2. प्रश्नों का उत्तर सही ज्ञान होने पर ही लिखना है, अंदाज से नहीं।
3. प्रश्न पत्र में प्रश्न के सामने चार विकल्प उत्तर के रूप में दिये हुये हैं, सही उत्तर वाले विकल्प के कोष्ठक में ( ✓ ) का चिन्ह अंकित करना है।

अंक निर्धारण :-

प्रत्येक सही विकल्प के चयन पर एक अंक और गलत विकल्प के चयन पर शून्य अंक निर्धारित किया गया है। इसप्रकार अधिकतम प्राप्तांक 50 हो सकता है। वस्तुनिष्ठ प्रश्न पत्रों के मूल्यांकन हेतु उत्तर कुंजी का प्रयोग किया है।

सामान्य विज्ञान उपलब्धि परीक्षण :-

सामान्य विज्ञान के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर बहुविकल्पीय वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का निर्माण किया गया। सामान्य विज्ञान के पाठ्यक्रम में भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान तथा जन्तु विज्ञान को स्थान दिया गया है। अतः इस प्रश्न पत्र में प्रश्नों को निम्नप्रकार व्यवस्थित किया गया -

तालिका सं0-10

सामान्य विज्ञान उपलब्धि परीक्षण में उपविषय एवं उनके प्रश्नों को सं0

| क्रम सं0 | विषय | प्रश्नों की सं0 |
|---|---|---|
| 1. | भौतिक विज्ञान | 14 |
| 2. | रसायन विज्ञान | 14 |
| 3. | वनस्पति विज्ञान | 11 |
| 4. | जन्तु विज्ञान | 11 |
| | कुल प्रश्नों की संख्या | 50 |

निर्देश :- वस्तुनिष्ठ विज्ञान उपलब्धि परीक्षण पर निम्नलिखित निर्देश अंकित किये गये -

1. आपको सभी प्रश्नों को हल करना है।
2. प्रश्नों के उत्तर का सही ज्ञान होने पर ही अंकित करना है, अंदाज से नहीं ।
3. नीचे दिये गये प्रश्नों के सामने प्रत्येक के चार विकल्प उत्तर के रूप में अंकित है, उनमें से एक सही है। सही उत्तर वाले कोष्ठक में ( ✓ ) का चिन्ह अंकित करना है।

अंक निर्धारण :-

प्रत्येक सही विकल्प के चयन पर एक अंक और गलत विकल्प के चयन पर शून्य अंक निर्धारित किया गया है। इस प्रकार अधिकतम प्राप्तांक 50 हो सकता है। प्रश्न पत्र के मूल्यांकन हेतु उत्तर कुंजी का प्रयोग किया है।

सामाजिक विज्ञान उपलब्धि परीक्षण :-

कक्षा 8 के विद्यार्थियों को सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत इतिहास, भूगोल तथा नागरिक शास्त्र विषय का ज्ञान प्रदान किया जाता है। अतः पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए प्रश्न पत्र को तीन खण्डों में विभक्त किया गया है। वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्नों की संख्या खण्डवार निम्नप्रकार रखी गयी हैं -

तालिका सं0-11

सामाजिक विज्ञान उपलब्धि परीक्षण में उपविषय एवं उनके प्रश्नों की सं0

| खण्ड | विषय | प्रश्नों की संख्या |
|---|---|---|
| अ | इतिहास | 20 |
| ब | भूगोल | 15 |
| स | नागरिक शास्त्र | 15 |
| | कुल प्रश्नों की संख्या | 50 |

निर्देश :- प्रश्न पत्र के मुख्य पृष्ठ पर विद्यार्थियों के लिये निम्नलिखित निर्देश अंकित किये -

1. आपको प्रत्येक खण्ड के सभी प्रश्नों को हल करना है।
2. प्रश्नों के उत्तर का सही ज्ञान होने पर ही देना है, अंदाज से नहीं।
3. प्रत्येक प्रश्न के चार-चार सम्भावित उत्तर दिये गये हैं। इन उत्तरों में जो सही हो, उसके आगे ( ✓ ) का चिन्ह अंकित करना है।

अंक निर्धारण :-

प्रत्येक सही उत्तर के चयन पर एक अंक और गलत उत्तर के चयन पर शून्य अंक निर्धारित किया गया। इस प्रकार अधिकतम प्राप्तांक 50 हो सकता है। वस्तुनिष्ठ प्रश्न पत्र का मूल्यांकन हेतु उत्तर कुंजो का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों का संग्रह :-

शोधकार्य हेतु चयन किये गये समस्त विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों से शोधकर्ता ने सम्पर्क स्थापित किया। उनको अपने शोधकार्य के उद्देश्यों से अवगत कराकर परीक्षणों हेतु अनुमति तथा तिथि प्राप्त की।

निर्धारित तिथि को शोधकर्ता ने विद्यालयों में पहुँचकर छात्रों का चयन किया और फिर चयनित छात्रों को एक कमरे में बैठाकर सही-सही सूचनायें देने को कहा तथा इन सूचनाओं को गोपनीय रखने का आश्वासन दिया। सभी छात्रों को निर्धारित निर्देश प्रदान कर शहरी छात्रों को शहरी सामाजिक आर्थिक परीक्षण तथा ग्रामीण छात्रों को ग्रामीण सामाजिक आर्थिक परीक्षण भरने को दिया। छात्रों द्वारा उनको भरकर वापस कर दिया गया, जिन्हें शोधकर्ता द्वारा एकत्रित कर लिया गया।

सामाजिक आर्थिक परीक्षण पूर्ण कराकर वापस लेने के पश्चात उन्हें उपलब्धि परीक्षणों से सम्बन्धित निर्देश प्रदान किये। निर्देशों के साथ-साथ छात्रों को यह भी बतलाया कि इसका उनके परीक्षाफल पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। अतः वह न तो अनुचित साधनों का प्रयोग करें और न ही अंदाज से उत्तर दें, जिसका ज्ञान हो उसी को चिन्हित करें। सर्वप्रथम छात्रों को हिन्दी विषय का प्रश्न पत्र हल करने को दिया गया। छात्रों के हल करने के पश्चात उस प्रश्न पत्र को वापस ले लिया गया और फिर 15-15 मिनट के अन्तराल पर गणित, सामान्य विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान के प्रश्न पत्रों को हल करने को दिये गये। हल करने के पश्चात उनको वापस ले लिया गया।

शोधकर्ता ने सभी चयन किये गये विद्यालयों के हिन्दी, गणित, सामान्य विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान के अध्यापकों से सम्पर्क कर व्यवहार मापनी के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान की तथा सूचनाओं की गोपनीयता के सम्बन्ध में विश्वास दिलाया। व्यवहार मापनी से सम्बन्धित निर्देशों से अवगत कराकर उनको व्यवहार मापनी भरने के लिये दी। प्रधानाध्यापकों एवं अध्यापकों द्वारा उसकी पूर्ति करा कर वापस ले ली।

इस प्रकार शोधकर्ता चयनित किये गये सभी चौबीस विद्यालयों में क्रमशः गया और चयनित विद्यार्थियों से उपरोक्त विधि द्वारा प्रदत्तों का संकलन किया।

## सांख्यिकीय विश्लेषण :-

प्रस्तुत शोधकार्य के अन्तर्गत वर्णनात्मक एवं अनुमानिक दोनों प्रकार की सांख्यिकीय विधि का प्रयोग किया गया है। वर्णनात्मक सांख्यिकीय के अन्तर्गत लेखा चित्र, चतुर्थांश विचलन, मध्यमान एवं प्रामाणिक विचलन का प्रयोग किया गया है। अनुमानिक सांख्यिकीय के अन्तर्गत दो समूहों की तुलना

करने एवं परिकल्पना परीक्षण तथा निष्कर्ष ज्ञात करने हेतु t परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी के अन्तर्गत त्रिस्तरीय श्रेणी विभाजन यथा - निम्न, औसत तथा उच्च ज्ञात करने के लिये $Q_1$, $Q_3$ सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है। दो समूहों को तुलना करने के लिये अत्यन्त उपयुक्त एवं विश्वसनीय t परीक्षण की गणना की गयी है। t परीक्षण की गणना हेतु मध्यमान एवं प्रामाणिक विचलन ज्ञात किये गये हैं। तथ्यों की निष्कर्षात्मक व्याख्या करने के लिये इन सांख्यिकीय विधियों का भी उपयोग किया गया है। ग्राफ का रेखांकन दो समूहों की तुलना हेतु एक बहुत सुगम और रूचिकर विधि है। प्रदत्तों की व्याख्या हेतु इस विधि का प्रयोग किया गया है।

# पंचम अध्याय

## शैक्षिक उपलब्धि : प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या ।

शोध कार्य का उद्देश्य विभिन्न प्रबन्धतंत्रों द्वारा संचालित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के समान सामाजिक, आर्थिक स्तर के 8वीं कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उन विद्यालयों के छात्रों पर सामाजिक-आर्थिक परीक्षण लिया गया। उन परीक्षणों पर अंकतालिका के सहयोग से अंक प्रदान कर वर्गीकृत किया गया। इन प्रदत्तों के द्वारा समान सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्र छात्राओं का चयन किया गया। इन चयनित विद्यार्थियों पर हिन्दी, गणित, सामान्य विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान के उपलब्धि परीक्षणों का निर्माण एवं प्रयोग किया गया। इन परीक्षणों का मूल्यांकन कर उनसे प्राप्त प्राप्तांकों को वर्गीकृत करके मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन तथा टी प्राप्तांक प्राप्त किये गये हैं। उनको तालिकाबद्ध करके उनकी तालिकायें, उनका विश्लेषण एवं उनकी तुलना को निम्नरूप में प्रस्तुत किया गया है:-

तालिका सं0-12

रेलवे विद्यालय एवं सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांक, प्रमाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक का प्रदर्शन

$N_1 = 22, \quad N_2 = 67$

| विषय | रेलवे विद्यालय | | सरस्वती विद्या मंदिर | | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | | |
| हिन्दी | 38.50 | 3.33 | 37.38 | 4.52 | 2.51 | $<.05$ |
| गणित | 39.68 | 4.32 | 36.35 | 3.06 | 3.95 | $<.01$ |
| सामान्य विज्ञान | 37.00 | 3.83 | 36.20 | 4.04 | 1.23 | N.S. |
| सामाजिक विज्ञान | 33.77 | 3.34 | 34.93 | 4.09 | 2.29 | $<.05$ |
| औसत | 37.24 | 3.73 | 36.21 | 3.92 | 4.30 | $<.01$ |

तालिका सं0-12 में रेलवे विद्यालय के छात्रों और सरस्वती विद्या मंदिर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक प्रदर्शन किया गया है। रेलवे विद्यालय के छात्रों के हिन्दी विषय में मध्यमान प्राप्तांक 38.50 और प्रामाणिक विचलन 3.33 है, जबकि सरस्वती विद्या मंदिर के छात्रों के हिन्दी विषय में मध्यमान प्राप्तांक 37.38 और प्रामाणिक विचलन 4.52 है। टी प्राप्तांक 2.51 है, जो .05 स्तर पर सार्थक है। यह इंगित करता है कि रेलवे विद्यालय के छात्र .05 सार्थकता स्तर पर सरस्वती विद्या मंदिर के छात्रों से हिन्दी विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

रेलवे विद्यालय के छात्रों के गणित विषय में मध्यमान प्राप्तांक 39.68 है तथा प्रामाणिक विचलन 4.32 है, जबकि सरस्वती विद्या मंदिर के छात्रों के गणित विषय में मध्यमान प्राप्तांक 36.35 तथा प्रामाणिक विचलन 3.06 है। टी प्राप्तांक 3.95 है, जो .01 स्तर पर सार्थक है, यह इंगित करता है कि रेलवे विद्यालय के छात्र .01 स्तर पर सरस्वती विद्या मंदिर के छात्रों से गणित विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

रेलवे विद्यालय के छात्रों के समान्य विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 37.00 और प्रामाणिक विचलन 3.83 है, जबकि सरस्वती विद्या मंदिर के छात्रों के सामान्य विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 36.20 और प्रामाणिक विचलन 4.04 है। टी प्राप्तांक 1.23 है, जो किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं हैं। यह स्पष्ट करता है कि रेलवे तथा सरस्वती विद्या मंदिर के छात्रों में सामान्य विज्ञान विषय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, दोनों विद्यालय के छात्र सामान्य विज्ञान विषय में समान स्तर के हैं।

रेलवे विद्यालय के छात्रों के सामाजिक विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 33.77 तथा प्रामाणिक विचलन 3.34 है, जबकि सरस्वती विद्या मंदिर के सामाजिक विषय में मध्यमान प्राप्तांक 34.93 तथा प्रामाणिक विचलन 4.09

है। टी प्राप्तांक 2.29 है जो .05 स्तर पर सार्थक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सरस्वती विद्या मंदिर के छात्र रेलवे विद्यालय के छात्रों की अपेक्षा सामाजिक विषय में .05 स्तर पर श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

उपर्युक्त तालिका का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि रेलवे विद्यालय के छात्रों के औसत मध्यमान प्राप्तांक 37.24 तथा प्रामाणिक विचलन 3.71 और सरस्वती विद्या मंदिर के औसत मध्यमान प्राप्तांक 36.21 तथा प्रामाणिक विचलन 3.92 है। टी प्राप्तांक 4.30 है, जो .01 स्तर पर सार्थक है। यह इंगित करता है कि रेलवे विद्यालय के छात्र सरस्वती विद्या मंदिर के छात्रों की अपेक्षा .01 स्तर पर श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

तालिका सं0-13

रेलवे विद्यालय एवं मिशन विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक प्रदर्शन तालिका

$N_1 = 22$, $N_2 = 41$

| विषय | रेलवे विद्यालय | | मिशन विद्यालय | | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | | |
| हिन्दी | 38.50 | 3.33 | 34.28 | 5.10 | 11.68 | $<.01$ |
| गणित | 39.68 | 4.32 | 38.12 | 5.23 | 6.24 | $<.01$ |
| सामान्यविज्ञान | 37.00 | 3.83 | 32.09 | 5.68 | 14.23 | $<.01$ |
| सामाजिकविज्ञान | 33.77 | 3.34 | 29.64 | 5.68 | 7.82 | $<.01$ |
| औसत | 37.24 | 3.71 | 33.53 | 5.42 | 12.36 | $<.01$ |

तालिका सं0-13 में रेलवे विद्यालय के छात्रों और मिशन विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक प्रदर्शन किया गया है। रेलवे विद्यालय के छात्रों के हिन्दी में मध्यमान प्राप्तांक 38.50 और प्रामाणिक विचलन 3.33 है, जबकि मिशन विद्यालय के छात्रों के हिन्दी विषय में मध्यमान प्राप्तांक 34.28 तथा प्रामाणिक विचलन 5.10 है। टी प्राप्तांक 11.68 है, जो .01 स्तर पर सार्थक है। यह इंगित करता है कि रेलवे विद्यालय के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर मिशन विद्यालय के छात्रों से हिन्दी विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

रेलवे विद्यालय के गणित विषय में छात्रों के मध्यमान प्राप्तांक 39.68 तथा प्रामाणिक विचलन 4.32 है, जबकि मिशन विद्यालय के छात्रों का गणित विषय में मध्यमान प्राप्तांक 38.12 तथा प्रामाणिक विचलन 5.23 है। टी प्राप्तांक 6.24 है, जो .01 स्तर पर सार्थक है। यह स्पष्ट करता है कि रेलवे विद्यालय के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर मिशन विद्यालय के छात्रों से गणित विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

रेलवे विद्यालय के छात्रों के सामान्य विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 37.00 तथा प्रामाणिक विचलन 3.83 है, जबकि मिशन विद्यालय के छात्रों के सामान्य विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 32.09 तथा प्रामाणिक विचलन 5.68 है। टी का मान 14.23 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। यह स्पष्ट करता है कि रेलवे विद्यालय के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर मिशन विद्यालय के छात्रों से सामान्य विज्ञान विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

रेलवे विद्यालय के छात्रों के सामाजिक विज्ञान विषय के मध्यमान प्राप्तांक 33.77 तथा प्रामाणिक विचलन 3.34 है, जबकि मिशन विद्यालय के छात्रों के सामाजिक विज्ञान विषय के मध्यमान प्राप्तांक 29.64 तथा प्रामाणिक विचलन 5.68 है। टी प्राप्तांक 7.82 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। यह स्पष्ट करता है कि रेलवे विद्यालय के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर मिशन

विद्यालय के छात्रों से सामाजिक विज्ञान विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

तालिका सं0-13 का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि रेलवे विद्यालय के छात्रों के चारों विषयों के औसत मध्यमान प्राप्तांक 37.24 तथा प्रामाणिक विचलन 3.71 है, जबकि मिशन विद्यालय के छात्रों के औसत मध्यमान प्राप्तांक 33.53 तथा प्रामाणिक विचलन 5.42 है। टी का मान 12.36 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, जिससे स्पष्ट होता है कि रेलवे विद्यालय के छात्र मिशन विद्यालय के छात्रों की अपेक्षा .01 सार्थकता स्तर पर श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

तालिका सं0-14

रेलवे विद्यालय तथा व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांक, प्रमाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक प्रदर्शन तालिका

$N_1 = 22$, $N_2 = 80$

| विषय | रेलवे विद्यालय | | व्यक्तिगत विद्यालय | | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | | |
| हिन्दी | 38.50 | 3.33 | 28.88 | 7.02 | 28.80 | $<.01$ |
| गणित | 39.68 | 4.32 | 29.00 | 6.91 | 19.92 | $<.01$ |
| सामान्यविज्ञान | 37.00 | 3.83 | 26.10 | 4.88 | 17.92 | $<.01$ |
| सामाजिकविज्ञान | 33.77 | 3.34 | 24.63 | 4.59 | 18.57 | $<.01$ |
| औसत | 37.24 | 3.71 | 27.15 | 5.85 | 32.65 | $<.01$ |

तालिका सं0-14 में रेलवे विद्यालय तथा व्यक्तिगत विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक प्रदर्शन किया गया है। रेलवे विद्यालय के छात्रों के हिन्दी विषय में मध्यमान प्राप्तांक 38.50 और प्रामाणिक विचलन 3.33. है, जबकि व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों के हिन्दी विषय में मध्यमान प्राप्तांक 28.88 और प्रामाणिक विचलन 7.02 है। टी का मान 28.80 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, यह स्पष्ट करता है कि रेलवे विद्यालय के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों से हिन्दी विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

रेलवे विद्यालय के छात्रों के गणित विषय में मध्यमान प्राप्तांक 39.68 तथा प्रामाणिक विचलन 4.32 है, जबकि व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों के गणित विषय में मध्यमान प्राप्तांक 29.00 तथा प्रामाणिक विचलन 6.91 है। टी का मान 19.92 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, यह स्पष्ट करता है कि रेलवे विद्यालय के छात्र व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों से .01 सार्थकता स्तर पर गणित विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

रेलवे विद्यालय के छात्रों के सामान्य विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 37.00 और प्रामाणिक विचलन 3.83 है, जबकि व्यक्तिगत विद्यालयों के सामान्य विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 26.10 तथा प्रामाणिक विचलन 4.88 है। टी प्राप्तांक 17.92 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, यह स्पष्ट करता है कि रेलवे विद्यालय के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों से सामान्य विज्ञान विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

रेलवे विद्यालय के छात्रों के सामाजिक विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 33.77 और प्रामाणिक विचलन 3.34 है, जबकि व्यक्तिगत विद्यालयों के सामाजिक विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 24.63 तथा प्रामाणिक विचलन 4.59 है। टी प्राप्तांक 18.57 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। यह

स्पष्ट करता है कि रेलवे विद्यालय के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों से सामाजिक विज्ञान विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

तालिका सं0-14 के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि रेलवे विद्यालय के छात्रों के चारों विषयों के औसत मध्यमान प्राप्तांक 37.24 तथा प्रामाणिक विचलन 3.71 है, जबकि व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों के चारों विषयों के औसत मध्यमान प्राप्तांक 27.15 तथा प्रामाणिक विचलन 5.85 है। टी प्राप्तांक 32.65 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि रेलवे विद्यालयों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

तालिका सं0-15

रेलवे विद्यालय एवं परिषदीय विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक प्रदर्शन तालिका

$N_1 = 22$, $N_2 = 140$

| विषय | रेलवे विद्यालय | | परिषदीय विद्यालय | | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | | |
| हिन्दी | 38.50 | 3.33 | 20.99 | 5.06 | 30.88 | <.01 |
| गणित | 39.68 | 4.32 | 20.75 | 5.92 | 24.48 | <.01 |
| सामान्य विज्ञान | 37.00 | 3.83 | 21.93 | 3.62 | 19.93 | <.01 |
| सामाजिक विज्ञान | 33.77 | 3.34 | 20.56 | 4.35 | 21.69 | <.01 |
| औसत | 37.24 | 3.71 | 21.06 | 4.74 | 23.79 | <.01 |

तालिका सं0-15 में रेलवे विद्यालय के छात्रों और परिषदीय विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक प्रदर्शन किया गया है। रेलवे विद्यालयों के छात्रों के हिन्दी विषय में मध्यमान प्राप्तांक 38.50 तथा प्रामाणिक विचलन 3.33 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के हिन्दी विषय में मध्यमान प्राप्तांक 20.99 तथा प्रामाणिक विचलन 5.06 है। टी प्राप्तांक 30.88 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। यह स्पष्ट करता है कि रेलवे विद्यालयों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर परिषदीय विद्यालयों के छात्रों से हिन्दी विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

रेलवे विद्यालयों के छात्रों के गणित विषय में मध्यमान प्राप्तांक 39.68 तथा प्रामाणिक विचलन 4.32 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के गणित विषय में मध्यमान प्राप्तांक 20.75 तथा प्रामाणिक विचलन 5.92 है। टी प्राप्तांक 24.48 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि रेलवे विद्यालय के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर परिषदीय विद्यालयों के छात्रों से गणित विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

रेलवे विद्यालयों के छात्रों के सामान्य विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 37.00 तथा प्रामाणिक विचलन 3.83 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के सामान्य विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 21.93 तथा प्रामाणिक विचलन 3.62 है। टी प्राप्तांक 19.93 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। जो यह स्पष्ट करता है कि रेलवे विद्यालयों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर परिषदीय विद्यालयों के छात्रों से सामान्य विज्ञान विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

रेलवे विद्यालयों के छात्रों के सामाजिक विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 33.77 तथा प्रामाणिक विचलन 3.34 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के समाजिक विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 20.56 तथा प्रामाणिक

विचलन 4.35 है। टी प्राप्तांक 21.69 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। जो यह स्पष्ट करता है कि रेलवे विद्यालयों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर परिषदीय विद्यालयों के छात्रों से सामाजिक विज्ञान विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

रेलवे विद्यालयों के छात्रों के चारों विषयों में औसत मध्यमान प्राप्तांक 37.24 तथा प्रामाणिक विचलन 3.71 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के चारों विषयों के औसत मध्यमान प्राप्तांक 21.06 तथा प्रामाणिक विचलन 4.74 है। टी प्राप्तांक 23.79 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि रेलवे विद्यालयों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर परिषदीय विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

तालिका सं0-16

सरस्वती विद्या मंदिरों एवं मिशन विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक प्रदर्शन तालिका

$N_1 = 67, \quad N_2 = 41$

| विषय | सरस्वती विद्या मंदिर | | मिशन विद्यालय | | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | | |
| हिन्दी | 37.38 | 4.52 | 34.25 | 5.10 | 5.40 | $<.01$ |
| गणित | 36.35 | 3.06 | 38.12 | 5.23 | 2.44 | $<.05$ |
| सामान्य विज्ञान | 36.20 | 4.04 | 32.09 | 5.68 | 5.58 | $<.01$ |
| सामाजिक विज्ञान | 34.93 | 4.09 | 29.64 | 5.68 | 7.75 | $<.01$ |
| औसत | 36.21 | 3.92 | 33.53 | 5.42 | 3.83 | $<.01$ |

तालिका सं0-16 में सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों और मिशन विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक प्रदर्शन किया गया है। सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों के हिन्दी विषय में मध्यमान प्राप्तांक 37.38 और प्रामाणिक विचलन 4.52 है, जबकि मिशन विद्यालयों के छात्रों के हिन्दी विषय में मध्यमान प्राप्तांक 34.25 तथा प्रामाणिक विचलन 5.10 है। टी प्राप्तांक 5.40 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। यह स्पष्ट करता है कि सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर मिशन विद्यालयों के छात्रों से हिन्दी विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों के गणित विषय में मध्यमान प्राप्तांक 36.35 तथा प्रामाणिक विचलन 3.06 है, जबकि मिशन विद्यालयों के छात्रों के गणित विषय में मध्यमान प्राप्तांक 38.12 तथा प्रामाणिक विचलन 5.23 है। टी प्राप्तांक 2.44 है, जो .05 स्तर पर सार्थक है। यह स्पष्ट करता है कि मिशन विद्यालयों के छात्र .05 सार्थकता स्तर पर सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों से गणित विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों के सामान्य विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 36.20 तथा प्रामाणिक विचलन 4.04 है, जबकि मिशन विद्यालयों के छात्रों के सामान्य विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 32.09 तथा प्रामाणिक विचलन 5.68 है। टी प्राप्तांक 5.58 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, यह स्पष्ट करता है कि सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर मिशन विद्यालयों के छात्रों से सामान्य विज्ञान विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों के सामाजिक विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 34.93 और प्रामाणिक विचलन 4.09 है, जबकि मिशन विद्यालयों के छात्रों के सामाजिक विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 29.64 है

और प्रामाणिक विचलन 5.68 है। टी प्राप्तांक 7.75 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। यह स्पष्ट करता है कि सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर मिशन विद्यालयों के छात्रों से सामाजिक विज्ञान विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों के चारों विषयों के औसत मध्यमान प्राप्तांक 36.21 तथा प्रामाणिक विचलन 3.92 है, जबकि मिशन विद्यालयों के छात्रों के चारों विषयों के औसत मध्यमान प्राप्तांक 33.53 तथा प्रामाणिक विचलन 5.42 है। टी प्राप्तांक 3.83 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, जो स्पष्ट करता है कि सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर मिशन विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

तालिका सं0-17

सरस्वती विद्या मंदिरों एवं व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन तथा टी प्राप्तांक प्रदर्शन तालिका

$N_1 = 67, \quad N_2 = 80$

| विषय | सरस्वती विद्या मंदिर | | व्यक्तिगत विद्यालय | | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | | |
| हिन्दी | 37.38 | 4.52 | 28.88 | 7.02 | 15.26 | $<.01$ |
| गणित | 36.35 | 3.06 | 29.00 | 6.91 | 10.88 | $<.01$ |
| सामान्य विज्ञान | 36.20 | 4.04 | 26.10 | 4.88 | 44.29 | $<.01$ |
| सामाजिक विज्ञान | 34.93 | 4.09 | 24.63 | 4.59 | 89.56 | $<.01$ |
| औसत | 36.21 | 3.92 | 27.15 | 5.85 | 20.40 | $<.01$ |

तालिका सं0-17 में सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों और व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक प्रदर्शन किया गया है। सरस्वती विद्या मंदिर के छात्रों के हिन्दी विषय में मध्यमान प्राप्तांक 37.38 तथा प्रामाणिक विचलन 4.52 है, जबकि व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों के हिन्दी विषय में मध्यमान प्राप्तांक 28.88 तथा प्रामाणिक विचलन 7.02 है। टी प्राप्तांक 15.26 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों से हिन्दी विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों के गणित विषय में मध्यमान प्राप्तांक 36.35 और प्रामाणिक विचलन 3.06 है, जबकि व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों के गणित विषय में मध्यमान प्राप्तांक 29.00 तथा प्रामाणिक विचलन 6.91 है। टी प्राप्तांक 10.88 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। यह स्पष्ट करता है कि सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों से गणित विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों के सामान्य विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 36.20 और प्रामाणिक विचलन 4.04 है, जबकि व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों के सामान्य विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 26.10 और प्रामाणिक विचलन 4.88 है। टी प्राप्तांक 44.29 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, यह स्पष्ट करता है कि सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों से सामान्य विज्ञान विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों के सामाजिक विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 34.93 तथा प्रामाणिक विचलन 4.09 है, जबकि व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों के सामाजिक विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 24.63 तथा प्रामाणिक विचलन 4.59 है। टी प्राप्तांक 89.56 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि सरस्वती विद्या मंदिरों के

छात्र व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों से .01 सार्थकता स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों के चारों विषयों के औसत मध्यमान प्राप्तांक 36.21 तथा प्रामाणिक विचलन 3.92 है, जबकि व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों के चारों विषयों के औसत मध्यमान प्राप्तांक 27.15 तथा प्रामाणिक विचलन 5.85 है। टी प्राप्तांक 20.40 है जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्र व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

<u>तालिका सं0-18</u>

सरस्वती विद्या मंदिरों तथा परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक प्रदर्शन तालिका

$N_1 = 67$, $N_2 = 140$

| विषय | सरस्वती विद्या मंदिर | | परिषदीय विद्यालय | | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | | |
| हिन्दी | 37.38 | 4.52 | 20.99 | 5.06 | 48.20 | <.01 |
| गणित | 36.35 | 3.06 | 20.75 | 5.92 | 46.84 | <.01 |
| सामान्य विज्ञान | 36.20 | 4.04 | 21.93 | 3.62 | 37.06 | <.01 |
| सामाजिकविज्ञान | 34.93 | 4.09 | 20.56 | 4.35 | 42.64 | <.01 |
| औसत | 36.21 | 3.92 | 21.06 | 4.74 | 50.04 | <.01 |

तालिका सं0-18 में सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों एवं परिषदीय विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक प्रदर्शन किया गया है। सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों के हिन्दी विषय में मध्यमान प्राप्तांक 37.38 तथा प्रामाणिक विचलन 4.52 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के हिन्दी विषय में मध्यमान प्राप्तांक 20.99 तथा प्रामाणिक विचलन 5.06 है। टी प्राप्तांक 48.20 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, जिससे स्पष्ट होता है कि सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर हिन्दी विषय में परिषदीय विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों के गणित विषय में मध्यमान प्राप्तांक 36.35 तथा प्रामाणिक विचलन 3.06 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के गणित विषय में मध्यमान प्राप्तांक 20.75 तथा प्रामाणिक विचलन 5.92 है। टी प्राप्तांक 46.84 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, यह स्पष्ट करता है कि सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर परिषदीय विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों के सामान्य विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 36.20 तथा प्रामाणिक विचलन 4.04 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के सामान्य विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 21.93 तथा प्रामाणिक विचलन 3.62 है। टी प्राप्तांक 37.06 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, इससे यह स्पष्ट होता है कि सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्र सामान्य विज्ञान विषय में .01 सार्थकता स्तर पर परिषदीय विद्यालयों की अपेक्षा श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों के सामाजिक विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 34.93 तथा प्रामाणिक विचलन 4.09 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के सामाजिक विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 20.56 तथा

प्रामाणिक विचलन 4.35 है। टी प्राप्तांक 42.64 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, इससे स्पष्ट होता है कि सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्र सामाजिक विज्ञान विषय में .01 सार्थकता स्तर पर परिषदीय विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों के चारों विषयों के औसत मध्यमान प्राप्तांक 36.21 तथा प्रामाणिक विचलन 3.92 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के चारों विषयों के औसत मध्यमान प्राप्तांक 21.06 तथा प्रामाणिक विचलन 4.76 है। टी प्राप्तांक 50.04 है जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्र परिषदीय विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा .01 सार्थकता स्तर पर श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

तालिका सं0-19

मिशन विद्यालयों एवं व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन तथा टी प्राप्तांक प्रदर्शन तालिका

$N_1 = 41, N_2 = 80$

| विषय | मिशन विद्यालय | | व्यक्तिगत विद्यालय | | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | | |
| हिन्दी | 34.28 | 5.10 | 28.88 | 7.02 | 16.16 | <.01 |
| गणित | 38.12 | 5.23 | 29.00 | 6.91 | 34.54 | <.01 |
| सामान्य विज्ञान | 32.09 | 5.68 | 26.10 | 4.88 | 8.58 | <.01 |
| सामाजिक विज्ञान | 29.64 | 5.68 | 24.63 | 4.59 | 6.93 | <.01 |
| औसत | 33.53 | 5.42 | 27.15 | 5.85 | 11.90 | <.01 |

तालिका सं0-19 में मिशन विद्यालयों के छात्रों तथा व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक प्रदर्शन किया गया है। मिशन विद्यालयों के छात्रों के हिन्दी विषय में मध्यमान प्राप्तांक 34.28 तथा प्रामाणिक विचलन 5.10 है, जबकि व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों के हिन्दी विषय में मध्यमान प्राप्तांक 28.88 तथा प्रामाणिक विचलन 7.02 है। टी प्राप्तांक 16.16 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि मिशन विद्यालयों के छात्र हिन्दी विषय में .01 सार्थक स्तर पर व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

मिशन विद्यालयों के छात्रों के गणित विषय में मध्यमान प्राप्तांक 38.12 तथा प्रामाणिक विचलन 5.23 है, जबकि व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों के गणित विषय में मध्यमान प्राप्तांक 29.00 तथा प्रामाणिक विचलन 6.91 है। टी प्राप्तांक 34.54 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि मिशन विद्यालयों के छात्र गणित विषय में .01 सार्थकता स्तर पर व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

मिशन विद्यालयों के छात्रों के सामान्य विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 32.09 तथा प्रामाणिक विचलन 5.68 है, जबकि व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों के सामान्य विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 26.10 तथा प्रामाणिक विचलन 4.88 है। टी प्राप्तांक 8.58 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि मिशन विद्यालयों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों से सामान्य विज्ञान विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

मिशन विद्यालयों के छात्रों के सामाजिक विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 29.64 तथा प्रामाणिक विचलन 5.68 है, जबकि व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों के सामाजिक विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 24.63 तथा प्रामाणिक विचलन 4.59 है। टी प्राप्तांक 6.93 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

इससे स्पष्ट होता है कि मिशन विद्यालयों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों से सामाजिक विज्ञान विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

मिशन विद्यालयों के छात्रों के चारों विषयों में औसत मध्यमान प्राप्तांक 33.53 तथा प्रामाणिक विचलन 5.42 है, जबकि व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों के चारों विषयों में औसत मध्यमान प्राप्तांक 27.15 तथा प्रामाणिक विचलन 5.85 है। टी प्राप्तांक 11.90 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि मिशन विद्यालयों के छात्रों व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा .01 सार्थकता स्तर पर श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

तालिका सं0-20

मिशन विद्यालयों एवं परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन तथा टी प्राप्तांक प्रदर्शन तालिका

$N_1 = 41$, $N_2 = 140$

| विषय | मिशन विद्यालय | | परिषदीय विद्यालय | | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | | |
| हिन्दी | 34.28 | 5.14 | 20.99 | 5.06 | 19.80 | $<$.01 |
| गणित | 38.12 | 5.23 | 20.75 | 5.92 | 26.93 | $<$.01 |
| सामान्यविज्ञान | 32.09 | 5.68 | 21.93 | 3.62 | 12.21 | $<$.01 |
| सामाजिकविज्ञान | 29.64 | 5.68 | 20.56 | 4.35 | 11.26 | $<$.01 |
| औसत | 33.53 | 5.42 | 21.06 | 4.74 | 16.73 | $<$.01 |

तालिका सं0-20 में मिशन विद्यालयों तथा परिषदीय विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक प्रदर्शन किया गया है। मिशन विद्यालयों के छात्रों के हिन्दी विषय में मध्यमान प्राप्तांक 34.28 तथा प्रामाणिक विचलन 5.14 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के हिन्दी विषय में मध्यमान प्राप्तांक 20.99 तथा प्रामाणिक विचलन 5.06 है। टी प्राप्तांक 19.80 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि मिशन विद्यालयों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर परिषदीय विद्यालयों के छात्रों से हिन्दी विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

मिशन विद्यालयों के छात्रों के गणित विषय में मध्यमान प्राप्तांक 38.12 तथा प्रामाणिक विचलन 5.23 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के गणित विषय में मध्यमान प्राप्तांक 20.75 तथा प्रामाणिक विचलन 5.92 है। टी प्राप्तांक 26.93 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि मिशन विद्यालयों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर परिषदीय विद्यालयों के छात्रों से गणित विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

मिशन विद्यालयों के छात्रों के सामान्य विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 32.09 तथा प्रामाणिक विचलन 5.68 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के सामान्य विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 21.93 तथा प्रामाणिक विचलन 3.62 है। टी प्राप्तांक 12.21 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि मिशन विद्यालयों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर परिषदीय विद्यालयों के छात्रों से सामान्य विज्ञानविषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

मिशन विद्यालयों के छात्रों के सामाजिक विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 29.64 तथा प्रामाणिक विचलन 5.68 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के सामाजिक विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 20.56 तथा प्रामाणिक विचलन 4.35 है। टी प्राप्तांक 11.26 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

जिससे स्पष्ट होता है कि मिशन विद्यालयों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर परिषदीय विद्यालयों के छात्रों से सामाजिक विज्ञान विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

मिशन विद्यालयों के छात्रों के चारों विषयों में औसत मध्यमान प्राप्तांक 33.53 तथा प्रामाणिक विचलन 5.42 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के चारों विषयों में औसत मध्यमान प्राप्तांक 21.06 तथा प्रामाणिक विचलन 4.74 है। टी प्राप्तांक 16.73 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, इससे यह स्पष्ट होता है कि मिशन विद्यालयों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर परिषदीय विद्यालयों के छात्रों से श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

तालिका सं0-21

व्यक्तिगत विद्यालयों तथा परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन तथा टी प्राप्तांक प्रदर्शन तालिका

$N_1 = 80$, $N_2 = 140$

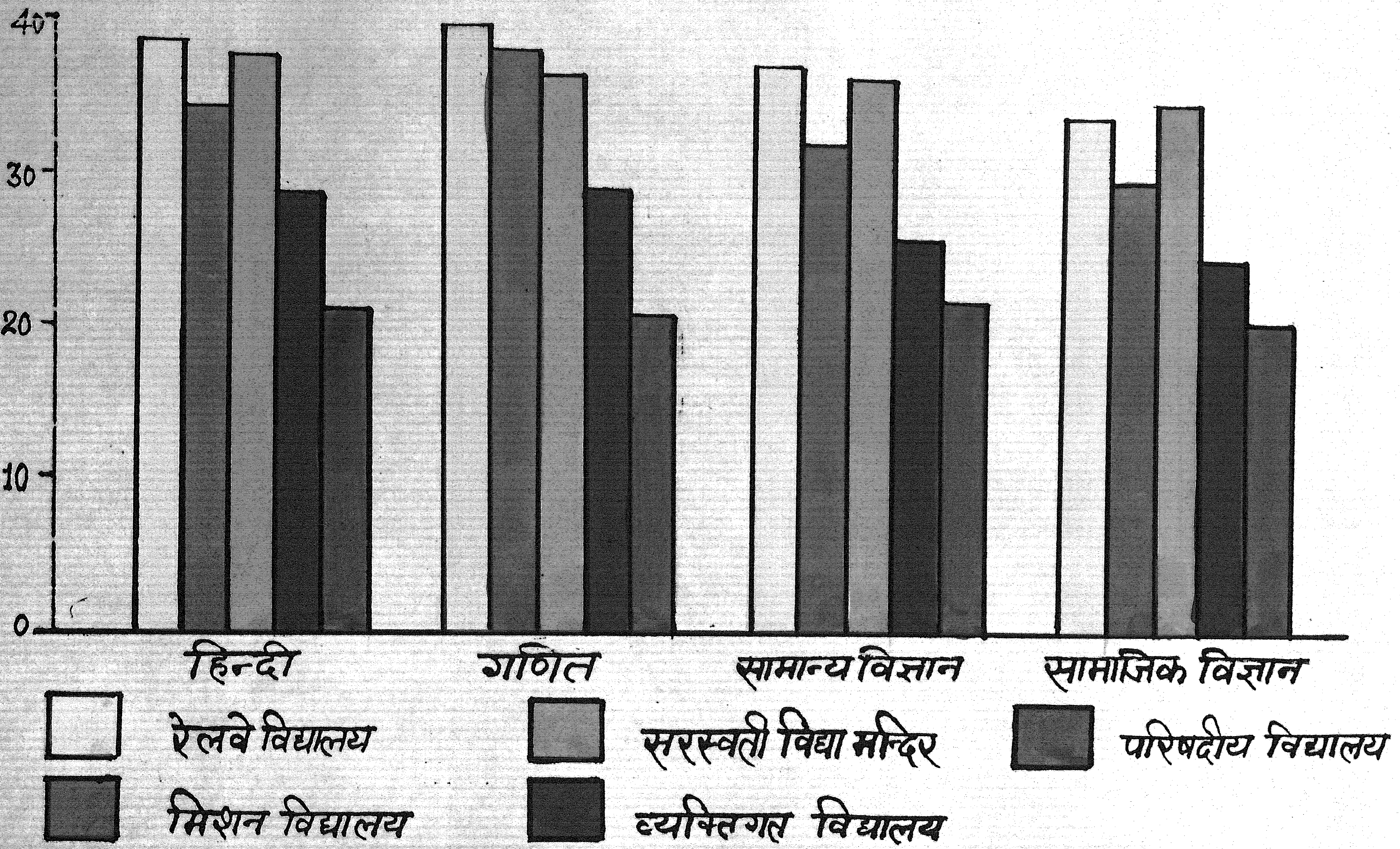
| विषय | व्यक्तिगत विद्यालय | | परिषदीय विद्यालय | | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | | |
| हिन्दी | 28.88 | 7.02 | 20.99 | 5.06 | 11.99 | <.01 |
| गणित | 29.00 | 6.91 | 20.75 | 5.92 | 14.05 | <.01 |
| सामान्य विज्ञान | 26.10 | 4.88 | 21.93 | 3.62 | 9.26 | <.01 |
| सामाजिकविज्ञान | 24.63 | 4.59 | 20.56 | 4.35 | 11.40 | <.01 |
| औसत | 27.15 | 5.85 | 21.06 | 4.74 | 11.80 | <.01 |

तालिका सं0-21 में व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों और परिषदीय विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक प्रदर्शन किया गया है। व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों के हिन्दी विषय में मध्यमान प्राप्तांक 28.88 तथा प्रामाणिक विचलन 7.02 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के हिन्दी विषय में मध्यमान प्राप्तांक 20.99 तथा प्रामाणिक विचलन 5.06 है। टी प्राप्तांक 11.99 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर परिषदीय विद्यालयों के छात्रों से हिन्दी विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों के गणित विषय में मध्यमान प्राप्तांक 29.00 तथा प्रामाणिक विचलन 6.91 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के गणित विषय में मध्यमान प्राप्तांक 20.75 तथा प्रामाणिक विचलन 5.92 है। टी प्राप्तांक 14.05 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर परिषदीय विद्यालयों के छात्रों से गणित विषय में श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों के सामान्य विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 26.10 तथा प्रामाणिक विचलन 4.88 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के सामान्य विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 21.93 तथा प्रामाणिक विचलन 3.62 है। टी प्राप्तांक 9.26 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर सामान्य विज्ञान विषय में परिषदीय विद्यालयों के छात्रों से श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों के सामाजिक विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 24.63 तथा प्रामाणिक विचलन 4.59 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के सामाजिक विज्ञान विषय में मध्यमान प्राप्तांक 20.56 तथा प्रामाणिक


छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि
चित्र संख्या 1
मध्यमान प्राप्तांक
40
30
20
10
0
हिन्दी
गणित
सामान्य विज्ञान
सामाजिक विज्ञान
रेलवे विद्यालय
सरस्वती विद्या मन्दिर
परिषदीय विद्यालय
मिशन विद्यालय
व्यक्तिगत विद्यालय

विचलन 4.35 है। टी प्राप्तांक 11.40 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय में परिषदीय विद्यालयों के छात्रों से श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों के चारों विषयों में औसत मध्यमान प्राप्तांक 27.15 तथा प्रामाणिक विचलन 5.85 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के चारों विषयों में औसत मध्यमान प्राप्तांक 21.06 तथा प्रामाणिक विचलन 4.74 है। टी प्राप्तांक 11.80 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर परिषदीय विद्यालयों के छात्रों से श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

सभी चयनित किये गये विद्यालयों के चयनित समान-सामाजिक, आर्थिक स्तर के छात्रों की हिन्दी, गणित, सामान्य विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान विषयों में प्राप्तांकों के मध्यमान के आधार पर लेखाचित्र तैयार किया गया। चित्र संख्या-1 का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि-

हिन्दी विषय में रेलवे विद्यालयों के छात्रों ने सबसे अधिक अंक प्राप्त किये हैं। दूसरा स्थान सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों का हैं। मिशन विद्यालयों के छात्रों को हिन्दी विषय में शैक्षिक उपलब्धि तीसरे स्थान पर हैं। व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्र चतुर्थ एवं परिषदीय विद्यालयोंके छात्र अन्तिम स्थान पर हैं।

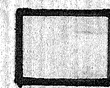
सामान्य विज्ञान विषय में मिशन विद्यालयों के छात्रों का सर्वोच्च स्थान है। दूसरे स्थान पर रेलवे विद्यालयों के छात्र तथा तीसरे स्थान पर सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्र हैं। चौथे एवं पाँचवें स्थान पर क्रमशः व्यक्तिगत एवं परिषदीय विद्यालयों के छात्र हैं।

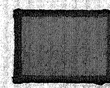
गणित विषय में भी रेलवे विद्यालयों के ही छात्रों को प्रथम स्थान

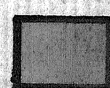
# छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि

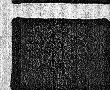
चित्र संख्या 2

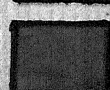




प्राप्त हुआ है। दूसरे स्थान पर सरस्वती विद्या मंदिर के छात्र, तीसरे स्थान पर मिशन विद्यालय के छात्र रहे हैं। चौथे एवं पाँचवें स्थान पर क्रमशः व्यक्तिगत एवं परिषदीय विद्यालयों के छात्र हैं।

सामाजिक विज्ञान विषय में सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों को सर्वोच्च स्थान प्राप्त हुआ है। द्वितीय स्थान रेलवे एवं तृतीय स्थान मिशन विद्यालयों के छात्रों को प्राप्त हुआ है। अन्य विषयों की भाँति ही व्यक्तिगत एवं परिषदीय विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर क्रमशः चतुर्थ एवं पंचम स्थान प्राप्त हुआ है।

सभी पाँचों प्रकार के विद्यालयों के छात्रों की चारों विषयों में प्राप्तांकों के औसत मध्यमान के द्वारा लेखाचित्र तैयार किया गया। चित्र संख्या-2 पर दृष्टि डालने से स्पष्ट होता है कि-

रेलवे विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि सबसे अच्छी है। पाँचों प्रकार के विद्यालयों में प्रथम स्थान रेलवे विद्यालयों के छात्रों का है। सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्र द्वितीय स्थान पर है। मिशन विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर तीसरा स्थान प्राप्त हुआ है। व्यक्तिगत एवं परिषदीय विद्यालयों के छात्र शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर क्रमशः चौथे एवं पाँचवें स्थान पर हैं।

# षष्टम् अध्याय

1. अनुशासनात्मक व्यवहार : प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

2. प्रशासनिक व्यवस्था : प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधकार्य का उद्देश्य विभिन्न प्रबंधतंत्रों द्वारा संचालित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के अनुशासनात्मक व्यवहारों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उन विद्यालयों के अध्यापकों द्वारा उनके मत प्राप्त किये गये हैं। उन मतों से मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक ज्ञात किये गये हैं। इनको तालिकाबद्ध करके उनकी तालिकायें, उनका विश्लेषण एवं उनकी तुलना को निम्नरूप में प्रस्तुत किया गया है:-

तालिका सं0-22

रेलवे विद्यालय तथा सरस्वती विद्या मंदिरों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहार के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी मान की प्रदर्शन तालिका

| विद्यालय का नाम | अध्यापकों की संख्या | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|
| रेलवे विद्यालय | 5 | 38.20 | 2.40 | 0.13 | N.S. |
| सरस्वती विद्या मंदिर | 22 | 38.35 | 1.95 | | |

तालिका सं0-22 का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि रेलवे विद्यालय के छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों से सम्बन्धित रेलवे अध्यापकों के मतों का मध्यमान प्राप्तांक 38.20 तथा प्रामाणिक विचलन 2.40 प्राप्त हुआ है, जबकि सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों का मध्यमान प्राप्तांक 38.35 तथा प्रामाणिक विचलन 1.95 प्राप्त हुआ है। टी प्राप्तांक 0.13 है, जो किसी भी सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। इससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों विद्यालयों के छात्र अध्यापकों के मतानुसार अनुशासनात्मक व्यवहार के सम्बन्ध में कोई सार्थक

अन्तर नहीं रखते हैं।

<u>तालिका सं0-23</u>

रेलवे विद्यालय तथा मिशन विद्यालयों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन तथा टी मान की प्रदर्शन तालिका

| विद्यालय का नाम | अध्यापकों की संख्या | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|
| रेलवे विद्यालय | 5 | 38.20 | 2.40 | 3.38 | $< .01$ |
| मिशन विद्यालय | 13 | 35.07 | 2.94 | | |

तालिका सं0-23 का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि रेलवे विद्यालयों के छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक 38.20 तथा प्रामाणिक विचलन 2.40 है, जबकि मिशन विद्यालयों के छात्रों का अनुशासनात्मक व्यवहारों के मतों से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक 35.07 तथा प्रामाणिक विचलन 2.94 है। टी प्राप्तांक 3.38 जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, जिससे स्पष्ट होता है कि रेलवे विद्यालयों का अनुशासनात्मक व्यवहार .01 सार्थकता स्तर पर मिशन विद्यालयों के छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहार से श्रेष्ठ हैं।

तालिका सं0-24

रेलवे विद्यालय तथा व्यक्तिगत विद्यालयों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों के मत से संबंधित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक की प्रदर्शन तालिका

| विद्यालय का नाम | अध्यापकों की संख्या | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|
| रेलवे विद्यालय | 5 | 38.20 | 2.40 | 2.04 | <.05 |
| व्यक्तिगत विद्यालय | 30 | 34.10 | 8.34 | | |

तालिका सं0-24 के द्वारा यह स्पष्ट होता है कि रेलवे विद्यालय के अध्यापकों का अनुशासनात्मक व्यवहारों के मत से सम्बन्धित 38.20 मध्यमान प्राप्तांक तथा 2.40 प्रामाणिक विचलन प्राप्त हुआ है, जबकि व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों का अनुशासनात्मक व्यवहारों के मतों से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक 34.10 तथा प्रामाणिक विचलन 8.34 है। टी प्राप्तांक 2.04 है, जो .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, जिसका मतलब है कि रेलवे विद्यालय के छात्र .05 सार्थकता स्तर पर व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों से अनुशासनात्मक व्यवहार में श्रेष्ठ हैं।

तालिका सं0-25

रेलवे विद्यालय एवं परिषदीय विद्यालयों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी मान प्रदर्शन तालिका

| विद्यालय का नाम | अध्यापकों की संख्या | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|
| रेलवे विद्यालय | 5 | 38.30 | 2.40 | 6.74 | <.01 |
| परिषदीय विद्यालय | 51 | 33.36 | 5.60 | | |

तालिका सं0-25 का अवलोकन करने से पता चलता है कि रेलवे विद्यालय के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहार के मत से सम्बन्धित 38.30 मध्यमान प्राप्तांक तथा 2.40 प्रामाणिक विचलन है, जबकि परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के मध्यमान प्राप्तांक 33.36 तथा प्रामाणिक विचलन 5.60 है। टी प्राप्तांक 6.74 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है अर्थात् रेलवे विद्यालय के छात्र परिषदीय विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा अनुशासनात्मक व्यवहार में .01 सार्थकता स्तर पर अच्छा है।

तालिका सं0-26

सरस्वती विद्या मंदिरों एवं मिशन विद्यालयों के
अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों
के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक
विचलन एवं टी मान की प्रदर्शन तालिका

| विद्यालय का नाम | अध्यापकों की संख्या | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|
| सरस्वती विद्या मंदिर | 22 | 38.35 | 1.95 | 4.68 | <.01 |
| मिशन विद्यालय | 13 | 35.07 | 2.94 | | |

तालिका सं0-26 से स्पष्ट होता है कि सरस्वती विद्या मंदिरों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक 38.35 तथा प्रामाणिक विचलन 1.95 है, जबकि मिशन विद्यालयों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक 35.07 तथा प्रामाणिक विचलन 2.94 है। टी प्राप्तांक 4.68 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है अर्थात् सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्र मिशन विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा अनुशासनात्मक व्यवहार में श्रेष्ठ हैं।

तालिका सं0-27

सरस्वती विद्या मंदिरों तथा व्यक्तिगत विद्यालयों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी मान की प्रदर्शन तालिका

| विद्यालय का नाम | अध्यापकों की संख्या | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|
| सरस्वती विद्या मंदिर | 22 | 38.35 | 1.95 | 2.90 | <.01 |
| व्यक्तिगत विद्यालय | 30 | 34.10 | 8.34 | | |

तालिका सं0-27 से स्पष्ट है कि सरस्वती विद्या मंदिरों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहार के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक 38.35 तथा प्रामाणिक विचलन 1.95 है, जबकि व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों के मध्यमान प्राप्तांक 34.10 तथा प्रामाणिक विचलन 8.34 है। टी प्राप्तांक 2.90 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है अर्थात् यह स्पष्ट करता है कि सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों का .01 सार्थकता स्तर पर अनुशासनात्मक व्यवहार व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों की तुलना में अच्छा हैं।

तालिका सं0-28

सरस्वती विद्या मंदिरों एवं परिषदीय विद्यालयों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक प्रदर्शन तालिका

| विद्यालय का नाम | अध्यापकों की संख्या | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|
| सरस्वती विद्या मंदिर | 22 | 38.35 | 1.95 | 7.50 | $<.01$ |
| परिषदीय विद्यालय | 51 | 33.36 | 5.60 | | |

तालिका सं0-28 को देखने से ज्ञात होता है कि सरस्वती विद्या मंदिरों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहार के मत सम्बन्धी मध्यमान प्राप्तांक 38.35 तथा प्रामाणिक विचलन 1.95 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों का मध्यमान प्राप्तांक 33.36 तथा प्रामाणिक विचलन 5.60 है। टी प्राप्तांक 7.50 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। यह स्पष्ट करता है कि सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर परिषदीय विद्यालयों के छात्रों से अनुशासनात्मक व्यवहारों में आगे हैं।

तालिका सं0-29

मिशन विद्यालयों एवं व्यक्तिगत विद्यालयों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन तथा टी प्राप्तांक की प्रदर्शन तालिका

| विद्यालय का नाम | अध्यापकों की संख्या | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|
| मिशन विद्यालय | 13 | 35.07 | 2.94 | 0.76 | N.S. |
| व्यक्तिगत विद्यालय | 30 | 34.10 | 8.34 | | |

तालिका सं0-29 से स्पष्ट होता है कि मिशन विद्यालयों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक 35.07 तथा प्रामाणिक विचलन 2.94 है, जबकि व्यक्तिगत विद्यालयों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक 34.10 तथा प्रामाणिक विचलन 8.34 है। टी प्राप्तांक 0.76 है, जो किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है, जिससे स्पष्ट होता है कि दोनों विद्यालयों के छात्र अनुशासनात्मक व्यवहार में समान हैं।

तालिका सं0-30

मिशन विद्यालयों एवं परिषदीय विद्यालयों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन तथा टी प्राप्तांक प्रदर्शन तालिका

| विद्यालय का नाम | अध्यापकों की संख्या | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|
| मिशन विद्यालय | 13 | 35.07 | 2.94 | 7.67 | <.01 |
| परिषदीय विद्यालय | 51 | 33.36 | 5.60 | | |

तालिका सं0-30 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि मिशन विद्यालयों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक 35.07 तथा प्रामाणिक विचलन 2.94 है। जबकि परिषदीय विद्यालयों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक 33.36 तथा प्रामाणिक विचलन 5.60 है। टी प्राप्तांक 7.67 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि मिशन विद्यालयों के छात्र परिषदीय विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा अनुशासनात्मक व्यवहार में श्रेष्ठ हैं।

तालिका सं0-31

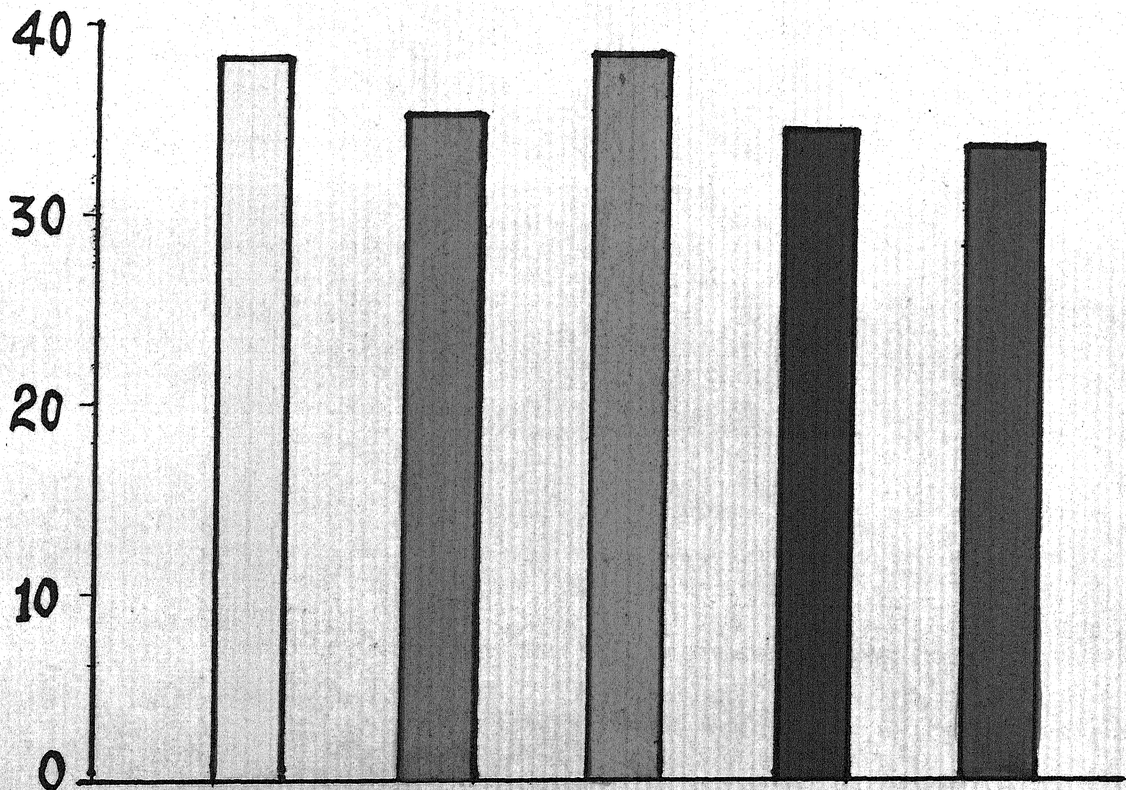
व्यक्तिगत विद्यालयों एवं परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन तथा टी प्राप्तांक प्रदर्शन तालिका

| विद्यालय का नाम | अध्यापकों की संख्या | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|
| व्यक्तिगत विद्यालय | 30 | 34.10 | 8.34 | 0.57 | N.S. |
| परिषदीय विद्यालय | 51 | 33.36 | 5.60 | | |

तालिका सं0-31 से स्पष्ट है कि व्यक्तिगत विद्यालयों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक 34.10 तथा प्रामाणिक विचलन 8.34 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के मध्यमान प्राप्तांक 33.36 तथा प्रामाणिक विचलन 5.60 है। टी प्राप्तांक 0.57 है, यह किसी भी सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है, जो स्पष्ट करता है कि व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

# छात्रों का अनुशासनात्मक व्यवहार

चित्र संख्या 3



समस्त पाँचों प्रकार के चयनित विद्यालयों के अध्यापकों के मतानुसार उनके विद्यालयों के छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहार से सम्बन्धित मतों के मध्यमान प्राप्तांकों के आधार पर लेखाचित्र संख्या 3 तैयार किया गया। इसका अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि सरस्वती विद्या मंदिरों एवं रेलवे विद्यालय के छात्रों का अनुशासनात्मक व्यवहार सबसे अच्छा है। रेलवे विद्यालय तथा सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

मिशन विद्यालयों के छात्रों का अनुशासनात्मक व्यवहार दूसरे स्थान पर हैं। व्यक्तिगत एवं परिषदीय विद्यालयों के छात्रों का अनुशासनात्मक व्यवहार तीसरे तथा चौथे स्थान पर है। व्यक्तिगत एवं परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

विद्यालयों की दृष्टि से अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि रेलवे तथा सरस्वती विद्या मंदिर अनुशासनात्मक व्यवहार की दृष्टि से क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय, मिशन विद्यालय तृतीय, व्यक्तिगत विद्यालय चतुर्थ तथा परिषदीय विद्यालय पंचम स्थान पर हैं।

शोधकार्य का उद्देश्य विभिन्न प्रबंधतंत्रों द्वारा संचालित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उन विद्यालयों के अध्यापकों द्वारा विद्यालयों को प्रशासन व्यवस्था से सम्बन्धित मत प्राप्त किये गये। उन मतों से उनके मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक ज्ञात किये गये। इनको तालिकाबद्ध करके उनकी तालिकायें, उनका विश्लेषण एवं उनकी तुलना को निम्न रूप में प्रस्तुत किया गया है -

## तालिका सं0-32

रेलवे विधालय तथा सरस्वती विद्या मंदिरों की विधालयी प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव के विषय में अध्यापकों की राय से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक की प्रदर्शन तालिका

| विधालय का नाम | अध्यापकों की संख्या | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|
| रेलवे विधालय | 5 | 17.00 | 1.00 | 2.56 | $< .05$ |
| सरस्वती विद्या मंदिर | 22 | 15.19 | 2.80 | | |

तालिका सं0-32 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि रेलवे विधालय की प्रशासन व्यवस्था एवं उसके रखरखाव से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक 17.00 तथा प्रामाणिक विचलन 1.00 है, जबकि सरस्वती विद्या मंदिरों का मध्यमान प्राप्तांक 15.19 तथा प्रामाणिक विचलन 2.80 है। टी प्राप्तांक 2.56 है, जो .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। यह स्पष्ट करता है कि रेलवे विधालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव सरस्वती विद्या मंदिरों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव से .05 सार्थकता स्तर पर अधिक अच्छी है।

तालिका सं0-33

रेलवे विद्यालय तथा मिशन विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव के विषय में अध्यापकों की राय से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक की प्रदर्शन तालिका

| विद्यालय का नाम | अध्यापकों की संख्या | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|
| रेलवे विद्यालय | 5 | 17.00 | 1.00 | .01 | N.S. |
| मिशन विद्यालय | 13 | 17.03 | 3.32 | | |

तालिका सं0-33 का अध्ययन करने से पता चलता है कि रेलवे विद्यालय में प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक 17.00 तथा प्रामाणिक विचलन 1.00 है, जबकि मिशन विद्यालयों का मध्यमान प्राप्तांक 17.03 तथा प्रामाणिक विचलन 3.32 तथा टी प्राप्तांक मान .01 है, जो किसी भी सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। इससे यह स्पष्ट होता है कि रेलवे विद्यालय तथा मिशन विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव से सम्बन्धित कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं। दोनों विद्यालयों की व्यवस्था तथा साधन एक समान है।

तालिका सं0-34

रेलवे विद्यालय तथा व्यक्तिगत विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव के विषय में अध्यापकों की राय से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी मान प्रदर्शन तालिका

| विद्यालय का नाम | अध्यापकों की संख्या | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|
| रेलवे विद्यालय | 5 | 17.00 | 1.00 | 10.37 | <.01 |
| व्यक्तिगत विद्यालय | 30 | 12.00 | 1.00 | | |

तालिका सं0-34 पर दृष्टि डालने से यह स्पष्ट होता है कि रेलवे विद्यामय की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक 17.00 तथा प्रामाणिक विचलन 1.00 एवं व्यक्तिगत विद्यालयों का मध्यमान प्राप्तांक 12.00 एवं प्रामाणिक विचलन 1.00 है। टी प्राप्तांक 10.37 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। यह स्पष्ट करता है कि रेलवे विद्यालय की प्रशासन व्यवस्था .01 सार्थकता स्तर पर व्यक्तिगत विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था से श्रेष्ठ हैं।

तालिका सं0-35

रेलवे विद्यालय तथा परिषदीय विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन तथा टी प्राप्तांक की प्रदर्शन तालिका

| विद्यालय का नाम | अध्यापकों की संख्या | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|
| रेलवे विद्यालय | 5 | 17.00 | 1.00 | 19.56 | <.01 |
| परिषदीय विद्यालय | 51 | 8.35 | 3.38 | | |

तालिका सं0-35 को देखने से स्पष्ट होता है कि रेलवे विद्यालय की प्रशासन व्यवस्था से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक 17.00 तथा प्रामाणिक विचलन 1.00 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक 8.35 तथा प्रामाणिक विचलन 3.38 है। टी प्राप्तांक 19.56 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। यह स्पष्ट करता है कि रेलवे विद्यालय की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव .01 सार्थकता स्तर पर परिषदीय विद्यालयों की प्रशासनिक व्यवस्था एवं रखरखाव श्रेष्ठ हैं।

तालिका सं0-36

सरस्वती विद्या मंदिरों एवं मिशन विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं उनके रखरखाव के विषय में अध्यापकों की राय से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन तथा टी प्राप्तांक की प्रदर्शन तालिका

| विद्यालय का नाम | अध्यापकों की संख्या | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|
| सरस्वती विद्या मंदिर | 22 | 15.19 | 2.80 | 2.66 | <.01 |
| मिशन विद्यालय | 13 | 17.03 | 3.32 | | |

तालिका सं0-36 से यह पता चलता है कि सरस्वती विद्या मंदिर की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक 15.19 तथा प्रामाणिक विचलन 2.80 है, जबकि मिशन विद्यालय का मध्यमान प्राप्तांक 17.03 तथा प्रामाणिक विचलन 3.32 है। टी प्राप्तांक 2.66 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। यह स्पष्ट करता है कि मिशन विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव सरस्वती विद्या मंदिरों की तुलना में श्रेष्ठता रखते हैं।

तालिका सं0-37

सरस्वती विद्या मंदिरों एवं व्यक्तिगत विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं उनके रखरखाव के विषय में अध्यापकों की राय से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक प्रदर्शन तालिका

| विद्यालय का नाम | अध्यापकों की संख्या | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|
| सरस्वती विद्या मंदिर | 20 | 15.19 | 2.80 | | |
| | | | | 5.60 | $<.01$ |
| व्यक्तिगत विद्यालय | 30 | 12.00 | 1.00 | | |

उपर्युक्त तालिका सं0-37 से स्पष्ट है कि सरस्वती विद्या मंदिरों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक 15.19 तथा प्रामाणिक विचलन 2.80 है, जबकि व्यक्तिगत विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक 12.00 तथा प्रामाणिक विचलन 1.00 है। टी प्राप्तांक 5.60 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सरस्वती विद्या मंदिरों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव में .01 सार्थकता स्तर पर व्यक्तिगत विद्यालयों की अपेक्षा श्रेष्ठ हैं।

तालिका सं0-38

सरस्वती विद्या मंदिरों एवं परिषदीय विद्यालयों की
प्रशासन व्यवस्था एवं उनके रखरखाव के विषय में
अध्यापकों की राय से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक
प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक की प्रदर्शन
तालिका

| विद्यालय का नाम | अध्यापकों की संख्या | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|
| सरस्वती विद्या मंदिर | 22 | 15.19 | 2.80 | 18.83 | <.01 |
| परिषदीय विद्यालय | 51 | 8.35 | 3.38 | | |

तालिका सं0-38 पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि सरस्वती विद्या मंदिरों की प्रशासन व्यवस्था एवं उनके रखरखाव से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक 15.19 तथा प्रामाणिक विचलन 2.80 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक 8.35 तथा प्रामाणिक विचलन 3.38 है। टी प्राप्तांक 18.83 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। जो स्पष्ट करता है कि सरस्वती विद्या मंदिरों की प्रशासन व्यवस्था परिषदीय विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था से .01 सार्थकता स्तर पर उत्तम हैं।

तालिका सं0-39

मिशन विद्यालयों एवं व्यक्तिगत विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव के विषय में अध्यापकों की राय से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक को प्रदर्शन तालिका

| विद्यालय का नाम | अध्यापकों की संख्या | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|
| मिशन विद्यालय | 13 | 17.03 | 3.32 | 5.56 | <.01 |
| व्यक्तिगत विद्यालय | 30 | 12.00 | 1.00 | | |

तालिका सं0-39 से स्पष्ट होता है कि मिशन विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं उनके रखरखाव से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक 17.03 तथा प्रामाणिक विचलन 3.32 है, जबकि व्यक्तिगत विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक 12.00 तथा प्रामाणिक विचलन 1.00 है। टी प्राप्तांक का मान 5.56 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि मिशन विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव व्यक्तिगत विद्यालयों से श्रेष्ठ हैं।

तालिका सं0-40

मिशन विद्यालयों एवं परिषदीय विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव के विषय में अध्यापकों की राय से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक को प्रदर्शन तालिका

| विद्यालय का नाम | अध्यापकों की संख्या | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|
| मिशन विद्यालय | 13 | 17.03 | 3.32 | 10.99 | $< .01$ |
| परिषदीय विद्यालय | 51 | 8.35 | 3.38 | | |

तालिका सं0-40 के अवलोकन से पता चलता है कि मिशन विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक 17.03 तथा प्रामाणिक विचलन 3.32 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों के मध्यमान प्राप्तांक 8.35 तथा प्रामाणिक विचलन 3.38 है। टी प्राप्तांक 10.99 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, जिसका तात्पर्य है कि मिशन विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव .01 सार्थकता स्तर पर परिषदीय विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था से श्रेष्ठ हैं।

तालिका सं0-41

व्यक्तिगत विद्यालयों एवं परिषदीय विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव के विषय में अध्यापकों की राय से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन तथा टी प्राप्तांक की प्रदर्शन तालिका

| विद्यालय का नाम | अध्यापकों की संख्या | मध्यमान प्राप्तांक | प्रामाणिक विचलन | टी | पी |
|---|---|---|---|---|---|
| व्यक्तिगत विद्यालय | 30 | 12.00 | 1.00 | 8.34 | $<.01$ |
| परिषदीय विद्यालय | 51 | 8.35 | 3.38 | | |

तालिका सं0-41 का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तिगत विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं उनके रखरखाव से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक 12.00 तथा प्रामाणिक विचलन 1.00 है, जबकि परिषदीय विद्यालयों का मध्यमान प्राप्तांक 8.35 तथा प्रामाणिक विचलन 3.38 है। टी प्राप्तांक 8.34 है, जो .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अर्थात् व्यक्तिगत विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं उनका रखरखाव .01 सार्थकता स्तर पर परिषदीय विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं उनके रखरखाव की अपेक्षा श्रेष्ठ हैं।

# विद्यालयों की प्रशासनिक व्यवस्था एवं रख-रखाव

चित्र संख्या 4

मध्यमान प्राप्तांक

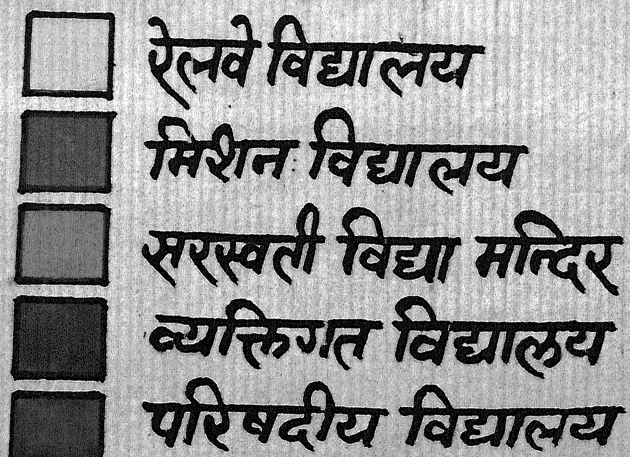
20

15

10

5

0



समस्त चयनित पाँचों प्रकार के विद्यालयों के अध्यापकों के मतानुसार उनके विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव से सम्बन्धित अध्यापकों के मतों से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांकों के आधार पर लेखाचित्र तैयार किया गया। इस चित्र संख्या 4 के अवलोकन से स्पष्ट है कि विद्यालय की प्रशासन व्यवस्था एवं उसके रखरखाव के मामले में मिशन विद्यालयों का प्रथम स्थान है। दूसरा स्थान रेलवे विद्यालय का है। रेलवे विद्यालय तथा मिशन विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सरस्वती विद्या मंदिर प्रशासनिक व्यवस्था एवं रखरखाव की दृष्टि से तीसरा स्थान रखते हैं। व्यक्तिगत विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था चौथे स्थान पर तथा परिषदीय विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं विद्यालयों का रखरखाव पाँचवें तथा अन्तिम स्थान पर है।

# सप्तम् अध्याय

1. निष्कर्षों का तुलनात्मक अध्ययन

2. परिकल्पनाओं का सत्यापन

पंचम अध्याय में शैक्षिक उपलब्धियों से सम्बन्धित प्रदत्तों का वितरण एवं विश्लेषण कियागया है। मध्यमान एवं प्रामाणिक विचलन के आधार पर टी मान की गणना करके विभिन्न विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना की गयी है, जिनका वर्णन तालिका संख्या-12 से तालिका संख्या-21 तक है। परिणामों की व्याख्या के आधार पर तुलनात्मक विवेचन करने पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गये :-

1. रेलवे विद्यालयों के छात्रों की औसत शैक्षिक उपलब्धि सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों की औसत शैक्षिक उपलब्धि की तुलना में .01 सार्थकता स्तर पर अधिक सार्थक है। रेलवे विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियां मिशन विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों की तुलना में अधिक अच्छी हैं।

2. हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान विषयों में रेलवे विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि .05 सार्थकता स्तर पर सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना में सार्थक है। अर्थात् रेलवे विद्यालय के छात्र हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान में सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों से श्रेष्ठ हैं।

3. सामान्य विज्ञान विषय में रेलवे विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि किसी भी स्तर पर सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि से किसी भी सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं हैं। अतः रेलवे तथा सरस्वती विद्या मंदिर दोनों के छात्र सामान्य विज्ञान विषय में समान योग्यता रखते हैं।

4. गणित विषय में रेलवे विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि .01 सार्थकता स्तर पर सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों की तुलना में

सार्थक है। अर्थात् रेलवे विद्यालय के छात्र गणित विषय में सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों की तुलना में श्रेष्ठ हैं।

5. सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों की औसत शैक्षिक उपलब्धि मिशन विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना में .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। सरस्वती विद्या मंदिरों में पढ़ने वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियाँ मिशन विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की तुलना में अधिक अच्छी है।

6. हिन्दी, सामान्य विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान विषयों में सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि .01 सार्थकता स्तर पर मिशन विद्यालयों की तुलना में सार्थक है अर्थात् सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्र हिन्दी, सामान्य विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान विषय में मिशन विद्यालयों की तुलना में श्रेष्ठ हैं।

7. मिशन विद्यालयों के छात्र सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों की तुलना में गणित विषय में .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, जो यह स्पष्ट करता है कि मिशन विद्यालयों के छात्र सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों से गणित विषय में उत्तम शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

8. रेलवे विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियाँ मिशन, परिषदीय एवं व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों से .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। रेलवे विद्यालयों के छात्र शैक्षिक उपलब्धि में मिशन विद्यालयों, परिषदीय विद्यालयों एवं व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि से श्रेष्ठ हैं।

9. सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्र औसत स्तर पर विभिन्न विषयों के

स्तर पर व्यक्तिगत विद्यालयों एवं परिषदीय विद्यालयों के छात्रों से .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्र व्यक्तिगत एवं परिषदीय विद्यालयों के छात्रों से अच्छी शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

10. मिशन विद्यालयों के छात्र औसत स्तर पर एवं विभिन्न विषयों के स्तर पर .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है अर्थात् मिशन विद्यालयों के छात्र व्यक्तिगत एवं परिषदीय विद्यालयों के छात्रों से अधिक शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

11. व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्र औसत स्तर पर एवं विभिन्न विषयों के स्तर पर परिषदीय विद्यालयों के छात्रों से .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है अर्थात् व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्र विभिन्न विषयों में तथा औसत रूप में भी परिषदीय विद्यालयों के छात्रों से श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि रखते हैं।

प्रस्तुत तालिका संख्या 22 से 31 के द्वारा षष्टम् अध्याय में सभी पाँचों प्रकार के विद्यालयों के अध्यापकों के अनुशासनात्मक व्यवहार के मतों का विवेचन करने पर निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होते हैं :-

1. रेलवे विद्यालयों के छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहार के सम्बन्ध में मत सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों से सम्बन्धित मतों की तुलना में किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के छात्रों का अनुशासनात्मक व्यवहार एक समान है, उनमें कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. रेलवे विद्यालयों के छात्रों का अनुशासनात्मक व्यवहार से सम्बन्धित मत मिशन विद्यालयों की तुलना में .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, जो स्पष्ट करता है कि रेलवे विद्यालयों का अनुशासनात्मक व्यवहार मिशन विद्यालयों के छात्रों की तुलना में .01 सार्थकता स्तर पर अच्छा है।

3. रेलवे विद्यालयों के छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहार से सम्बन्धित मत व्यक्तिगत विद्यालयों की तुलना में .05 सार्थकता स्तर पर व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों की तुलना में अनुशासनात्मक व्यवहार में श्रेष्ठ हैं।

4. रेलवे विद्यालयों के अध्यापकों के छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों से सम्बन्धित मत परिषदीय विद्यालयों की तुलना में .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है अर्थात् रेलवे विद्यालयों के छात्र .01 सार्थकता स्तर पर अनुशासनात्मक व्यवहारों में परिषदीय विद्यालयों से श्रेष्ठ हैं।

5. सरस्वती विद्या मंदिरों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहार से सम्बन्धित मत मिशन विद्यालयों की तुलना में .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है अर्थात् सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्र मिशन विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा अनुशासनात्मक व्यवहार में अच्छे हैं।

6. सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों का अनुशासनात्मक व्यवहारों से सम्बन्धित मत व्यक्तिगत विद्यालयों की तुलना में .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है अर्थात् सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्र व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों से अनुशासनात्मक व्यवहारों में श्रेष्ठ होते हैं।

7. सरस्वती विद्या मंदिरों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों के मतों के सम्बन्ध में परिषदीय विद्यालयों से .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, जिससे स्पष्ट होता है कि सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों का अनुशासनात्मक व्यवहार परिषदीय विद्यालयों के छात्रों की तुलना में .01 सार्थकता स्तर पर अच्छा है।

8. मिशन विद्यालयों के छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों के मत व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों के व्यवहारों के मत किसी भी सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों विद्यालयों के छात्रों का अनुशासनात्मक व्यवहार एक समान है, उनके व्यवहारों में कोई अन्तर नहीं है।

9. मिशन विद्यालयों के छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों से सम्बन्धित मत परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों से सम्बन्धित मतों की तुलना में .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि मिशन विद्यालयों के छात्रों का अनुशासनात्मक व्यवहार परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहार से .01 सार्थकता स्तर पर अच्छा है।

10. व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहार के सम्बन्ध में अध्यापकों के मत परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों की तुलना में किसी भी सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है, जिससे स्पष्ट होता है कि व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों एवं परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों में कोई अन्तर नहीं हैं।

षष्टम् अध्याय में वर्णित विभिन्न विद्यालयों के अध्यापकों के विद्यालयी प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव से सम्बन्धित प्राप्त मतों का विवेचन करने पर निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुये :-

1. रेलवे विद्यालयों में रखरखाव एवं प्रशासन व्यवस्था से सम्बन्धित अध्यापकों के मत सरस्वती विद्या मंदिरों से .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, जो स्पष्ट करता है कि रेलवे विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव .05 सार्थकता स्तर पर सरस्वती विद्या मंदिरों से श्रेष्ठ है।

2. रेलवे विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव से सम्बन्धित वहाँ के अध्यापकों द्वारा प्राप्त मत मिशन विद्यालयों से किसी भी सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है, जिसका तात्पर्य है कि रेलवे विद्यालय की प्रशासन व्यवस्था मिशन विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था की तरह ही है।

3. रेलवे विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था से सम्बन्धित अध्यापकों से प्राप्त मत व्यक्तिगत विद्यालयों से प्राप्त मतों से .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, जो यह स्पष्ट करता है कि रेलवे विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था व्यक्तिगत विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था से .01 सार्थकता स्तर पर श्रेष्ठ हैं।

4. रेलवे विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था से सम्बन्धित प्राप्त मत परिषदीय विद्यालयों से .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः रेलवे विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था .01 सार्थकता स्तर पर परिषदीय विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था से अच्छी है।

5. सरस्वती विद्या मंदिरों की प्रशासन व्यवस्था से सम्बन्धित प्राप्त अध्यापकों के मत मिशन विद्यालयों के अध्यापकों के प्राप्त मतों से .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, जिससे स्पष्ट है कि मिशन विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था .01 सार्थकता स्तर पर सरस्वती विद्या मंदिरों की प्रशासन व्यवस्था से श्रेष्ठ है।

6. सरस्वती विद्या मंदिरों के अध्यापकों से प्राप्त प्रशासनिक व्यवस्था से सम्बन्धित मत व्यक्तिगत विद्यालयों के अध्यापकों से प्राप्त मतों से .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है अर्थात् सरस्वती विद्या मंदिरों की प्रशासन व्यवस्था .01 सार्थकता स्तर पर व्यक्तिगत विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था से श्रेष्ठ है।

7. सरस्वती विद्या मंदिरों के अध्यापकों से प्राप्त प्रशासनिक व्यवस्था से सम्बन्धित मत परिषदीय विद्यालयों के अध्यापकों से प्राप्त मतों से .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, जो स्पष्ट करता है कि सरस्वती विद्या मंदिरों की प्रशासन व्यवस्था परिषदीय विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था से .01 सार्थकता स्तर पर श्रेष्ठ है।

8. मिशन विद्यालयों के अध्यापकों से प्राप्त प्रशासनिक व्यवस्था से सम्बन्धित मत व्यक्तिगत विद्यालयों के अध्यापकों से प्राप्त मतों से .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, इससे स्पष्ट है कि मिशन विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था .01 सार्थकता स्तर पर व्यक्तिगत विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था से श्रेष्ठ हैं।

9. मिशन विद्यालयों के अध्यापकों से प्राप्त प्रशासनिक व्यवस्था से

सम्बन्धित मत .01 सार्थकता स्तर पर परिषदीय विद्यालयों के अध्यापकों से प्राप्त मतों से सार्थक है, जो प्रदर्शित करता है कि .01 सार्थकता स्तर पर मिशन विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था परिषदीय विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था से श्रेष्ठ है।

10. व्यक्तिगत विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था से सम्बन्धित अध्यापकों के मत परिषदीय विद्यालयों के अध्यापकों से प्राप्त मतों से .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है अर्थात् व्यक्तिगत विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था .01 सार्थकता स्तर पर परिषदीय विद्यालयों से श्रेष्ठ हैं।

परिशिष्ट में दी गयी तालिका सं0- 42 के आधार पर पाँचों प्रकार के विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांक अनुशासनात्मक व्यवहारों एवं प्रशासनिक व्यवस्था से सम्बन्धित अध्यापकों के मतों के मध्यमान प्राप्तांकों एवं लेखाचित्रों पर दृष्टि डालने से यह स्पष्ट होता है कि :-

रेलवे विद्यालय शैक्षिक उपलब्धि में सभी विद्यालयों में श्रेष्ठ स्थान रखते हैं, वहीं अनुशासनात्मक व्यवहार एवं प्रशासनिक व्यवस्था में दूसरा स्थान रखते हैं।

मिशन विद्यालय अन्य विद्यालयों की तुलना में प्रशासनिक व्यवस्था में सबसे आगे हैं, जबकि शैक्षिक उपलब्धि एवं अनुशासनात्मक व्यवहार में तीसरे स्थान पर है।

सरस्वती विद्या मंदिर पाँचों प्रकार के विद्यालयों की तुलना में अनुशासनात्मक व्यवहारों में प्रथम स्थान रखता है तथा शैक्षिक उपलब्धि एवं प्रशासनिक व्यवस्था में क्रमशः द्वितीय तथा तृतीय स्थान रखता है।

व्यक्तिगत विद्यालय एवं परिषदीय विद्यालय शैक्षिक उपलब्धि,

अनुशासनात्मक व्यवहार तथा प्रशासनिक व्यवस्था प्रत्येक में क्रमशः चौथा एवं पाँचवां स्थान रखते हैं।

उपर्युक्त निष्कर्षों का तुलनात्मक विश्लेषण करने पर यह प्रतीत होता है कि पाँचों प्रकार के विद्यालयों में रेलवे विद्यालय प्रथम स्थान पर, सरस्वती विद्या मंदिर द्वितीय स्थान पर, मिशन विद्यालय तृतीय स्थान पर, व्यक्तिगत विद्यालय एवं परिषदीय विद्यालय क्रमशः चतुर्थ एवं पंचम स्थान पर हैं।

परिकल्पनाओं का सत्यापन :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निष्कर्षों के आधार पर यह स्पष्ट है कि रेलवे विद्यालय, मिशन विद्यालय तथा सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियाँ क्रमशः अच्छी हैं। व्यक्तिगत एवं परिषदीय विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियाँ क्रमशः काफी कम हैं। अतः परिकल्पना संख्या-1 -

"स्थानीय निकायों, सामाजिक, धार्मिक एवं निजी अभिकरणों द्वारा संचालित विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण अन्तर है", स्वीकृत की जाती है।

शोध अध्ययन में निष्कर्षों से स्पष्ट है कि सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों का अनुशासनात्मक व्यवहार सर्वोत्तम है। लगभग इसी स्तर का अनुशासनात्मक व्यवहार रेलवे विद्यालयों के छात्रों का भी है। मिशन विद्यालयों के छात्रों का अनुशासनात्मक व्यवहार व्यक्तिगत एवं परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहार से काफी अच्छा है। परिषदीय विद्यालयों के छात्रों का अनुशासनात्मक व्यवहार सबसे निम्न स्तर का है। अतः परिकल्पना संख्या-2 -

"स्थानीय निकायों की अपेक्षा सामाजिक धार्मिक तथा निजी अभिकरणों द्वारा संचालित विद्यालयों के छात्रों का अनुशासनात्मक व्यवहार अच्छा है।" स्वीकृत की जाती है।

प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत मिशन विद्यालयों की प्रशासनिक व्यवस्था सर्वोत्तम है तथा रेलवे विद्यालयों की प्रशासनिक व्यवस्था दूसरे स्थान पर है। सरस्वती विद्या मंदिरों की प्रशासनिक व्यवस्था तीसरे स्थान पर है। व्यक्तिगत विद्यालयों की प्रशासनिक व्यवस्था चौथे तथा परिषदीय विद्यालयों की प्रशासनिक व्यवस्था पाँचवें स्थान पर है। अतः परिकल्पना संख्या-3 -

"स्थानीय निकायों, सामाजिक, धार्मिक एवं निजी अभिकरणों द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न विद्यालयों की प्रशासनिक व्यवस्था एवं रखरखाव में अन्तर होता है" स्वीकृत की जाती है।

# अष्टम् अध्याय

# आशय एवं सुझाव

प्रस्तुत शोध ग्रन्थ में बुन्देलखण्ड क्षेत्र में स्थित विभिन्न प्रबन्धतंत्रों द्वारा संचालित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों एवं अनुशासनात्मक व्यवहारों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। विद्यालयों में मुख्यतः व्यक्तिगत, परिषदीय, रेलवे, मिशन तथा सरस्वती विद्या मंदिरों का तुलनात्मक अध्ययन करने से जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं, उनके आधार पर स्पष्टतः यह कहा जा सकता है कि शैक्षिक उपलब्धि एवं अनुशासनात्मक व्यवहार के दृष्टिकोण से परिषदीय एवं व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों का स्तर अन्य संगठनों द्वारा संचालित विद्यालयों की तुलना में निम्नतर रहता है, इसका प्रमुख कारण परिषदीय एवं व्यक्तिगत विद्यालयों में शैक्षिक एवं प्रशासनिक सुविधाओं का अभाव है। परिषदीय विद्यालयों की दशा अत्यन्त दयनीय स्थिति में पहुँच चुकी है तथा व्यक्तिगत विद्यालय भी लगभग उसी स्थिति में पहुँच रहे हैं।

शोध परिणामों से स्पष्ट है कि जिला परिषद एवं नगरपालिकायें जहाँ अन्य प्रकरणों में भूमि एवं भवन का आवंटन करते हैं, वहीं इनके विद्यालयों के स्वयं के भवन नहीं है। प्रशासनिक अधिकारी विद्यालयों की दशा देखने तक की आवश्यकता नहीं समझते हैं। कोई भी अपने कर्तव्यों का निर्वहण नहीं करना चाहता है। स्थानान्तरण के समय अनैतिक प्रयास के फलस्वरूप एक ही स्थान पर रहने का प्रयास करते हैं। अध्यापकों का समय पर विद्यालय न पहुँचना अथवा विद्यालय पहुँचकर उसकी व्यवस्था में सहयोग न करना, उनकी आदत बन गयी है। प्रधानाध्यापक एवं प्रबन्धतंत्रों का शैक्षिक स्तर सुधार की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता, वह आर्थिक विकास की ओर अग्रसर रहते हैं। इन सबका प्रभाव वहाँ के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अनुशासनात्मक व्यवहार पर दृष्टिगोचर होता है। अभिभावक भी विद्यार्थियों को घर से निकाल कर विद्यालय तक पहुँचाकर अपने उत्तरदायित्व से मुक्त हो जाना चाहता है। उसके पास इतना समय नहीं है कि वह अपना सहयोग विद्यालयों के विकास या बच्चे के शैक्षिक विकास में प्रदान कर सके।

व्यक्तिगत विद्यालयों के पास भवन तो हैं परन्तु प्रशासनिक कार्यालयों से मान्यता प्राप्त करने हेतु औपचारिकताओं को पूर्ण करना मात्र है। विद्यालयों के पास जीर्णशीर्ण भवन हैं एवं दुर्दशा को प्राप्त टाट फट्टियों पर बैठकर छात्रों को शिक्षा दी जाती है। पुस्तकालय, खेलकूद के उपकरण एवं स्थान की तो कल्पना मात्र ही है। किसी-किसी व्यक्तिगत विद्यालयों में छात्रों को कुछ फर्नीचर बैठने हेतु उपलब्ध हो जाता है। किन्तु विद्यार्थियों को खाली समय का सदुपयोग करने के लिये मात्र लड़ना-झगड़ना, दीवारों पर अभद्र शब्दों को अंकित करना, गलत आचरणों को सीखना मात्र होता है।

विद्यालयों को जो कुछ भी शुल्क के रूप में अथवा अनुदान के रूप में धनराशि प्राप्त होती है, वह प्रबन्धतंत्र एवं कार्यकर्ताओं हेतु अल्प प्रतीत होती है। यही कारण है कि परिषदीय एवं व्यक्तिगत विद्यालयों को अभिभावक एवं छात्र हीन दृष्टि से देखते हैं तथा निर्बल वर्ग के लोग ही अपने बालकों को विद्याध्ययन हेतु यहाँ भेजते हैं।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि परिषदीय एवं व्यक्तिगत विद्यालयों को पर्याप्त शैक्षणिक एवं प्रशासनिक सुविधायें प्रदान की जायें, तभी यह विद्यालय आकर्षण के केन्द्र बन सकते हैं। उपर्युक्त सुधारों के लिये परिषदीय व्यक्तिगत प्रबन्धतंत्र एवं अन्य संगठनों द्वारा संचालित विद्यालयों में शैक्षिक एवं प्रशासनिक व्यवस्थाओं के उत्थान हेतु जो उत्तरदायी होते हैं, उनमें प्रशासन (सरकार), प्रबन्धतंत्र, प्रधानाध्यापक, अध्यापक एवं अभिभावक होते हैं। छात्रों के शैक्षिक विकास एवं अनुशासनात्मक व्यवहार में सुधार हेतु सभी को अपने कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों का निर्वाह पूर्ण निष्ठा एवं लगन के साथ करना आवश्यक है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोध परिणामों के आधार पर सुझावों को निम्नतः आवंटित किया गया है:-

1. सरकार (प्रशासनिक अधिकारी) को सुझाव

2. प्रबंध तन्त्रों को सुझाव

3. प्रधानाध्यापकों को सुझाव

4. अध्यापकों को सुझाव

5. अभिभावकों को सुझाव

1. सरकार (प्रशासनिक अधिकारियों) हेतु सुझाव :-

परिषदीय विद्यालयों की स्तरहीनता स्वतः प्रमाणित है। समाज की दृष्टि में यह विद्यालय अत्यन्त गिरे हुये माने जाते हैं। बुद्धिमान अभिभावक अपने बालकों को इन विद्यालयों में भेजने की कल्पना भी नहीं करते। अच्छे विद्यालयों के अभाव में ग्रामीण क्षेत्र के अभिभावक ही इन विद्यालयों में बच्चों को भेजना पसंद करते हैं।

शोध कार्य के परिणामों के आधार पर यह स्पष्ट है कि परिषदीय एवं व्यक्तिगत विद्यालयों में भवन, फर्नीचर, पुस्तकालय तथा प्रयोगशालाओं का अभाव है। यदि किसी व्यक्तिगत विद्यालय में यह सब उपलब्ध भी है तो अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण अवस्था में अनुपयोगी तत्वों के रूप में अंतिम साँस ले रहे है। ग्रामीण क्षेत्रों के इन विद्यालयों की दशा तो और भी दयनीय है। प्रयोगशाला पुस्तकालय, तथा खेलकूद का स्थान एवं सामान की कोई व्यवस्था नहीं है। इन विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च होनी तथा अच्छा अनुशासनात्मक व्यवहार होना कोरी कल्पना मात्र है।

अतः सरकार उच्चस्थ अधिकारी एवं कर्मचारियों का यह उत्तर-दायित्व है कि इन विद्यालयों को भवन फर्नीचर की पर्याप्त व्यवस्था करायें यह तभी सम्भव होगा जबकि प्रत्येक कर्मचारी एवं अधिकारी अपने मस्तिष्क से इन विद्यालयों के त्याज्य होने की वात निकाल दें। समय -समय पर प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा इन विद्यालयों का निरीक्षण किया जाना चाहिये । अनुकूल

परिस्थितियों के उत्पन्न करने तथा शैक्षिक परिवेश पैदा करने में उचित सहयोग प्रदान करना चाहिये। छात्रों की रूचियों रूझानों एवं उनके स्तर के अनुकूल पुस्तकें उपलब्ध कराने हेतु उचित प्रयास किया जाना चाहिये। छात्रों को खेलकूद का स्थान एवं सामग्री की उचित व्यवस्था की जानी चाहिये। खेलकूद सामग्री की उपलब्धता एवं उनके उपयोग की सार्थकता हेतु प्रशिक्षित व्यक्ति एवं पर्याप्त स्थान उपलब्ध रहना चाहिये । प्रयोगशालाओं एवं अन्य शिक्षोपयोगी उपकरणों का प्रबंध करना तथा उनका निरीक्षण करना प्रशासनिक अधिकारियों का पूर्ण दायित्व है। विद्यालयों में संख्यात्मक विकास के स्थान पर गुणात्मक विकास को प्राथमिकता देनी चाहिये।

शोध कार्य के अन्तर्गत विद्यालयों के अध्यापकों के मतों से यह तथ्य भी प्रकाश में आया है कि व्यक्तिगत विद्यालयों तथा अन्य विद्यालयों में अनुदान की राशि अपर्याप्त एवं अनियमित होती है। उस राशि को भी विद्यालयों के हित में प्रयोग नहीं किया जाता है। अतः सरकार को यह चाहिये कि उपरोक्त अनियमितताओं के निराकरण हेतु उचित व्यवस्था करें। सरकार को चाहिये कि वह परीक्षा परिणामों के आधार पर विद्यालयों को पुरूष्कृत करे जिससे विद्यालयों का वातावरण शैक्षिक हो। अनुदान की राशि भी पर्याप्त एवं न्यायपूर्ण विधि से वितरित की जानी चाहिये। इस हेतु सरकार द्वारा वर्तमान नियमों में संशोधन करने तथा उन नियमों का कड़ाई से पालन कराने की आवश्यकता है। उन विद्यालयों में जहां गतबर्षों में अनुदान राशि आवंटित की गई तथा उक्त आबंटित राशि का उपयोग उस मद में नहीं किया गया जांच करा कर उनकी मान्यता निरस्त कर देनी चाहिये तथा ऐसे विद्यालयों को दण्डित किया जाना चाहिये।

नये विद्यालयों में इन सभी बातों को ध्यान से देखा जाना चाहिये तथा उनको तब तक मान्यता प्रदान नहीं की जानी चाहिये जब तक उनके पास स्वयं का भवन ,फर्नीचर, पुस्तकालय, खेलकूद सामग्री आदि की उचित व्यवस्था

न हो। स्वस्थ परिस्थितियों में स्वांस लेने वाले विद्यालयों को ही प्रोत्साहन तथा अनुदान राशि दी जानी चाहिये।

2. प्रबंधतन्त्रों हेतु सुझाव:-

वर्तमान समय में परिषदीय एवं व्यक्तिगत विद्यालयों की दुर्दशा हेतु वहां के प्रबंधतन्त्र उत्तरदायी है। व्यक्तिगत विद्यालयों के गिरते स्तर का कारण प्रबंधतन्त्रों की विद्यालयों के प्रति उपेक्षा है। प्रबंधक विद्यालय भवन, फर्नीचर, तथा अध्यापकों की आवश्यकताओं का ध्यान नहीं रखते। व्यक्तिगत विद्यालयों के अध्यापकों को पूर्ण वेतन प्राप्त नहीं होता तथा उनकी सुख सुविधाओं की ओर ध्यान नहीं दिया जाता है। अतः वहां योग्य एवं प्रशिक्षित अध्यापकों का अभाव रहता है। परिणामतः अध्यापक छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके अनुशासनात्मक व्यवहार की ओर ध्यान न देकर आर्थिक स्रोतों के विकास में लगे रहते है।

परिषदीय एवं व्यक्तिगत विद्यालयों के प्रशासनिक अधिकारियों एवं प्रबंधको को समय-समय पर अपने विद्यालयों का निरीक्षण करना चाहिये तथा विद्यालयों के दोषों को दूर करने हेतु प्रयास करना चाहिये। प्रबंधकों की आय के स्रोतों का विकास करके उनका सही दिशा में उपयोग करना चाहिये। विद्यालयों के विकास के मार्ग में उपस्थित अवरोधों का उन्मूलन करने का प्रयास अपनी क्षमताओं के आधार पर करना चाहिये। प्रबंधतन्त्रों को चाहिये कि वह प्रधानाध्यापकों, अध्यापकों एवं छात्रों की समस्याओं का निदान न्याय के स्तर पर करने का प्रयास करें जिससे विद्यालय का शैक्षिक एवं अनुशासनात्मक व्यवहार से सम्बंधित स्तर में सुधार आ सके।

व्यक्तिगत विद्यालयों के प्रबंधकों को यह भी चाहिये कि वह प्रधानाध्यापकों के सहयोग से विद्यालयों में खेल-कूद तथा अन्य पाठ्येत्तर

क्रिया-कलापों का आयोजन कराये।

प्रबंधतन्त्रों को चाहिये कि वह विद्यालयों को मान्यता प्रदान करने की समस्त दशाओं का कड़ाई से पालन करे जिससे विद्यालयों के स्तर में गिरावट न आये अभिभावक तथा छात्र विद्यालयों में शिक्षा प्प्त करने हेतु प्रयास करें।

प्रबंधतन्त्रों को शैक्षिक उपलब्धि तथा अनुशासनात्मक व्यवहारों के क्षेत्र में विकास हेतु निम्न बिन्दुओं पर सुधार लाने का प्रयास करना चाहिये-

§1§ विद्यालय भवन, फर्नीचर, पुस्तकालय, खेलकूद सामग्री तथा अध्यापकों के कार्य का समय-समय पर निरीक्षण ।

§2§ प्रबंध समिति में शिक्षित एवं योग्यता के आधार पर सदस्यों को स्थान।

§3§ विधार्थियों के शुल्क एवं अनुदान से प्राप्त धनराशि का समुचित उपयोग।

§4§ विद्यालय में सुयोग्य, अनुभवी, प्रशिक्षित अध्यापक का निष्पक्ष विषयवार रूप से चयन।

§5§ विद्यालयों में एक बार प्रबंधक अध्यापक तथा अभिभावक सम्मेलन का आयोजन।

3, प्रधानाध्यापकों हेतु सुझाव:-

शोध कार्य हेतु प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण यह दर्शाते है कि व्यक्तिगत एवं परिषदीय विद्यालयों के छात्रों का शैक्षिक स्तर गिरा हुआ है। उनकी शैक्षिक उपलब्धि सबसे कम है तथा वहां के विद्यार्थी नित्य प्रति की प्रक्रियाओं में सम्मलित नहीं होते है या विरोध करते हैं जैसे प्रार्थना में सम्मलित न होना,

विद्यालय से कक्षाध्यापक की अनुमति के बिना कक्षा से चले जाना, अध्यापकों के विद्यालयी कार्यों में हस्तक्षेप करना, आपस में झगड़ा करना, एक दूसरे के सामान को चुरा लेना, दीवारों पर अभद्र शब्दों को अंकित करना, नकल करने का प्रयास करना। प्रश्न यह उठता है कि इन परिस्थितियों का उत्तरदाता कौन है? सुझावों के रूप में यहां पर इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास किया गया है। प्रधानाध्यापक विद्यालय का प्रमुख नेता होता है । उसको विद्यालयी परिस्थितियों, विद्यार्थियों एवं शैक्षिक पर्यावरण में परिवर्तित करके उसके उत्थान में योगदान प्रदान करना उसका मुख्य दायित्व है।

परिषदीय एवं व्यक्तिगत विद्यालयों में मासिक परीक्षाओं का सम्पादन भी नहीं किया जाता इस कारण विद्यार्थियों को प्रगति एवं गति का ज्ञान अध्यापकों एवं प्रधानाध्यापकों को नहीं हो पाता। एक ही अध्यापक छात्रों को विभिन्न विषयों का ज्ञान प्रदान करता है। अतः प्रधानाध्यापकों को चाहिये कि वह विद्यालयों में इन परिस्थितियों को विकसित करने वाले कारकों का पता लगाये और उनका उन्मूलन करने का प्रयास करे।

प्रधानाध्यापकों को नित्यप्रति कक्षा का पुस्तकालय का विद्यालय परिसर का निरीक्षण करना चाहिये जिससे विद्यालय में शैक्षिक एवं अनुशासनात्मक वातावरण का विकास हो। प्रधानाध्यापकों को चाहिये कि वह छात्रों के लिये पुस्तकालय, खेलकूद आदि की उचित व्यवस्था करे जिससे छात्रों को खाली समय का सदुपयोग का अवसर मिले और वह अनैतिक कार्य न कर सके। इस कार्य हेतु प्रधानाध्यापकों को अध्यापकों की एक समिति बना देनी चाहिये जो ऐसे विद्यार्थियों की खोज करे। उन विद्यार्थियों का मनोवैज्ञानिक विधि से कारणों का पता लगा कर उनको दूर करने का प्रयास करे। इस प्रकार के विद्यार्थियों के अभिभावकों से सम्पर्क करना चाहिये तथा उनकी शैक्षिक प्रगति एवं इन क्रिया कलापों से अवगत कराना चाहिये । यदि फिर भी समस्या का समाधान न हो

तो विद्यालयों से ऐसे विद्यार्थियों को निष्कासित करना ही श्रेयकर होगा।

प्रधानाध्यापक को चाहिए कि वह प्रत्येक विषय हेतु अलग-अलग प्रशिक्षित एवं योग्य अध्यापकों को सुनिश्चित करें।

व्यक्तिगत एवं परिषदीय विद्यालयों में मासिक परीक्षाओं को सम्पादित कराने हेतु प्रधानाध्यापकों को सजग रहना चाहिए। शैक्षिक उपलब्धि में पिछड़े छात्रों के अभिभावकों को उनकी सूचना प्रदान करना चाहिए, जिससे अध्यापक एवं अभिभावक के सहयोग से उसके शैक्षिक स्तर में विकास हो सके।

व्यक्तिगत विद्यालयों के अध्यापकों से प्राप्त मतों के आधार पर ये तथ्य भी प्रकाश में आये हैं कि इन विद्यालयों में विद्यार्थियों के मासिक शुल्क से प्राप्त धन को विद्यालयी कार्यों में व्यय न करके उसका दुरूपयोग किया जाता है। अतः प्रधानाध्यापकों को चाहिए कि वे इस धनराशि को विद्यालय के विकास कार्यों एवं विद्यार्थियों के शैक्षिक उत्थान में व्यय करना सुनिश्चित करें। इस प्रकार इन परिषदीय एवं व्यक्तिगत विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि एवं प्रशासनिक व्यवस्था में पर्याप्त सुधार लाया जा सकता है।

## अध्यापकों हेतु सुझाव :-

अध्यापक राष्ट्र का निर्माता तथा समाज की संरचना का मुख्य आधार है। अध्यापकों के अभिमतों एवं शोध परिणामों से यह सुस्पष्ट है कि व्यक्तिगत एवं परिषदीय विद्यालयों के छात्र कक्षाओं एवं विद्यालयों की समस्या बने हुए हैं, जो इन विद्यालयों को शैक्षिक उपलब्धि तथा अनुशासनात्मक व्यवहार के प्रदर्शन में निम्न स्तरीय रखते हैं। अध्यापकों को इस क्षेत्र में छात्रों की समस्याओं का निराकरण करने के लिये विशेष प्रयास करना चाहिए। अध्यापकों के व्यक्तित्व का प्रभाव छात्रों पर प्रत्यक्षतः आरोपित होता है। अधिकांशतः छात्र अध्यापक के आचरण एवं उनकी गतिविधियों पर सूक्ष्मतः से दृष्टि रखते हैं।

वे अनुकरण द्वारा प्रत्यक्ष रूप से सीखते रहते हैं। विद्यालयी परिवेश में अध्यापकों को अत्यन्त संतुलित रहना चाहिए तथा समाज एवं समुदाय में उसे नैतिकता का प्रश्रय जीवनयापन करना चाहिए। अध्यापकों को निहित स्वार्थों को त्यागकर उच्च कोटि के व्यक्तित्व का निर्माण करना चाहिए।

व्यक्तिगत एवं परिषदीय विद्यालयों के अध्यापकों को निम्न बिन्दुओं पर विचार कर तथा क्रियान्वयन कर छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अनुशासनात्मक व्यवहार में गुणात्मक वृद्धि करने का प्रयास करना चाहिए:-

(1) समस्यात्मक छात्रों एवं गलत आदतों वाले विद्यार्थियों का पता लगाकर तथा उनके मूल कारणों का पता लगाकर उनमें सुधार लाने का प्रयास करना चाहिए।

(2) अध्यापकों को छात्रों के अभिभावकों से नियमित सम्पर्क में रहना चाहिए। यह छात्रों की गतिविधियों एवं उनके आचरणों की खोज में विशेष महत्व रखता हैं। अभिभावकों के सम्पर्क के समय छात्रों की शैक्षिक प्रगति का ज्ञान भी करा सकता है तथा उनके मिलकर शैक्षिक प्रगति में आने वाली समस्याओं का निराकरण करने में भी सफलता मिलती हैं।

(3) अध्यापकों को चाहिए कि वह गलत आदतों वाले विद्यार्थियों की खोज करके उनका मनोवैज्ञानिक उपचार करने का प्रयास करें, उनकी सूचना प्रधानाध्यापकों एवं अभिभावकों को देनी चाहिए और उनके सहयोग से विद्यार्थियों को सही मार्ग पर लाने का प्रयास करना चाहिए। यदि आवश्यकता हो तो उसे दण्डित भी किया जाना चाहिए।

(4) अध्यापकों को छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अनुशासनात्मक

व्यवहारों में प्रोन्नति हेतु अपने हितों को त्याग देना चाहिए।

(5) व्यक्तिगत एवं परिषदीय विद्यालयों के अध्यापकों को चाहिए कि वह पूर्ण ईमानदारी एवं निष्ठा के साथ शिक्षण कार्य करें, जिससे विद्यालयों का शैक्षिक स्तर ऊँचा हो सके।

5. <u>अभिभावकों हेतु सुझाव</u> :-

शोध कार्य के अन्तर्गत अध्यापकों से प्राप्त मतों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक परिषदीय एवं व्यक्तिगत विद्यालयों के विद्यार्थी विद्यालयों की दैनिक क्रियाओं में भाग नहीं लेते तथा अनैतिक क्रियाकलापों में भाग लेते हैं। अतः अभिभावकों को वहाँ के व्यवहार तथा प्रशासनिक व्यवस्था का ज्ञान होने पर वह अपने विद्यार्थी को विद्यालय से हटा लेते हैं या उस पर ध्यान नहीं देते। अभिभावकों को चाहिए कि वह विद्यालयों की व्यवस्था में अपना सहयोग प्रदान करें। अभिभावकों को इन कार्यों में लिप्त बच्चे को समझाना चाहिए यदि न माने तो उसे दण्ड देने से भी नहीं हिचकना चाहिए।

व्यक्तिगत एवं परिषदीय विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों के अभिभावकों को चाहिए कि अपने बच्चों में सुधार लाने हेतु प्रधानाध्यापक तथा अध्यापकों से लगातार सम्पर्क करें और उनसे मिलकर अपने बच्चों के शैक्षिक उपलब्धि तथा अनुशासनात्मक व्यवहारों के स्तर में सुधार लाने का प्रयास करें। अभिभावकों को अपने बच्चों में शैक्षिक विकास करने तथा बच्चे को अनुशासन प्रिय बनाने हेतु निम्न प्रयास करने चाहिए :-

(1) बच्चों के विद्यालय न जाने या जल्दी वापस आ जाने पर उसके कारण का पता लगाकर उसमें सुधार लाने का प्रयास करना चाहिए।

(2) अध्यापक या प्रधानाध्यापक द्वारा शिकायत आने पर उनसे सम्पर्क

कर उसका समाधान करना चाहिए।

§3§ प्रबन्धक, प्रधानाध्यापक, अध्यापक एवं अभिभावक सम्मेलन होने पर उसमें भाग लेना चाहिए तथा बच्चे की शैक्षिक उपलब्धि एवं अनुशासनात्मक व्यवहारों से सम्बन्धित समस्याओं के बारे में विचार-विमर्श करना चाहिए।

§4§ मासिक परीक्षाओं को महत्वपूर्ण समझकर उसके परिणाम पर ध्यान देकर छात्र में सुधार हेतु प्रयास करना चाहिए।

§5§ व्यक्तिगत विद्यालयों में छात्रों के प्रवेश के समय विद्यालयों के विकास हेतु सहयोग माँगे जाने पर अभिभावकों को नगद धनराशि न देकर उपयोगी वस्तुएं जैसे- फर्नीचर, खेलकूद का सामान, विद्यालय भवन हेतु भूमि अथवा सामग्री, पुस्तकें आदि अपने स्तर के अनुसार देकर विद्यालय के वातावरण को दोष रहित एवं शैक्षिक बनाने का प्रयास करना चाहिए।

§6§ जिला परिषद एवं नगर पालिकाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों को समय-समय पर प्रशासनिक अधिकारियों से सम्पर्क करना चाहिए तथा विद्यालयों की आवश्यकताओं एवं कमियों का ज्ञान कराकर उसके समाधान हेतु उनसे आग्रह करना चाहिए।

यदि सरकार, प्रबन्धतंत्र, प्रधानाध्यापक, अध्यापक तथा अभिभावक दिये गये सुझावों की ओर ध्यान दें तथा पूर्ण निष्ठा एवं लगन के साथ विद्यालय हित में अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह करें तो अवश्य ही विद्यालयों के गिरते स्तर में सुधार होगा। सभी एक-दूसरे को अपने सुझावों तथा उनकी कमियों से अवगत करायें और उनको दूर करने हेतु मिलकर प्रयास करें, इसमें वह अपनी प्रतिष्ठा न बनाये तो अवश्य ही परिषदीय एवं व्यक्तिगत विद्यालयों के गिरते

हुए स्तर को रोका जा सकता है और अन्य विद्यालयों की भाँति उनको उच्च श्रेणी के अन्तर्गत लाकर लोकप्रिय बनाया जा सकता है। इन विद्यालयों के स्तर में सुधार हो जाने तथा लोकप्रिय हो जाने पर सरकार को विद्यालयों की संख्या में वृद्धि करने की आवश्यकता नहीं होगी तथा उसका साक्षरता लक्ष्य शीघ्र पूरा होगा।

भावी शोधकार्य हेतु सुझाव :-

शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य में विभिन्न प्रबंधतंत्रों द्वारा संचालित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के समान सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्र/छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं अनुशासनात्मक व्यवहारों का तुलनात्मक अध्ययन किया है। इससे सम्बन्धित भावी शोधकार्य हेतु कुछ समस्याओं को प्रस्तुत किया जा रहा है:-

(1) प्रस्तुत शोधकार्य में कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 8 के छात्रों को लिया गया है। भावी शोध कार्य हेतु विभिन्न शैक्षिक अभिकरणों द्वारा संचालित विद्यालयों के हाईस्कूल विद्यालयों एवं उनकी कक्षाओं को लिया जा सकता है।

(2) प्रस्तुत शोध कार्य में बुन्देलखण्ड सम्भाग के झाँसी मण्डल को चुना गया है। इसके अतिरिक्त अन्य मण्डलों में विभिन्न अभिकरणों द्वारा संचालित कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के समान सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्र/छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं अनुशासनात्मक व्यवहारों का अध्ययन किया जा सकता है।

(3) प्रस्तुत शोध कार्य में शैक्षिक उपलब्धि एवं अनुशासनात्मक व्यवहारों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त विभिन्न

अभिकरणों द्वारा संचालित विद्यालयों के छात्र/छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि, पारिवारिक शैक्षिक सुविधाओं एवं रूचियों के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

(4) बुन्देलखण्ड सम्भाग में विभिन्न अभिकरणों द्वारा संचालित विद्यालयों के अध्यापकों को उपलब्ध सुविधाओं, उनके बौद्धिक तथा आर्थिक स्तरों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

# सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

## BIBLIOGRAPHY


1. Attekar, A.S.- Education in ancient India, Nand Kishore & Brothers, 1948.

2. Anderson, G. & Whitehead,H.- Christian Education in India, Macmillan, London, 1932.

3. Basu, A.N.- Education in Modern India, Orient Book Co., Calcutta, 1947.

4. Buch, M.B.- Second survey of research in education, N.C.E.R.T. Baroda, 1979.

5. Buch, M.B.- Third Survey of research in education, N.C.E.R.T.,1981.

6. Buch, M.B.- Fourth survey of research in education, Vol. I, N.C.E.R.T.,1991.

7. Buch, M.B.- Fourth survey of research in education, Vol. II, N.C.E.R.T.,1991.

8. Cronback, L.J.- Essential of Psychological testing, Harper & Co., New York, 1949.

9. Deshmukh, D.B.- Encyclopedia of Social work in India, Vol. II, The Planning Commission, Govt.of India, 1968.

10. English, H.B.- Child Psychology, Henry Holt & Company, New York, 1951.

11. Freeman, F.S.- Theory & practice of Psychological testing, Oxford & IPH Publishing Co., Delhi,1971.

12. Giffith, Daniel, E.- Human relations in school administration, A.C.C., New York, 1956.

13. Glenn Myers Blais, R., Stewart Jones & Ray, H. Simpson- Educational Psychology, Macmillan Publishing Co., New York, 1975.

14. Green, E.B.- Measurement of human behaviour, Obyssey Press, New York, 1941.

15. Guilford, J.P.- Psychometric method, Tala MC Graw Hill Publishing Co.Ltd., New Delhi, 1978.

16. Herbert Spencer, Injay,W., Lorsch- Product innovation & Organisation, Macmillan Co., New York, 1965.

17. Jamuar, K.K.- Achievement & some background factors,1963.

18. Kabir Humayun,- Education in new India, Ruskin House, Museum street, London, 1955.

19. Kabir Humayun- Student indiscipline, Ministry, 1955.

20. Kuppu Swamy,B.- Child behaviour & development, Vikas, Delhi, 1974.

21. Leona Tyler - The Psychology of human difference, Appletion Century Craftsm, New York, 1965.

22. Lindquist, E.F.- Statical analysis in Educational research, Oxford & IBN Publishing Co., New Delhi, 1970.

23. Lochhead, J. Clement, Congnitive Process in struction, Franklin Inst.Press, 1979.

24. Mukerji, S.N.- Education in India Today & Tomorrow, Acharya Book Depot, Baroda, 1957.

25. Mukerji, S.N.- History of education in India, Acharya Book Dep., Baroda, 1961.

26. Mukerji, R.K. Dr.- Ancient education in India, 1947.

27. Nanda, S.K.- Indian Education & its problems today, Kalyani Publishers, New Delhi, 1977.

28. Oneil, H.F.- Learning strategies, Academic, New York, 1978.

29. Panday, N.D.- Principals views on School administration, Published Kendriya Vidyalaya Sangathan, India.

30. Pringle, R.W.- The Psychology of High School Discipline, D.C. Health, London.

31. Rasool, G. & Lal, N.K.- Application of Statistics in Education & Psychology, Jammu Malhotra Brothers, 1977.

32. Resnics, L.B., Ford, W.W.- The Psychology of Mathematics for,instructions, Hillsdale N.J. Erlbaum, 1980.

33. Rawat, P.L.- History of Indian Education, Ram Prasad & Sons, Agra, 1970.

34. Sharma, Motilal - Diagnosing School climate, International consultants, Naya Bas Sardar Shahar, Rajasthan, 1982.

35. Sharma, R.C. - School administration, Kendriya Vidyalaya Sangathan, Delhi, 1970.

36. Thomas, F.W.- The history & prospect of British Education in India, Cambridge, Bell, 1891.

37. Varma, Meera - Moral development in Children, Chugh Publication, Allahabad, 1976.

38. Young, P.V. - Scientific social survey & research, Asia Publishing House, Bombay, 1960.

JOURNALS AND RESEARCH PAPERS

39. Allinsmith, W. - Conscience & conflict the moral force in personality, Child Development,1957,28,469-474.

40. Baldwin, J.W.- The social studies laboratory, Contribution to Education, No.371, Teachers col.1929,P.98.

41. Cook, W.A.- A comparative study of standardizing agencies, North Cen.Assn. Q.4: 377-455-1929.

42. Dearborn, W.F. & Gattell, Psych.- The intelligence & achievement of private school pupils, J.Ed.Psy.21: 197-211, 1930.

43. Eaton, M.T., Demico, L.A. & Philiphs, B.N.(Problem)- Behaviour in school, J.Ed.Psy.,1956,47,350-357.

44. Eberhart, J.C., Attitudes towards property, A Genetic study by the pained comparisons rating of offences, J. Genet, Psychol., 1942, 60, 3-35.

45. Edward, H., Seefert, John,J.,Beek, J.R.- Relationship between Jask, Time & learning gains in secondary school, South, West Texas State Univ., The J.Ed. Research, Vol. 78, 1984.

46. Grizzell, E.D.- A comparison of standards for secondary school of Regional Associations, Sch.Life 13: 147-49, 160: 1928.

47. Henry, A.F., Sibling Structure & perception Disciplinary roles of parents sociometry, 1957,20,67-74.

48. Hill, H.H.- State High School standardization University of Kenlucky, Bureau of School Service, Bulletin, Vol.2, No.3: 1930, P.96.

49. Horn, Ernest, Method of Instruction in studies,Scribner, 1937, P.523.

50. Larkin, J. Reif, F. - Analysis of Teaching of a general skill for studying scientific text, J.of Ed. & Psy., 1979.

51. Mayer, R.E.- Different problem solving competencies established in learning computer programming with & without meaning-ful models, J.Ed.Psy.,1975,67: 8725-34.

52. Nolan, E.G.- Determining the most effective media of student learning, Journal of Educational Research, Vol.43, 1950,P.549.

53. Resnick, L.B.- The role of invention in the development of mathematical competence, In developmental models of thinking, Ed.R.Klume,H.Spada,New York,1980.

54. Sinha, D. & Varma, M.- Knowledge of moral values in Children Psychol.studies, Vol.17, No.1, 1972,P.1-6.

55. Sinha, D.- Development of interest, Attitudes ideals & character,(Kuppu Swamy), Advanced Educational Psychology, 1964, P.182-203.

56. Sinclair, Robert, L.- Elementary school Educational environment towards school that are responsive to students. The National elementry principles,Vol.XI, IX, No.5, 1970, P.50.

57. Thompson, G.G.- Age trends in social values during the adolescent years Amer.Psychologist,1949,4,250.

58. Tuma, E. & Livinson, N.- Family socio-economic status & adolescent attitudes to authority, Child development, 1970,31, 386-399.

59. Van Wagenon, M.J.- Comparative pupil achievement in rural, town & city school, University of Minnesota,1929,P.144.

60. Varma, P.R.- Ethical discrimination as related to intelligence, age & sex: A study of moral development in children, J.Psychol.Research,1962,6(1),44-51.

61. Wilson, H.E.- Things to do in the social science classroom, Historical outlock, 20,218-24, 1929.

REPORTS

62. Encyclopedia of Educational Research, Editor-Walter S., Monrose, 1952.

63. Inamdar, N.R.- Educational administration in the Zilla Parisads in Maharashtra, ICSSR, New Delhi, 1971.

64. The New Educational Pattern in India, By- A, Biswas, Swritee Dutt, Singhal, R.P.

65. Draft fifth five year plan, Planning Commission, Govt.of India, Vol.II,1974.

66. Ministry of Education & social walfare, Statistical & information division, Govt.of India.

## संदर्भ ग्रन्थ

1. अग्रवाल, जे०सी० - स्वतंत्र भारत में शिक्षा का विकास, आर्य बुक डिपो, नईदिल्ली

2. अस्थाना, डा० विपिन एवं अग्रवाल, रामनारायण - मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1987

3. उत्तर प्रदेश वार्षिका 1990-91, 1991-92, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद, 1991

4. गर्ग, शोभा - शैक्षिक प्रशासन, पी०एल० प्रकाशन, गोरखपुर, 1983

5. गुप्ता, बी०एन० डा० - सांख्यिकी, साहित्य भवन, आगरा, 1992

6. गैरिट, हैनरी ई० - शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, कल्याणी पब्लिशर्स, नोयडा, 1987

7. चौबे, डा० रामनारायण लाल - भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें और परीक्षण, इलाहाबाद

8. जायसवाल, सीताराम - भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्यायें, प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ, 1991

9. टेट, एम०डब्लू० - स्टैटिस्टिक्स इन एजुकेशन, मैकमिलन कम्पनी, न्यूयार्क, 1955

10. नायक, जे०पी० एवं सैयद, नूरूल्लाह - भारतीय शिक्षा का इतिहास, दिल्ली मैकमिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया लिमिटेड, 1976

11. नूरूल्ला एवं नायक - हिस्ट्री ऑफ एजूकेशन इन इण्डिया, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1980

12. बुन्देली, राधाकृष्ण एवं सत्यभामा - बुन्देलखण्ड का ऐतिहासिक मूल्यांकन, बुन्देलखण्ड प्रकाशन, बाँदा, 1989

13. वेस्ट, जॉन डब्लू - रिसर्च इन एजूकेशन, प्रिंटिंग हाल ऑफ इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, 1978

14. भूषण, इन्दु - प्रारम्भिक मनोविज्ञान, भारतीय भवन, पटना, 1972

15. मुकर्जी, डा0 श्रीधर नाथ - भारत में शिक्षा, आचार्य बुक डिपो, बड़ौदा, 1958

16. माथुर, एस0एस0 - विद्यालय संगठन एवं स्वास्थ शिक्षा, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, 1988

17. सारस्वत, मालती एवं मदन मोहन - भारतीय शिक्षा का इतिहास, कैलाश प्रकाशन मंदिर, इलाहाबाद

18. सांख्यिकीय पत्रिका, झाँसी मण्डल, झाँसी, 1991

19. सिंघल, एम0सी0 - भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्यायें, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1971

20. सिंह, आर0एल0 - इण्डिया, ए रीजनल जोगरफी, एन0जी0एस0आई0, बनारस, 1971

21. सिंह, बंशीधर एवं शास्त्री, भूदेव - स्वतंत्र भारत में शिक्षा की प्रगति, गया प्रसाद एण्ड संस, आगरा

22. सुखिया, एस0पी0, मेहरोत्रा, पी0वी0 तथा मेहरोत्रा, आर0एन0 - शैक्षिक अनुसंधान के मूलतत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

23. सुखिया, एस0पी0 - विद्यालय प्रशासन एवं संगठन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1993

24. शर्मा, के0एल0 एवं राय, पारसनाथ - शिक्षा मनोविज्ञान, लक्ष्मी नारायण प्रकाशन, आगरा, 1982

25. शिक्षा की प्रगति 1991-92, शिक्षा निदेशालय, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

26. त्रिपाठी, मोतीलाल -बुन्देलखण्ड दर्शन, शारदा साहित्य कुटीर, झाँसी, 1980

27. त्रिपाठी, डा0 विद्या बन्धु एवं विरले, आर0एन0 - उत्तर प्रदेश का भूगोल, किताब घर, कानपुर ।

## परिशिष्ट - (अ)

1. शैक्षिक उपलब्धि, अनुशासनात्मक व्यवहार तथा प्रशासनिक व्यवस्था के औसत मध्यमान प्राप्तांक तालिका

2. तालिकाओं का विवरण

## परिशिष्ट - "अ"

## तालिका सं0-42

पाँचों प्रकार के विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांक, अनुशासनात्मक व्यवहारों एवं प्रशासनिक व्यवस्था से सम्बन्धित अध्यापकों के मतों के मध्यमान प्राप्तांक

| क्र0 सं0 | विद्यालयों के नाम | शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांक औसत | अनुशासनात्मक व्यवहार से सम्बन्धित मतों के मध्यमान प्राप्तांक | प्रशासनिक व्यवस्था से सम्बन्धित मतों के मध्यमान प्राप्तांक |
|---|---|---|---|---|
| 1. | रेलवे विद्यालय | 37.24 | 38.20 | 17.00 |
| 2. | सरस्वती विद्या मंदिर | 36.21 | 38.35 | 15.19 |
| 3. | मिशन विद्यालय | 33.53 | 35.07 | 17.03 |
| 4. | व्यक्तिगत विद्यालय | 27.15 | 34.10 | 12.00 |
| 5. | परिषदीय विद्यालय | 21.06 | 33.36 | 8.35 |

## तालिकाओं का विवरण



| तालिका क्र०सं० | विवरण | पृष्ठ सं० |
|---|---|---|
| 1 | बुन्देलखण्ड सम्भाग का क्षेत्रफल, जनसंख्या तथा घनत्व | 60 |
| 2 | बुन्देलखण्ड सम्भाग में कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों, अध्यापकों तथा कक्षा 6-8 तक अध्ययन करने वाले छात्रों की संख्या | 61 |
| 3 | प्रदत्त संग्रह हेतु चयनित विद्यालयों का नाम संस्था, स्थान एवं छात्रों की संख्या | 73 |
| 4 | मानक निर्धारण हेतु आवृत्ति वितरण एवं मूल्य सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी-कुलश्रेष्ठ | 77 |
| 5 | सामाजिक-आर्थिक स्तर श्रेणी तालिका | 78 |
| 6 | व्यवहार मापनी उत्तर तालिका खण्ड -अ | 80 |
| 7 | व्यवहार मापनी उत्तर तालिका खण्ड -ब | 80 |
| 8 | हिन्दी उपलब्धि परीक्षण में प्रश्न के प्रकार एवं उनकी संख्या | 81 |
| 9 | गणित उपलब्धि परीक्षण में प्रश्न के प्रकार एवं उनकी संख्या | 82 |
| 10 | सामान्य विज्ञान उपलब्धि परीक्षण में प्रश्न के प्रकार एवं उनकी संख्या | 83 |
| 11 | सामाजिक विज्ञान उपलब्धि परीक्षण में प्रश्न के प्रकार एवं उनकी संख्या | 84 |
| 12 | रेलवे विद्यालय एवं सरस्वती विद्या मंदिरों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांक, प्रमाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक का प्रदर्शन | 88 |

| तालिका क्र0सं0 | विवरण | पृष्ठ सं0 |
|---|---|---|
| 13 | रेलवे विद्यालय एवं मिशन विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक का प्रदर्शन | 90 |
| 14 | रेलवे विद्यालय एवं व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक का प्रदर्शन | 92 |
| 15 | रेलवे विद्यालय एवं परिषदीय विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक का प्रदर्शन | 94 |
| 16 | सरस्वती विद्या मंदिरों एवं मिशन विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक का प्रदर्शन | 96 |
| 17 | सरस्वती विद्या मंदिरों एवं व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक का प्रदर्शन | 98 |
| 18 | सरस्वती विद्या मंदिरों एवं परिषदीय विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक का प्रदर्शन | 98 |
| 19 | मिशन विद्यालयों एवं व्यक्तिगत विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक का प्रदर्शन | 102 |
| 20 | मिशन विद्यालयों एवं परिषदीय विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक का प्रदर्शन | 104 |
| 21 | व्यक्तिगत विद्यालयों एवं परिषदीय विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक का प्रदर्शन | 106 |

| तालिका क्र०सं० | विवरण | पृष्ठ सं० |
|---|---|---|
| 22 | रेलवे विद्यालय तथा सरस्वती विद्या मंदिरों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहार के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी मान का प्रदर्शन | 112 |
| 23 | रेलवे विद्यालय तथा मिशन विद्यालयों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहार के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी मान का प्रदर्शन | 113 |
| 24 | रेलवे विद्यालय तथा व्यक्तिगत विद्यालयों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहार के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी मान का प्रदर्शन | 114 |
| 25 | रेलवे विद्यालय तथा परिषदीय विद्यालयों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहार के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी मान का प्रदर्शन | 115 |
| 26 | सरस्वती विद्या मंदिरों एवं मिशन विद्यालयों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी मान का प्रदर्शन | 116 |
| 27 | सरस्वती विद्या मंदिरों तथा व्यक्तिगत विद्यालयों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी मान का प्रदर्शन | 117 |
| 28 | सरस्वती विद्या मंदिरों एवं परिषदीय विद्यालयों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी मान का प्रदर्शन | 118 |

| तालिका क्र0सं0 | विवरण | पृष्ठ सं0 |
|---|---|---|
| 29 | मिशन विद्यालयों एवं व्यक्तिगत विद्यालयों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी मान का प्रदर्शन | 119 |
| 30 | मिशन विद्यालय एवं परिषदीय विद्यालयों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी मान का प्रदर्शन | 120 |
| 31 | व्यक्तिगत विद्यालयों एवं परिषदीय विद्यालयों के अध्यापकों का छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहारों के मत से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी मान का प्रदर्शन | 121 |
| 32 | रेलवे विद्यालय एवं सरस्वती विद्या मंदिरों की विद्यालयी प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव के विषय में अध्यापकों की राय से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक का प्रदर्शन | 124 |
| 33 | रेलवे विद्यालय तथा मिशन विद्यालयों की विद्यालयी प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव के विषय में अध्यापकों की राय से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक का प्रदर्शन | 125 |
| 34 | रेलवे विद्यालय तथा व्यक्तिगत विद्यालयों की विद्यालयी प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव के विषय में अध्यापकों की राय से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक का प्रदर्शन | 126 |

| तालिका क्र0सं0 | विवरण | पृष्ठ सं0 |
|---|---|---|
| 35 | रेलवे विद्यालय तथा परिषदीय विद्यालयों की विद्यालयी प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव के विषय में अध्यापकों की राय से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक का प्रदर्शन | 127 |
| 36 | सरस्वती विद्या मंदिरों एवं मिशन विद्यालयों की विद्यालयी प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव के विषय में अध्यापकों की राय से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक का प्रदर्शन | 128 |
| 37 | सरस्वती विद्या मंदिरों एवं व्यक्तिगत विद्यालयों की विद्यालयी प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव के विषय में अध्यापकों की राय से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक का प्रदर्शन | 129 |
| 38 | सरस्वती विद्या मंदिरों एवं परिषदीय विद्यालयों की विद्यालयी प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव के विषय में अध्यापकों की राय से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक का प्रदर्शन | 130 |
| 39 | मिशन विद्यालयों एवं व्यक्तिगत विद्यालयों की विद्यालयी प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव के विषय में अध्यापकों की राय से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक का प्रदर्शन | 131 |
| 40 | मिशन विद्यालयों एवं परिषदीय विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव के विषय में अध्यापकों की राय से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक का प्रदर्शन | 132 |

| तालिका क्र०सं० | विवरण | पृष्ठ सं० |
|---|---|---|
| 41 | व्यक्तिगत विद्यालयों एवं परिषदीय विद्यालयों की प्रशासन व्यवस्था एवं रखरखाव के विषय में अध्यापकों की राय से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांक, प्रामाणिक विचलन एवं टी प्राप्तांक का प्रदर्शन | 133 |
| 42 | पाँचों प्रकार के विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान प्राप्तांक, अनुशासनात्मक व्यवहारों एवं प्रशासनिक व्यवस्था से सम्बन्धित अध्यापकों के मतों के मध्यमान प्राप्तांक | 170 |

## परिशिष्ट - (ब)

1. शैक्षिक उपलब्धि के मूल प्राप्तांक

2. अनुशासनात्मक व्यवहारों से सम्बन्धित अध्यापकों के मतों के मूल प्राप्तांक

3. प्रशासनिक व्यवस्था से सम्बन्धित अध्यापकों के मतों के मूल प्राप्तांक

## परिशिष्ट - "ब"

### समान सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्रों के उपलब्धि परीक्षणों से प्राप्त विभिन्न विषयों के मूल प्राप्तांक

| क्र०सं० | विद्यालय का नाम | हिन्दी | गणित | सामान्य विज्ञान | सामाजिक विज्ञान |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | रेलवे विद्यालय | 41 | 43 | 40 | 33 |
| 2. | | 39 | 37 | 43 | 35 |
| 3. | | 41 | 43 | 38 | 34 |
| 4. | | 41 | 44 | 38 | 34 |
| 5. | | 40 | 42 | 41 | 39 |
| 6. | | 39 | 40 | 38 | 39 |
| 7. | | 41 | 44 | 36 | 32 |
| 8. | | 40 | 44 | 40 | 36 |
| 9. | | 39 | 45 | 37 | 35 |
| 10. | | 41 | 43 | 40 | 33 |
| 11. | | 35 | 38 | 32 | 25 |
| 12. | | 41 | 36 | 41 | 33 |
| 13. | | 36 | 32 | 32 | 31 |
| 14. | | 32 | 37 | 31 | 28 |
| 15. | | 35 | 32 | 33 | 38 |
| 16. | | 42 | 42 | 38 | 37 |
| 17. | | 40 | 44 | 39 | 36 |
| 18. | | 38 | 35 | 30 | 28 |
| 19. | | 41 | 42 | 40 | 36 |
| 20. | | 28 | 35 | 30 | 29 |

| क्र०सं० | विद्यालय का नाम | हिन्दी | गणित | सामान्य विज्ञान | सामाजिक विज्ञान |
|---|---|---|---|---|---|
| 21. | | 39 | 43 | 37 | 35 |
| 22. | | 41 | 32 | 42 | 38 |
| 23. | मिशन विद्यालय | 39 | 41 | 37 | 30 |
| 24. | | 31 | 26 | 30 | 31 |
| 25. | | 32 | 37 | 28 | 21 |
| 26. | | 41 | 43 | 29 | 30 |
| 27. | | 38 | 38 | 28 | 22 |
| 28. | | 34 | 37 | 28 | 20 |
| 29. | | 38 | 39 | 30 | 28 |
| 30. | | 36 | 48 | 35 | 30 |
| 31. | | 38 | 43 | 35 | 40 |
| 32. | | 39 | 40 | 25 | 41 |
| 33. | | 35 | 43 | 39 | 25 |
| 34. | | 36 | 33 | 32 | 22 |
| 35. | | 37 | 39 | 33 | 28 |
| 36. | | 40 | 47 | 35 | 30 |
| 37. | | 32 | 34 | 30 | 29 |
| 38. | | 33 | 37 | 24 | 28 |
| 39. | | 31 | 35 | 29 | 30 |
| 40. | | 30 | 36 | 20 | 29 |
| 41. | | 26 | 29 | 19 | 18 |
| 42. | | 27 | 30 | 20 | 28 |
| 43. | | 35 | 27 | 29 | 18 |

| क्र०सं० | विद्यालय का नाम | हिन्दी | गणित | सामान्य विज्ञान | सामाजिक विज्ञान |
|---|---|---|---|---|---|
| 44. | | 26 | 29 | 35 | 33 |
| 45. | | 32 | 33 | 30 | 20 |
| 46. | | 26 | 38 | 32 | 27 |
| 47. | | 24 | 36 | 30 | 31 |
| 48. | | 40 | 45 | 31 | 29 |
| 49. | | 34 | 37 | 29 | 35 |
| 50. | | 30 | 36 | 32 | 21 |
| 51. | | 30 | 35 | 31 | 25 |
| 52. | | 33 | 37 | 22 | 28 |
| 53. | | 41 | 39 | 35 | 29 |
| 54. | | 31 | 42 | 38 | 35 |
| 55. | | 40 | 38 | 40 | 37 |
| 56. | | 41 | 45 | 35 | 32 |
| 57. | | 32 | 45 | 30 | 32 |
| 58. | | 30 | 41 | 39 | 31 |
| 59. | | 35 | 39 | 36 | 35 |
| 60. | | 40 | 37 | 38 | 32 |
| 61. | | 39 | 42 | 41 | 39 |
| 62. | | 35 | 38 | 39 | 36 |
| 63. | | 41 | 45 | 42 | 40 |
| 64. | सरस्वती विद्या मंदिर | 38 | 30 | 40 | 39 |
| 65. | | 30 | 36 | 38 | 35 |
| 66. | | 41 | 45 | 40 | 38 |

| क्र0सं0 | विद्यालय का नाम | हिन्दी | गणित | सामान्य विज्ञान | सामाजिक विज्ञान |
|---|---|---|---|---|---|
| 67. | | 39 | 40 | 41 | 35 |
| 68. | | 35 | 37 | 39 | 40 |
| 69. | | 30 | 35 | 32 | 31 |
| 70. | | 32 | 46 | 42 | 39 |
| 71. | | 37 | 30 | 39 | 34 |
| 72. | | 39 | 30 | 41 | 30 |
| 73. | | 42 | 48 | 40 | 39 |
| 74. | | 41 | 39 | 36 | 29 |
| 75. | | 40 | 45 | 40 | 38 |
| 76. | | 41 | 42 | 37 | 35 |
| 77. | | 33 | 43 | 39 | 30 |
| 78. | | 40 | 36 | 37 | 32 |
| 79. | | 35 | 39 | 40 | 38 |
| 80. | | 42 | 35 | 41 | 39 |
| 81. | | 45 | 41 | 36 | 35 |
| 82. | | 30 | 35 | 38 | 37 |
| 83. | | 37 | 33 | 35 | 30 |
| 84. | | 38 | 43 | 40 | 38 |
| 85. | | 31 | 31 | 38 | 35 |
| 86. | | 40 | 40 | 30 | 28 |
| 87. | | 41 | 45 | 35 | 36 |
| 88. | | 46 | 33 | 33 | 35 |
| 89. | | 41 | 41 | 33 | 40 |

| क्र0सं0 | विद्यालय का नाम | हिन्दी | गणित | सामान्य विज्ञान | सामाजिक विज्ञान |
|---|---|---|---|---|---|
| 90. | | 42 | 38 | 35 | 41 |
| 91. | | 40 | 42 | 38 | 39 |
| 92. | | 40 | 38 | 34 | 29 |
| 93. | | 42 | 40 | 39 | 30 |
| 94. | | 39 | 36 | 36 | 32 |
| 95. | | 41 | 36 | 39 | 37 |
| 96. | | 35 | 40 | 36 | 39 |
| 97. | | 38 | 39 | 35 | 32 |
| 98. | | 33 | 38 | 32 | 36 |
| 99. | | 36 | 42 | 34 | 39 |
| 100. | | 40 | 45 | 41 | 38 |
| 101. | | 38 | 40 | 39 | 36 |
| 102. | | 35 | 40 | 34 | 36 |
| 103. | | 39 | 39 | 32 | 35 |
| 104. | | 36 | 41 | 39 | 40 |
| 105. | | 36 | 39 | 35 | 34 |
| 106. | | 33 | 35 | 39 | 32 |
| 107. | | 31 | 23 | 30 | 28 |
| 108. | | 32 | 32 | 35 | 29 |
| 109. | | 30 | 35 | 28 | 37 |
| 110. | | 30 | 32 | 28 | 26 |
| 111. | | 30 | 26 | 23 | 28 |
| 112. | | 40 | 35 | 30 | 38 |

| क्र०सं० | विद्यालय का नाम | हिन्दी | गणित | सामान्य विज्ञान | सामाजिक विज्ञान |
|---|---|---|---|---|---|
| 113. | | 44 | 38 | 31 | 39 |
| 114. | | 29 | 45 | 39 | 32 |
| 115. | | 42 | 34 | 38 | 32 |
| 116. | | 40 | 45 | 36 | 31 |
| 117. | | 36 | 42 | 36 | 32 |
| 118. | | 38 | 41 | 38 | 35 |
| 119. | | 33 | 38 | 35 | 30 |
| 120. | | 41 | 36 | 30 | 38 |
| 121. | | 42 | 33 | 34 | 39 |
| 122. | | 39 | 42 | 40 | 40 |
| 123. | | 35 | 40 | 39 | 41 |
| 124. | | 40 | 36 | 38 | 39 |
| 125. | | 41 | 40 | 39 | 42 |
| 126. | | 34 | 39 | 35 | 39 |
| 127. | | 38 | 41 | 32 | 35 |
| 128. | | 40 | 34 | 34 | 38 |
| 129. | | 35 | 36 | 31 | 36 |
| 130. | | 35 | 38 | 35 | 33 |
| 131. | व्यक्तिगत विद्यालय | 28 | 25 | 23 | 26 |
| 132. | | 23 | 22 | 22 | 31 |
| 133. | | 19 | 20 | 21 | 19 |
| 134. | | 24 | 29 | 22 | 26 |
| 135. | | 32 | 26 | 28 | 26 |

| क्र0सं0 | विद्यालय का नाम | हिन्दी | गणित | सामान्य विज्ञान | सामाजिक विज्ञान |
|---|---|---|---|---|---|
| 136. | | 20 | 20 | 40 | 26 |
| 137. | | 25 | 24 | 28 | 20 |
| 138. | | 21 | 25 | 28 | 20 |
| 139. | | 25 | 19 | 20 | 27 |
| 140. | | 23 | 24 | 21 | 27 |
| 141. | | 21 | 19 | 28 | 26 |
| 142. | | 25 | 28 | 21 | 23 |
| 143. | | 23 | 25 | 22 | 19 |
| 144. | | 21 | 19 | 21 | 21 |
| 145. | | 11 | 37 | 20 | 28 |
| 146. | | 34 | 29 | 25 | 29 |
| 147. | | 26 | 21 | 22 | 22 |
| 148. | | 21 | 20 | 22 | 23 |
| 149. | | 23 | 20 | 25 | 24 |
| 150. | | 18 | 23 | 26 | 20 |
| 151. | | 25 | 28 | 27 | 21 |
| 152. | | 22 | 27 | 28 | 22 |
| 153. | | 28 | 30 | 26 | 25 |
| 154. | | 30 | 42 | 29 | 28 |
| 155. | | 35 | 40 | 30 | 28 |
| 156. | | 32 | 39 | 38 | 30 |
| 157. | | 28 | 30 | 25 | 23 |
| 158. | | 29 | 36 | 38 | 25 |

| क्र०सं० | विद्यालय का नाम | हिन्दी | गणित | सामान्य विज्ञान | सामाजिक विज्ञान |
|---|---|---|---|---|---|
| 159. | | 25 | 20 | 33 | 26 |
| 160. | | 18 | 27 | 30 | 21 |
| 161. | | 20 | 18 | 30 | 22 |
| 162. | | 33 | 32 | 27 | 35 |
| 163. | | 41 | 42 | 22 | 38 |
| 164. | | 41 | 35 | 25 | 37 |
| 165. | | 41 | 42 | 28 | 38 |
| 166. | | 41 | 41 | 20 | 30 |
| 167. | | 41 | 40 | 31 | 38 |
| 168. | | 41 | 37 | 34 | 38 |
| 169. | | 32 | 28 | 23 | 22 |
| 170. | | 40 | 40 | 22 | 30 |
| 171. | | 22 | 25 | 34 | 26 |
| 172. | | 39 | 38 | 30 | 22 |
| 173. | | 25 | 24 | 22 | 29 |
| 174. | | 36 | 24 | 23 | 32 |
| 175. | | 41 | 28 | 22 | 21 |
| 176. | | 20 | 38 | 29 | 25 |
| 177. | | 39 | 40 | 28 | 20 |
| 178. | | 18 | 24 | 23 | 29 |
| 179. | | 29 | 38 | 35 | 37 |
| 180. | | 36 | 20 | 28 | 30 |
| 181. | | 20 | 22 | 24 | 25 |

| क्र0सं0 | विद्यालय का नाम | हिन्दी | गणित | सामान्य विज्ञान | सामाजिक विज्ञान |
|---|---|---|---|---|---|
| 182. | | 25 | 32 | 22 | 21 |
| 183. | | 36 | 21 | 29 | 27 |
| 184. | | 31 | 27 | 28 | 19 |
| 185. | | 26 | 28 | 20 | 22 |
| 186. | | 25 | 29 | 22 | 29 |
| 187. | | 33 | 29 | 27 | 31 |
| 188. | | 32 | 25 | 25 | 35 |
| 189. | | 22 | 27 | 20 | 21 |
| 190. | | 26 | 20 | 25 | 20 |
| 191. | | 30 | 21 | 23 | 23 |
| 192. | | 19 | 26 | 26 | 26 |
| 193. | | 32 | 23 | 28 | 21 |
| 194. | | 32 | 21 | 20 | 25 |
| 195. | | 27 | 27 | 25 | 23 |
| 196. | | 25 | 30 | 28 | 30 |
| 197. | | 30 | 35 | 30 | 28 |
| 198. | | 32 | 38 | 35 | 30 |
| 199. | | 33 | 36 | 34 | 19 |
| 200. | | 25 | 30 | 28 | 23 |
| 201. | | 31 | 35 | 30 | 29 |
| 202. | | 28 | 35 | 25 | 27 |
| 203. | | 30 | 32 | 28 | 24 |
| 204. | | 23 | 28 | 21 | 29 |

| क्र०सं० | विद्यालय का नाम | हिन्दी | गणित | सामान्य विज्ञान | सामाजिक विज्ञान |
|---|---|---|---|---|---|
| 205. | | 30 | 35 | 28 | 32 |
| 206. | | 29 | 41 | 30 | 28 |
| 207. | | 35 | 36 | 30 | 26 |
| 208. | | 32 | 34 | 28 | 23 |
| 209. | | 23 | 18 | 21 | 24 |
| 210. | | 30 | 28 | 20 | 25 |
| 211. | परिषदीय विद्यालय(शहरी) | 20 | 25 | 21 | 17 |
| 212. | | 33 | 19 | 20 | 29 |
| 213. | | 18 | 20 | 23 | 27 |
| 214. | | 23 | 24 | 18 | 20 |
| 215. | | 24 | 19 | 20 | 25 |
| 216. | | 25 | 14 | 19 | 23 |
| 217. | | 23 | 20 | 21 | 24 |
| 218. | | 21 | 20 | 23 | 28 |
| 219. | | 29 | 20 | 18 | 28 |
| 220. | | 26 | 21 | 17 | 20 |
| 221. | | 18 | 19 | 22 | 17 |
| 222. | | 28 | 20 | 14 | 15 |
| 223. | | 19 | 12 | 20 | 18 |
| 224. | | 22 | 13 | 15 | 20 |
| 225. | | 20 | 26 | 23 | 21 |
| 226. | | 19 | 22 | 23 | 18 |
| 227. | | 13 | 13 | 21 | 19 |
| 228. | | 24 | 24 | 20 | 21 |

| क्र0सं0 | विद्यालय का नाम | हिन्दी | गणित | सामान्य विज्ञान | सामाजिक विज्ञान |
|---|---|---|---|---|---|
| 229. | | 28 | 24 | 21 | 23 |
| 230. | | 18 | 14 | 23 | 20 |
| 231. | | 22 | 17 | 21 | 20 |
| 232. | | 17 | 20 | 19 | 22 |
| 233. | | 18 | 12 | 20 | 11 |
| 234. | | 25 | 32 | 21 | 20 |
| 235. | | 22 | 16 | 21 | 19 |
| 236. | | 23 | 23 | 24 | 22 |
| 237. | | 22 | 23 | 25 | 23 |
| 238. | | 20 | 25 | 22 | 25 |
| 239. | | 20 | 16 | 24 | 19 |
| 240. | | 31 | 35 | 21 | 28 |
| 241. | | 23 | 40 | 25 | 26 |
| 242. | | 23 | 36 | 28 | 30 |
| 243. | | 20 | 19 | 24 | 21 |
| 244. | | 22 | 20 | 23 | 26 |
| 245. | | 33 | 23 | 25 | 20 |
| 246. | | 20 | 18 | 23 | 24 |
| 247. | | 21 | 19 | 25 | 23 |
| 248. | | 30 | 38 | 30 | 28 |
| 249. | | 37 | 35 | 28 | 29 |
| 250. | | 26 | 19 | 26 | 27 |
| 251. | | 20 | 25 | 21 | 23 |

| क्र०सं० | विद्यालय का नाम | हिन्दी | गणित | सामान्य विज्ञान | सामाजिक विज्ञान |
|---|---|---|---|---|---|
| 252. | | 29 | 23 | 25 | 25 |
| 253. | | 33 | 19 | 22 | 30 |
| 254. | | 30 | 25 | 21 | 15 |
| 255. | | 18 | 20 | 25 | 19 |
| 256. | | 20 | 22 | 27 | 19 |
| 257. | | 21 | 29 | 15 | 20 |
| 258. | | 28 | 16 | 30 | 15 |
| 259. | | 20 | 13 | 19 | 22 |
| 260. | | 25 | 30 | 29 | 31 |
| 261. | | 28 | 25 | 17 | 23 |
| 262. | | 27 | 16 | 28 | 20 |
| 263. | | 21 | 19 | 29 | 27 |
| 264. | | 27 | 21 | 25 | 23 |
| 265. | | 17 | 26 | 20 | 22 |
| 266. | | 18 | 20 | 21 | 19 |
| 267. | | 20 | 22 | 19 | 25 |
| 268. | | 15 | 25 | 17 | 20 |
| 269. | | 17 | 17 | 24 | 14 |
| 270. | | 22 | 21 | 18 | 23 |
| 271. | परिषदीय विद्यालय (ग्रामीण) | 20 | 20 | 27 | 18 |
| 272. | | 23 | 12 | 21 | 20 |
| 273. | | 16 | 14 | 24 | 16 |
| 274. | | 17 | 15 | 23 | 17 |

| क्र0सं0 | विद्यालय का नाम | हिन्दी | गणित | सामान्य विज्ञान | सामाजिक विज्ञान |
|---|---|---|---|---|---|
| 275. | | 18 | 19 | 30 | 18 |
| 276. | | 20 | 14 | 31 | 18 |
| 277. | | 15 | 18 | 22 | 16 |
| 278. | | 17 | 12 | 27 | 17 |
| 279. | | 16 | 10 | 21 | 18 |
| 280. | | 18 | 19 | 20 | 16 |
| 281. | | 15 | 28 | 21 | 20 |
| 282. | | 20 | 13 | 23 | 26 |
| 283. | | 23 | 12 | 21 | 20 |
| 284. | | 15 | 17 | 20 | 18 |
| 285. | | 15 | 17 | 22 | 25 |
| 286. | | 20 | 15 | 24 | 20 |
| 287. | | 17 | 20 | 25 | 21 |
| 288. | | 20 | 18 | 23 | 22 |
| 289. | | 19 | 22 | 19 | 24 |
| 290. | | 21 | 19 | 21 | 20 |
| 291. | | 18 | 23 | 21 | 23 |
| 292. | | 23 | 22 | 18 | 25 |
| 293. | | 23 | 25 | 16 | 22 |
| 294. | | 24 | 24 | 25 | 21 |
| 295. | | 20 | 26 | 24 | 21 |
| 296. | | 17 | 15 | 20 | 19 |
| 297. | | 15 | 19 | 21 | 18 |

| क्र०सं० | विद्यालय का नाम | हिन्दी | गणित | सामान्य विज्ञान | सामाजिक विज्ञान |
|---|---|---|---|---|---|
| 298. | | 18 | 22 | 23 | 19 |
| 299. | | 19 | 22 | 18 | 20 |
| 300. | | 20 | 18 | 21 | 17 |
| 301. | | 22 | 19 | 25 | 18 |
| 302. | | 25 | 22 | 28 | 17 |
| 303. | | 19 | 21 | 25 | 20 |
| 304. | | 17 | 18 | 20 | 21 |
| 305. | | 20 | 25 | 18 | 19 |
| 306. | | 13 | 20 | 17 | 21 |
| 307. | | 09 | 28 | 20 | 15 |
| 308. | | 20 | 17 | 19 | 21 |
| 309. | | 18 | 28 | 13 | 17 |
| 310. | | 20 | 30 | 25 | 18 |
| 311. | | 22 | 21 | 22 | 22 |
| 312. | | 17 | 18 | 26 | 19 |
| 313. | | 18 | 30 | 20 | 20 |
| 314. | | 23 | 28 | 27 | 21 |
| 315. | | 22 | 25 | 24 | 20 |
| 316. | | 28 | 22 | 21 | 17 |
| 317. | | 16 | 12 | 20 | 15 |
| 318. | | 27 | 18 | 21 | 14 |
| 319. | | 25 | 23 | 20 | 20 |
| 320. | | 24 | 25 | 24 | 18 |

| क्र0सं0 | विद्यालय का नाम | हिन्दी | गणित | सामान्य विज्ञान | सामाजिक विज्ञान |
|---|---|---|---|---|---|
| 321. | | 25 | 21 | 25 | 22 |
| 322. | | 21 | 22 | 20 | 20 |
| 323. | | 23 | 26 | 22 | 17 |
| 324. | | 23 | 19 | 18 | 21 |
| 325. | | 21 | 24 | 25 | 21 |
| 326. | | 23 | 31 | 20 | 24 |
| 327. | | 20 | 26 | 24 | 29 |
| 328. | | 16 | 19 | 23 | 25 |
| 329. | | 20 | 11 | 15 | 22 |
| 330. | | 26 | 23 | 19 | 20 |
| 331. | | 13 | 19 | 22 | 24 |
| 332. | | 18 | 13 | 12 | 12 |
| 333. | | 32 | 21 | 28 | 20 |
| 334. | | 28 | 22 | 25 | 26 |
| 335. | | 20 | 25 | 23 | 28 |
| 336. | | 18 | 14 | 17 | 17 |
| 337. | | 14 | 19 | 22 | 19 |
| 338. | | 13 | 19 | 20 | 10 |
| 339. | | 23 | 13 | 22 | 17 |
| 340. | | 14 | 15 | 23 | 11 |
| 341. | | 22 | 21 | 19 | 23 |
| 342. | | 12 | 18 | 18 | 10 |
| 343. | | 19 | 19 | 24 | 17 |

| क्र०सं० | विद्यालय का नाम | हिन्दी | गणित | सामान्य विज्ञान | सामाजिक विज्ञान |
|---|---|---|---|---|---|
| 344. | | 12 | 18 | 18 | 13 |
| 345. | | 18 | 12 | 17 | 14 |
| 346. | | 18 | 15 | 12 | 19 |
| 347. | | 12 | 15 | 15 | 17 |
| 348. | | 11 | 12 | 17 | 11 |
| 349. | | 14 | 15 | 19 | 10 |
| 350. | | 26 | 16 | 20 | 24 |

## परिशिष्ट - "ब"

### अध्यापकों के मतों के अनुसार व्यवहार मापनी से प्राप्त मूल प्राप्तांक

| क्र०सं० | विद्यालय का नाम | प्राप्तांक | |
|---|---|---|---|
| | | खण्ड अ | खण्ड ब |
| 1. | रेलवे विद्यालय | 39 | 15 |
| 2. | | 33 | 15 |
| 3. | | 38 | 14 |
| 4. | | 39 | 15 |
| 5. | | 40 | 15 |
| 6. | मिशन विद्यालय | 38 | 16 |
| 7. | | 33 | 16 |
| 8. | | 31 | 18 |
| 9. | | 40 | 19 |
| 10. | | 40 | 20 |
| 11. | | 38 | 16 |
| 12. | | 38 | 15 |
| 13. | | 39 | 17 |
| 14. | | 39 | 21 |
| 15. | | 35 | 21 |
| 16. | | 36 | 22 |
| 17. | | 36 | 13 |
| 18. | | 40 | 13 |

खण्ड अ = छात्रों का अनुशासनात्मक व्यवहार
खण्ड ब = विद्यालयों की प्रशासनिक व्यवस्था एवं रखरखाव

| क्र0सं0 | विद्यालय का नाम | प्राप्तांक | |
| --- | --- | --- | --- |
| | | खण्ड अ | खण्ड ब |
| 19. | सरस्वती विद्या मंदिर | 37 | 14 |
| 20. | | 34 | 11 |
| 21. | | 40 | 18 |
| 22. | | 39 | 18 |
| 23. | | 39 | 14 |
| 24. | | 38 | 11 |
| 25. | | 38 | 14 |
| 26. | | 38 | 11 |
| 27. | | 40 | 15 |
| 28. | | 39 | 20 |
| 29. | | 38 | 15 |
| 30. | | 36 | 15 |
| 31. | | 40 | 14 |
| 32. | | 33 | 14 |
| 33. | | 37 | 16 |
| 34. | | 40 | 15 |
| 35. | | 40 | 15 |
| 36. | | 40 | 15 |
| 37. | | 37 | 15 |
| 38. | | 37 | 13 |
| 39. | | 40 | 15 |
| 40. | | 39 | 15 |
| 41. | व्यक्तिगत विद्यालय | 38 | 20 |

| क्र०सं० | विद्यालय का नाम | प्राप्तांक | |
|---|---|---|---|
| | | खण्ड अ | खण्ड ब |
| 42. | | 17 | 07 |
| 43. | | 18 | 09 |
| 44. | | 40 | 14 |
| 45. | | 14 | 09 |
| 46. | | 22 | 18 |
| 47. | | 39 | 13 |
| 48. | | 38 | 13 |
| 49. | | 39 | 13 |
| 50. | | 40 | 14 |
| 51. | | 39 | 13 |
| 52. | | 27 | 05 |
| 53. | | 32 | 08 |
| 54. | | 31 | 07 |
| 55. | | 35 | 06 |
| 56. | | 40 | 07 |
| 57. | | 40 | 14 |
| 58. | | 40 | 19 |
| 59. | | 40 | 15 |
| 60. | | 28 | 14 |
| 61. | | 39 | 19 |
| 62. | | 35 | 11 |
| 63. | | 37 | 17 |
| 64. | | 39 | 12 |
| 65. | | 39 | 10 |

| क्र0सं0 | विद्यालय का नाम | प्राप्तांक | |
|---|---|---|---|
| | | खण्ड अ | खण्ड ब |
| 66. | | 40 | 15 |
| 67. | | 34 | 11 |
| 68. | | 34 | 11 |
| 69. | | 34 | 11 |
| 70. | | 34 | 11 |
| 71. | परिषदीय विद्यालय | 33 | 08 |
| 72. | | 34 | 07 |
| 73. | | 40 | 14 |
| 74. | | 36 | 08 |
| 75. | | 25 | 06 |
| 76. | | 36 | 11 |
| 77. | | 37 | 08 |
| 78. | | 30 | 13 |
| 79. | | 32 | 09 |
| 80. | | 31 | 14 |
| 81. | | 28 | 14 |
| 82. | | 36 | 07 |
| 83. | | 34 | 06 |
| 84. | | 31 | 05 |
| 85. | | 36 | 09 |
| 86. | | 38 | 11 |
| 87. | | 31 | 08 |
| 88. | | 39 | 09 |
| 89. | | 34 | 05 |

| क्र०सं० | विद्यालय का नाम | प्राप्तांक | |
|---|---|---|---|
| | | खण्ड अ | खण्ड ब |
| 90. | | 39 | 08 |
| 91. | | 36 | 07 |
| 92. | | 40 | 14 |
| 93. | | 39 | 15 |
| 94. | | 30 | 10 |
| 95. | | 31 | 10 |
| 96. | | 39 | 10 |
| 97. | | 39 | 11 |
| 98. | | 32 | 06 |
| 99. | | 39 | 10 |
| 100. | | 39 | 10 |
| 101. | | 27 | 05 |
| 102. | | 40 | 02 |
| 103. | | 39 | 02 |
| 104. | | 39 | 02 |
| 105. | | 39 | 02 |
| 106. | | 38 | 10 |
| 107. | | 24 | 10 |
| 108. | | 25 | 10 |
| 109. | | 24 | 10 |
| 110. | | 23 | 13 |
| 111. | | 27 | 07 |
| 112. | | 34 | 05 |
| 113. | | 40 | 08 |

| क्र0सं0 | विद्यालय का नाम | प्राप्तांक | |
|---|---|---|---|
| | | खण्ड अ | खण्ड ब |
| 114. | | 38 | 05 |
| 115. | | 40 | 08 |
| 116. | | 40 | 08 |
| 117. | | 25 | 05 |
| 118. | | 26 | 04 |
| 119. | | 27 | 04 |
| 120. | | 21 | 04 |
| 121. | | 26 | 12 |

## परिशिष्ट - (स)

1. हिन्दी, गणित, सामान्य विज्ञान
   तथा सामाजिक विज्ञान के प्रश्नपत्र

2. व्यवहार मापनी

3. सामाजिक-आर्थिक स्तरमापनी (शहरी)
   (एस०पी० कुलश्रेष्ठ)

4. सामाजिक-आर्थिक स्तरमापनी (ग्रामीण)
   (एस०पी० कुलश्रेष्ठ)

# हिन्दी उपलब्धि परीक्षण

## कक्षा–८

छात्र का नाम ... ... ... ... ... ... ... –

विद्यालय का नाम ... ... ... ... ... ... ...

ग्राम तथा जिला ... ... ... ... ... ... ... ...

निम्नलिखित निर्देशों को ध्यान पूर्वक पढ़ें तथा दिये गये प्रश्नों को हल करना प्रारम्भ करें ।

**निर्देश—**

१– आपको प्रश्न पत्र के सभी प्रश्नों को हल करना है ।

२— प्रश्नों के उत्तर का सही ज्ञान होने पर ही लिखना है अंदाज से नहीं ।

३– नीचे जो प्रश्न दिये गये हैं उनके सामने चार उत्तर दिये गये हैं । इन चार उत्तरों में केवल एक उत्तर सही है । सही उत्तर वाले कोष्टक में ( √ ) का चिन्ह अंकित करना है ।

**उदाहरण—**

तुलसीदास जी भक्त थे–

अ– कृष्ण के [ ]

ब– राम के [ √ ]

स– देश के [ ]

द– किसी के नहीं ( )

१— प्रेम अहिंसा तथा बन्धुत्व किसके व्याख्यान का अंश है ?

अ— जवाहर लाल नेहरू ( )

ब प्रेमचन्द्र ( )

स— महात्मा गांधी ( )

द— सुंदर्शन ( )

२— नर हो न निराश करो मन को पाठ के लेखक कौन हैं ?

अ— सूरदास ( )

ब— सुमित्रा नन्दन पंत ( )

स— मैथली शरण गुप्त ( )

द— रसखान ( )

३— द्रोणाचार्य की मृत्यु के पश्चात कौरवों की सेना का सेनापति कौन बनाया गया ?

अ— शल्य ( )

ब— भीष्म ( )

स— कर्ण ( )

द— दुर्योधन ( )

४— कर्ण ने अपनी माता कुंती को क्या वचन दिया ?

अ— मैं अर्जुन को नहीं मारूगा ( )

ब— मैं केवल अर्जुन को मारूगा ( )

स - मैं तुम्हारे किसी भी पुत्र को नहीं मारूगा ( )

द— मैं कौरवों की तरफ से युद्ध नही करूंगा ( )

५— महा भारत युद्ध में किसके पहिये जमीन में धस गये ?

अ— अर्जुन [ ]

ब— कर्ण [ ]

स— दुर्योधन [ ]

द- युधिष्ठिर [ ]

६— अर्जुन तथा कर्ण में से युद्ध में कौन मारा गया ?

अ— अर्जुन [ ]

ब— कर्ण [ ]

स— दोनों [ ]

द— कोई नहीं [ ]

७— शिवाजी की माता का क्या नाम था ?

अ— लक्ष्मीबाई [ ]

ब— जीजा बाई [ ]

स— मीरा बाई [ ]

द— कोई नहीं [ ]

८- दीन बन्धु एण्डूज कौन था ?

अ- अंग्रेज ( )

ब- भारतीय ( )

स- अफ्रीकन ( )

द- नैपाली ( )

९- उड़ीसा का प्रमुख मंदिर कौन है ?

अ- हनुमान मंदिर ( )

ब- कृष्ण मंदिर ( )

स- जगन्नाथ मँदिर ( )

द- कोई सही नहीं ( )

१०- मैं सुमन हूं पाठ के लेखक कौन है ?

अ- सुभद्रा कुमारी ( )

ब- नीरज ( )

स- द्वारका प्रसाद माहेश्वरी ( )

द- सुमित्रा नन्दन पंत [ ]

११- स्वामी विवेकानन्द का जन्म कब हुआ था ?

अ- १२-१-१८६३ ( )

ब- १-१-१८४० ( )

स- २-१०-१८७० ( )

द- ६-१-१८६३ ( )

१२- सूरदास जी ने अपनी कविताओं में किस का वर्णन किया है ?

अ- राम ( )

ब- कृष्ण ( )

स- भरत [ ]

द- किसी का भी नहीं ( )

निर्देश-

नीचे कुछ शब्द दिये गये है उनके सामने चार पर्यायवाची शब्द दिये गये हैं। इन चार में से सही पर्यायवाची शब्द के आगे कोष्ट में [ √ ] का निशान लगाना है।

१३- कमल-

अ- पिक ( )

ब- अब्ज ( )

स- नलिन ( )

द- अंशु ( )

१४- आकाश-

अ- वायु मण्डल ( )

ब- नभ ( )

स- मेघ वाहन ( )

द- मेघ ( )

१५– आंख–

अ– सुधा ( )

ब– चक्षु ( )

स– शिल्पी ( )

द– कोई सही नहीं ( )

१६– सूर्य–

अ– हिमकर ( )

ब– नभकर ( )

स– दिनकर ( )

द– शशि ( )

१७– चन्द्रमा–

अ– मलयज ( )

ब– हिमकर ( )

स– ज्योत्स ( )

द– आशु [ ]

१८– गणेश–

अ– नागपति ( )

ब– लोकेश ( )

स– गणपति ( )

द– नभपति ( )

१९– पानी–

अ– जलज ( )

ब– नीरज ( )

स– नीर [ ]

द– नीरधि ( )

२०– राजा–

अ– नर ( )

ब– नरपति ( )

स– नरेश ( )

द– निरभी ( )

२१– वायु–

अ– पावन ( )

ब– पवन ( )

स– पावनी ( )

द– भारती ( )

निर्देश—

नीचे कुछ प्रश्न दिये गये है इन प्रश्नों के उत्तर चार विकल्पों में दिये गये हैं। जो विकल्प सही हो उसके सामने के कोष्टक में सही का निशान [ √ ] लगाना है ?

२२— अति + उन्नत = अत्युन्नत में कौन सी सन्धि है।

अ— बृद्धि संधि [ ]
ब— यण संधि [ ]
स— गुण संधि [ ]
द— दीर्घ संधि [ ]

२३— विद्यालय = विद्या + आलय में कौन सी सन्धि है ?

अ— दीर्घ सन्धि [ ]
ब— गुण सन्धि [ ]
स— यण सन्धि [ ]
द— अयादि सन्धि [ ]

२४— शचि + इन्द्र = शचीन्द्र में कौन सी सन्धि है ?

अ— स्वर सन्धि [ ]
ब— व्यंजन सन्धि [ ]
स— विसर्ग सन्धि [ ]
द- कोई सत्य नहीं है [ ]

२५- उत् + चारण = उच्चारण में कौन सी सन्धि है ?

अ— व्यंजन सन्धि ( )
ब— विसर्ग सन्धि ( )
स स्वर सन्धि ( )
द— कोई नहीं ( )

२६ मनुः + भाव = मनोभाव में कौन सी सन्धि है ?

अ— स्वर सन्धि ( )
ब- व्यंजन सन्धि ( )
स- विसर्ग सन्धि ( )
द- कोई सत्य नहीं ( )

निर्देश—

नीचे कुछ कथन दिये गये हैं जिन्हे हम एक शब्द द्वारा व्यक्त कर सकते है। यह एक शब्द दाहिनी ओर दिये गये एक अक्षर से शुरू होता है। इस अक्षर को ध्यान में रखकर शब्द को पूरा करना है।

उदाहरण- जो ईश्वर को न मानता है — ( ना )

ईश्वर को न मानने वाला नास्तिक होता है। नास्तिक ना से प्रारम्भ होता है। अतः हम खाली स्थान पर नास्तिक अंकित कर देंगे।

२७— जिसके आर पार देखा जा सके प··· ···
२८— जो दूर की सोचता है दू··· ···
२९— जिसका कोई आकार न हो नि··· ···
३०— जिसके चार पैर हो चौ··· ···
३१— सत्य बोलने वाला व्यक्ति स··· ···
३२— गणित को जानने वाला ग··· ···
३३— जिसके माता पिता मर गये हो अ··· ···

निर्देश—

नीचे कुछ अपूर्ण वाक्य दिये गये हैं। हर वाक्य के सामने चार शब्द लिखे हुये हैं। उन चार शब्दों में से एक शब्द वाक्य के अर्थ को पूरा करता है। ऐसे शब्द को चुनकर वाक्य के खाली स्थान पर भरना है।

उदाहरण— बसन्त ऋतु में बाग की शोभा देखते ही बनती है।

अ- शीतलता ब- शोभा स- बनावट स- उपज

३४— अपने सम्बन्धियों को सामने देखकर अर्जुन को ··· ··· हुआ।

अ— अनुराग ब— क्रोध स— मोह द— पश्चाताप

३५— युद्ध स्थल में ··· ··· ने भागवत गीता का उपदेश दिया।

अ— युधिष्ठिर ब— भीष्म स— द्रोणाचार्य द— श्रीकृष्ण

३६— बार बार असफलता होने पर मनुष्य ··· ··· हो जाता है।

अ- प्रोत्साहित ब— निर्बल स— थकावट द— हतोत्साहित

३७— पृथ्वी के अन्दर सोना, चांदी, हीरा आदि रत्नों की खानें होने के कारण इसे ··· ··· कहा जाता है।

अ- रत्ना ब- रत्नगर्भा स- रत्नप्रभा द- रत्नधारिणी

३८— महात्मा गान्धी का जन्म २ ··· ··· को हुआ था।

अ- सितम्बर ब- अगस्त स- अक्टूबर द- जनवरी

३९— मनुष्य संसार का सर्वश्रेष्ठ ··· ··· कहलाता है।

अ— व्यक्ति ब— प्राणी स- सुर द- असुर

४०— सन्तान के चरित्र निर्माण में ··· ··· का बहुत हाथ होता है।

अ- पिता ब- माता स- विद्यालय द- भाई

निर्देश—

नीचे कुछ कहावतें एवं मुहावरे दिये गये हैं जिनके नीचे एक क्रम में चार वाक्य लिखे गये हैं। चार वाक्यों में एक वाक्य सही अर्थ बतलाता है। जो वाक्य सही प्रतीत हो उसके सामने कोष्ठक में ( √ ) का निशान अंकित करें।

उदाहरण—

नौ दो ग्यारह हो जाना

अ- भिन्न भिन्न दिशा में जाना ( )

ब- नौ तथा दो मिल कर ग्यारह होना ( )

स- कार्य पूर्ण न होना ( )

द- भाग खड़ा होना [ √ ]

४१— फूला न समाना—

अ- स्वस्थ होना [ ]

ब- प्रसन्न होना [ ]

स- दुःखी होना [ ]

द- गम में डूबना [ ]

४२- आंख में धूल झोंकना

अ— अपमानित करना [ ]

ब— दुःखी करना [ ]

स- धोखा देना [ ]

द- उपहार देना [ ]

४३— नाच न आवे आंगन टेढ़ा

अ— व्यर्थ की बातें करना ( )

ब— भाग्य को दोषी बतलाना ( )

स— कार्य करने की योग्यता न होना ( )

द— कार्य हेतु व्यवस्था सही न होना ( )

४४— दिया तले अंधेरा होना

अ— दीपक का प्रयोग न करना ( )

ब— व्यंग करना ( )

स— अपना दोष स्वयं न दिखना ( )

द— दीपक का प्रकाश कम होना ( )

४५— श्रीगणेश करना

अ— पूजा करना ( )

ब— गणेश जी की स्थापना करना ( )

स— कार्य आरम्भ करना [ ]

द— कार्य समाप्त करना ( )

४६— जिसकी लाठी उसकी भैंस

अ— शक्ति की विजय ( )

ब— लाठी का सहारा ( )

स— अधिकार का दुरुपयोग ( )

द— अधिकार का सदुपयोग ( )

४७— दोनों हाथों में लड्डू होना

अ— अधिक मात्रा में लड्डू प्राप्त होना ( )

ब— दूसरों की मदद करना ( )

स— हर प्रकार से लाभ में रहना ( )

द— भाग्य पर निर्भर होना [ ]

४८— अकल बड़ी या भैंस—

अ— आकार से बड़ा होना ( )

ब— बुद्धि का शारीरिक बल से श्रेष्ठ होना ( )

स— भैंस जानवर का होशियार होना ( )

द— मनुष्य से जानवर का बुद्धिमान होना ( )

४९— छिन्न भिन्न होना—

अ— इधर उधर बिखर जाना ( )

ब— एक दूसरे के विपरीत होना ( )

स— टूट जाना ( )

द— भाग जाना ( )

५०— अंधे की लाठी होना—

अ— अंधे को दिखाई न देना ( )

ब— एकमात्र सहारा होना ( )

स— अंधे का सहयोग करना ( )

द— अंधे को सहयोग न करना ( )

# गणित उपलब्धि परीक्षण

## कक्षा–८

छात्र का नाम ... ... ... ... ... ... ... –

विद्यालय का नाम ... ... ... .. ... ... ...

ग्राम तथा जिला ... ... ... ... ... ... ... ...

निम्नलिखित निर्देशों को ध्यान पूर्वक पढें तथा दिये गये प्रश्नों को हल करना प्रारम्भ करें ।

**निर्देश—**

१– आपको प्रश्न पत्र के सभी प्रश्नों को हल करना है ।

२— प्रश्नों के उत्तर का सही ज्ञान होने पर ही लिखना है अंदाज से नहीं ।

३– नीचे जो प्रश्न दिये गये हैं उनके सामने चार उत्तर दिये गये हैं । इन चार उत्तरों में केवल एक उत्तर सही है । सही उत्तर वाले कोष्टक में ( √ ) का चिन्ह अंकित करना है ।

**उदाहरण—**

एक कुन्टल में कि० ग्राम होते हैं–

अ– ५० कि० ग्राम [ ]

ब– १०० कि० ग्राम [ √ ]

स– १० कि० ग्राम [ ]

द– १००० कि० ग्राम ( )

१— एक डेकामीटर में होते हैं —

अ— १० मीटर [ ]

ब— १०० मीटर [ ]

स— ५० मीटर [ ]

द— कोई सत्य नहीं [ ]

२— एक हजार मीटर का होता है—

अ— १ किलोमीटर [ ]

ब— १ डेकामीटर [ ]

स— १ हेक्टोमीटर [ ]

द— कोई सत्य नहीं [ ]

३— एक मीटरी टन में होते हैं—

अ- १० कुन्तल [ ]

ब- १०० कुन्तल [ ]

स- ५० कुन्तल [ ]

द- १ कुन्तल [ ]

४— एक किलोलीटर में होते हैं —

अ— १० लीटर [ ]

ब— १०० लीटर [ ]

स— १००० लीटर [ ]

द— १०,००० लीटर [ ]

५— एक एअर बराबर होता है —

अ— १००० वर्गमीटर [ ]

ब— १०० वर्गमीटर [ ]

स— १ वर्ग किलोमीटर [ ]

द— कोई सही नहीं [ ]

६— एक डेसीएअर में होते हैं-

अ— १० वर्गमीटर [ ]

ब— १ वर्गमीटर [ ]

स— १०० वर्गमीटर [ ]

द— ५० वर्गमीटर [ ]

७— दो मजदूरों की ३ दिन की मजदूरी ३० रुपये है तो ४ मजदूरों की तीन दिन की मजदूरी क्या होगी ?

अ- ३० रु० ( )

ब- ५० रु० ( )

स- ६० रु० ( )

द- १०० रु० ( )

८— तीन अंकों की बड़ी से बड़ी पूर्ण संख्या क्या होगी ? जो १०, १५, वा २५ से पूरी पूरी बार बट जाय ?

अ— ३००　　( )
ब— ५००　　( )
स— ९००　　( )
द— १००　　( )

९— आयत का क्षेत्रफल होता है—

अ— लम्बाई × चौड़ाई　　( )
ब— लम्बाई × चौड़ाई × ऊंचाई　　( )
स— २ × लम्बाई　　( )
द— कोई सत्य नहीं　　( )

१०— π का मान होता है—

अ— २२/७　　( )
ब— १/७　　( )
स— ७/२२　　( )
द— (२२/७)²　　( )

११— मिश्रधन कहते हैं—

अ— मूलधन + समय　　( )
ब— मूलधन + ब्याज　　( )
स— मूलधन + ब्याज + समय　　( )
द— कोई सत्य नहीं　　[ ]

१२— एक वृत्ताकार आकृति का क्षेत्रफल होता है—

अ— $2\pi r^2$　　( )
ब— $2\pi r$　　( )
स— $\pi r^2$　　( )
द— $\pi$　　( )

१३— १८ रु० का ३ : २ : १ होता है—

अ— ४ रु०, २ रु०, १ रु०　　( )
ब— ९ रु०, ६ रु०, ३ रु०　　( )
स— ३ रु०, २ रु०, १ रु०　　[ ]
द— ५ रु०, ६ रु०, ३ रु०　　( )

१४— ९ का वर्गमूल क्या होगा ?

अ— ३　　( )
ब— ४　　( )
स— २　　( )
द— सभी गलत　　( )

१५— एक आयताकार पिंड की लम्बाई ८ सेमी०, चौड़ाई ३ सेमी०, ऊंचाई २ सेमी० हो तो पिंड का आयतन क्या होगा ?

अ— ४२　　( )
ब— ४८　　( )
स— ५६　　( )
द— १३　　( )

१६— एक घन के तल का क्षेत्रफल १६ वर्ग सेमी० है घन का आयतन क्या होगा ?

अ- ७६ ( )
ब- १६ ( )
स- ६४ ( )
द- ३६ ( )

१७— एक हेक्टेयर खेत का लगान ११ रु० ७५ पैसा हैं ५६ हेक्टेयर खेत का लगान व्यवहार गणित द्वारा क्या होगा ?

अ— ५६० [ ]
ब— ६६१.७५ [ ]
स— ३७१.२ [ ]
द— ४३२.३ [ ]

१८— ३५० रु० का १२½% वार्षिक व्याज की दर से ३ वर्ष का चक्रवृद्धि व्याज होगा—

अ— १२० [ ]
ब— ४५.२० [ ]
स— १४८.३४ [ ]
द— १३८ [ ]

१९— वह संख्या ज्ञात करो जिसका ५०% ४० है।

अ— ६० [ ]
ब— ८० [ ]
स— ७० [ ]
द— ३० [ ]

२०— २०० रु० कितने का १०% है ?

अ- ३००० रु० का [ ]
ब- १००० रु० का [ ]
स- ४००० रु० का [ ]
द- १००० रु० का [ ]

२१— ८०० रु० का २% होगा—

अ— २० [ ]
ब— १६ [ ]
स— १४ [ ]
द— २ [ ]

२२- एक समकोण △ की लम्ब भुजा ४० मी० आधार भुजा ५० मी० हो तो उसका क्षेत्रफल क्या होगा ?

अ— ८०० [ ]
ब— ३२०० [ ]
स— १६०० [ ]
द— १००० [ ]

२३- ०.०३ में कितना जोड़ने पर मान ०.३ हो जायेगा-

अ- ०.३ ( )
ब- ०.२७ ( )
स- ०.१५ ( )
द- ०.००१ ( )

२४- २×.३×.१ का गुणनफल होगा-

अ- ०.०६ ( )
ब- ०.००६ ( )
स- ६.००० ( )
द- ०.६०० ( )

२५- २५ ÷ ०.२५ का मान होगा-

अ- १ ( )
ब- ०.१ ( )
स- १० ( )
द- १०० ( )

[ खण्ड ब ]

२६- $\frac{क^5 ख^3}{क^2 ख^2}$ का मान होगा-

अ- $क^7 ख^3$ ( )
ब- $क^7 ख^5$ ( )
स- $क^3 ख$ ( )
द- $क^2 ख$ [ ]

२७- $(कख^2) \times ३क$ का मान होगा-

अ- $३क^2 ख^2$ ( )
ब- $३क^4 ख^2$ ( )
स- $३क ख^3$ ( )
द- $३क^4 ख^5$ ( )

२८- ६-य=य.६ हो तो य का मान होगा-

अ- .६ ( )
ब- १२ ( )
स- ० ( )
द- ७ ( )

२९- $(२ग^2)^3$ का मान होगा-

अ- $८ग^6$ ( )
ब- $२ग^6$ ( )
स- $२ग^5$ ( )
द- $८ग^5$ ( )

३०— ३/य में कितने का गुणा करने पर गुणनफल य/३ हो जाता है ? [५.]

अ— य/३ [ ]

ब— य/९ [ ]

स— ९/य [ ]

द— $य^2$/९ [ ]

३१— यदि य=—१ तो $६य^2$—२य+३ का मान होगा-

अ— ११ [ ]

ब— ९ [ ]

स— ४ [ ]

द— ७ [ ]

३२— एक छात्र इस समय ३य वर्ष है (२य+३) वर्ष बाद उसकी उम्र क्या होगी ?

अ- य+६ [ ]

ब- ६य+३ [ ]

स- ३य+५ [ ]

द- य [ ]

३३— यदि ०.११ य=२.२ हो तो य का मान होगा-

अ— २०.०० [ ]

ब— ०.२० [ ]

स— ०.००२ [ ]

द— २.०० [ ]

३४— क में से (ख—२) घटाने पर प्राप्त होगा-

अ— ख—२+क [ ]

ब— क—ख—२ [ ]

स— क—ख—२ [ ]

द— क—ख+२ [ ]

३५— एक चिड़िया का मूल्य बल्ले के मूल्य से १२ रु० कम है। यदि दोनों का मूल्य १८ रु० हो तो चिड़िया का मूल्य क्या होगा ?

अ— १६ रु० [ ]

ब— १५ रु० [ ]

स— १२ रु० [ ]

द— ३ रु० [ ]

३६— $(२य+र)^2$ का मान होगा-

अ- $४य^2+र^2+४यर$ ( )

ब- $४य^2+र^2$ ( )

स- $४य^2+र^2—४यर$ ( )

द- $४य^2—र^2$ ( )

३७— ३ य सेमी० लम्बे तथा २ र सेमी० चौड़े आयत का क्षेत्रफल क्या होगा ?

अ— ५ यर ( )

ब— यर ( )

स— ६ यर ( )

द— कोई सत्य नहीं ( )

३८— ५य+र तथा ४य—र का योग कितना होगा ?

अ— ९य ( )

ब— य ( )

स— ९य+२र ( )

द— य+र ( )

३९— तीन भुजाओं से घिरे हुए क्षेत्र को क्या कहते हैं ?

अ— चतुर्भुज ( )

ब— त्रिभुज ( )

स— वर्ग ( )

द— आयत ( )

४०— चारों बराबर भुजाओं वाले चतुर्भुज को क्या कहते हैं ?

अ— वर्ग ( )

ब— समान्तर चतुर्भुज ( )

स— आयत ( )

द— कोई सत्य नहीं ( )

४१— त्रिभुज के तीनों अन्तःकोणों का योग कितना होता है ?

अ— चार समकोण ( )

ब— दो समकोण ( )

स— एक समकोण ( )

द— तीन समकोण ( )

४२— दो त्रिभुज सर्वांगसम होते हैं यदि—

अ— एक त्रिभुज का एक कोण दूसरे त्रिभुज के एक कोण के बराबर हो ( )

ब— एक त्रिभुज की तीनों भुजायें दूसरे त्रिभुज की तीनों भुजायें आपस में बराबर हों ( )

स— दोनों त्रिभुज की आधार भुजा बराबर हो ( )

द— कोई सत्य नहीं ( )

४३— चतुर्भुज तब समान्तर कहलाता है जब कि—

अ— उसकी भुजायें बराबर हों ( )

ब— उसकी आमने सामने की भुजायें समान्तर हों ( )

स— उसकी भुजायें समान न हों ( )

द— उसके सभी कोण बराबर हों ( )

४४- आयत के सभी कोण होते हैं-

अ- समकोण ( )

ब- अधिक कोण ( )

स- न्यून कोण ( )

द- कुछ समकोण तथा कुछ न्यून कोण ( )

४५- समकोण त्रिभुज में कर्ण की भुजा होती है-

अ- सबसे बड़ी ( )

ब - सबसे छोटी ( )

स- सभी के बराबर ( )

द- कोई सत्य नहीं ( )

४६- समान्तर रेखायें कौन होती हैं ?

अ- जो आपस में कभी नहीं मिलती ( )

ब- जो आपस में मिल जायें ( )

स- जो कुछ आगे चलकर मिल जायें ( )

द- कोई सही नहीं ( )

४७- समकोण त्रिभुज में कर्ण पर बने वर्ग शेष दो भुजाओं पर बने वर्ग में क्या सम्बन्ध होता है ?

अ- कर्ण पर बना वर्ग शेष भुजाओं पर बने वर्ग के बराबर होता है ( )

ब- कर्ण पर बना वर्ग शेष भुजाओं पर बने वर्ग के बराबर होता है ( )

स- एक भुजा के वर्ग के बराबर ( )

द- कोई सत्य नहीं ( )

४८- समद्विबाहु त्रिभुज कहते हैं-

अ- जिसकी तीनों भुजायें बराबर हों ( )

ब- जिसकी दो भुजायें बराबर हों ( )

स- जिसकी एक भी भुजा बराबर न हो ( )

द- जिसके तीनों कोण बराबर हों ( )

४९- किसी बिन्दु पर बनने वाले कोण का मान कितना होता है ?

अ- एक समकोण ( )

ब- दो समकोण ( )

स- तीन समकोण ( )

द- चार समकोण ( )

५०- शीर्षाभिमुख कोण परस्पर कैसे होते हैं ?

अ- सम्पूरक ( )

ब- कोटि पूरक ( )

स- बराबर ( )

द- कोई सत्य नहीं ( )

# सामान्य विज्ञान उपलब्धि परीक्षण

## कक्षा–८

छात्र का नाम ... ... ... ... ... ... ... —

विद्यालय का नाम ... ... ... ... ... ... ...

ग्राम तथा जिला ... ... ... ... ... ... ... ...

निम्नलिखित निर्देशों को ध्यान पूर्वक पढे तथा दिये गये प्रश्नों को हल करना प्रारम्भ करें ।

**निर्देश—**

१– आपको प्रश्न पत्र के सभी प्रश्नों को हल करना है ।

२— प्रश्नों के उत्तर का सही ज्ञान होने पर ही लिखना है अंदाज से नहीं ।

३– नीचे जो प्रश्न दिये गये हैं उनके सामने चार उत्तर दिये गये हैं । इन चार उत्तरों में कवल ए. उत्तर सही है । सही उत्तर वाले कोष्टक में ( ✓ ) का चिन्ह् अंकित करना है ।

**उदाहरण—**

किस क्रिया में भौतिक परिवर्तन होता है ?

अ– दूध से दही बनना ( )

ब– साबुन तैयार करना [ ]

स– लकड़ी का जलाना [ ]

द– बर्फ से पिघलकर पानी बनना [ ✓ ]

१— जिस बल से पृथ्वी प्रत्येक वस्तु को नीचे की ओर खींचती है उसे हम कौन सा बल कहते है ?

अ— रसाकर्षण बल ( )

ब— गुरुत्वा कर्षण बल ( )

स— उप्लाबन बल ( )

द— घर्षण बल ( )

२— किसी ठोस वस्तु का आयतन ज्ञात करने के लिये किस यंत्र का प्रयोग करते है ?

अ— फलास्क ( )

ब— नपना गिलास ( )

स— पिपेट ( )

द— बीकर ( )

३— किसी वस्तु द्वारा प्रति सेकेण्ड में किये गये दोलनों की संख्या को क्या कहते हैं ?

अ— तरंग ( )

ब— आवृत्ति ( )

स— ध्वनि ( )

द— चाल ( )

४— किसी ठोस को हवा में तौलने के पश्चात पानी में तौलने पर भार पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

अ— भार समान रहता है ( )

ब— भार में कमी आती है ( )

स— भार बढ़ जाता हैं ( )

द— भार चार गुना हो जाता है [ ]

५— वायु में ध्वनि की चाल प्रति सैकेण्ड होती है —

अ— ३४० मीटर/सैकेण्ड [ ]

ब— ३३२ मीटर/सैकेण्ड [ ]

स— ३२०० मीटर/सैकेण्ड [ ]

द— कोई सही नहीं है [ ]

६— लकड़ी के टुकड़े को पानी में डालने पर वह पानी के ऊपर तैरता रहता है क्योंकि

अ— लकड़ी हल्की होती है [ ]

ब— लकड़ी का घनत्व पानी के घनत्व से अधिक होता है [ ]

स— लकड़ी का घनत्व पानी की अपेक्षा कम होता है [ ]

द— कोई सही नहीं है [ ]

७— किसी एक प्रकार की उर्जा को दूसर प्रकार की ऊर्जा में बदलने को क्या कहते हैं ?

अ— ऊर्जा का स्थानान्तरण [ ]

ब— ऊर्जा का स्थरीकरण [ ]

स— ऊर्जा का रूपान्तरण ( )

द— गतिज ऊर्जा ( )

८– प्रकाश क्या हैं ?

अ– प्रकाश चमकदार गैस है ( )

ब– प्रकाश गैसों का मिश्रण है ( )

स– प्रकाश एक ऊर्जा है ( )

द– प्रकाश एक शक्ति है ( )

९ – पार दर्शी वस्तु किसे कहते हैं ?

अ– जिसके आर पार देखा जा सके ( )

ब– जिसके आर पार न देखा जा सके ( )

स– ठोस पदार्थ जो रंगहीन हो ( )

द– जिससे होकर वायु गुजर सके ( )

१०– आमने सामने रखे समतल दर्पणों के बीच बैठे व्यक्ति के कितने चित्र बनते हैं ?

अ– एक चित्र ( )

ब– बहुत से चित्र ( )

स– पांच चित्र ( )

द– एक भी नहीं ( )

११– समतल दर्पण से दो फिट दूर खड़े होने पर प्रतिबिम्ब कहां बनता है ?

अ– दर्पण के दो फिट पीछे [ ]

ब– दर्पण के दो फिट आगे ( )

स– दर्पण के चार फिट पीछे ( )

द– दर्पके चार फिट आगे ( )

१२– किसी तार में प्रवाहित विद्युत धारा का मान ज्ञान करने वाले यंत्र को क्या कहते है ?

अ– प्रतिरोध मापक ( )

ब– आमीटर ( )

स– बोल्टमीटर [ ]

द– स्पीडो मीटर ( )

१३– चुम्बक का आकर्षण किस धातु से होता है ?

अ– तांबा ( )

ब – पीतल ( )

स– लोहा ( )

द– चांदी ( )

१४– परमाणु कौन कौन से मूल कणों से मिलकर बनते हैं ?

अ– न्यूट्रान + इलेक्ट्रान [ ]

ब– प्रोट्रान + न्यूट्रान ( )

स– प्रोट्रान + न्यूट्रान + इलेक्ट्रान ( )

द– इलेक्ट्रान + प्रोट्रान ( )

१५— प्रोटान पर कौन सा विद्युत आवेश होता है ?

अ- धन आवेश ( )

ब- ऋण आवेश ( )

स- उदासीन ( )

द- कोई सही नहीं ( )

१६- वायु मण्डल में ग्रह अपने कक्ष में घूमते हैं—

अ- क्यों कि अपने आधार पर टिके हैं ? [ ]

ब- क्यों कि यह एक दूसरे पर आकर्षण बल डालते हैं ? [ ]

स- सूर्य अपने असीम बल के कारण इन्हें घुमा रहा है [ ]

द- ग्रहों की स्वयं की गति के कारण [ ]

१७- पानी में अविलेय है

अ- चीनी [ ]

ब- नमक [ ]

स- बालू [ ]

द- खड़िया [ ]

१८— मृदु जल या मीठे जल की क्या पहचान है ?

अ- स्वाद में खारा होता है [ ]

ब— भार कम होता है [ ]

स- साबुन के साथ कम झाग देता है ( )

द- साबुन के साथ अधिक झाग देता है ( )

१९— पानी की स्थायी कठोरता दूर होती है

अ- नमक का चूर्ण मिलने पर ( )

ब- फिल्टर पेपर से छानने पर ( )

स— पानी को उबालने पर ( )

द- पानी में शीशा मिलाने पर ( )

२०— लोहे के एक अयस्क का नाम है—

अ— पाइराइटस ( )

ब— बाक्साइट ( )

स- हेमेटाइट ( )

द- मैग्नेटाईट ( )

२१ - कार्बन यौगिक पदार्थ है—

अ- लोहा ( )

ब- चांदी ( )

स- हीरा ( )

द- तांबा

२२— किसी यौगिक में अपचयन से क्या तात्पर्य हैं ?

अ— किसी यौगिक में आक्सीजन की उपस्थिति ( )

ब— किसी यौगिक में आक्सीजन का सँयुक्त होना ( )

स— किसी यौगिक में आक्सीजन का निकल जाना ( )

द— कोई सत्य नहीं है ( )

२३— पदार्थ को विस्फोटक बनाने के लिये किसका प्रयोग करते हैं ?

अ— अम्ल ( )

ब— क्षार ( )

स— लवण [ ]

द— पानी ( )

२४— मैग्नीज वायु से मिल कर क्या बनाता है ?

अ— मैग्नीज क्लोराइड ( )

ब— मैग्नीशियम आक्साइड ( )

स— मैग्नीशियम सल्फेट ( )

द— मैग्नीशियम ही रहता है ( )

२५— पानी का रासायनिक सूत्र है-

अ— $H_2O_2$ ( )

ब— $H_2$ [ ]

स— $HO_2$ ( )

द— $H_2O$ ( )

२६— पत्तियों का मुख्य कार्य है—

अ— पौधों की सुंदरता को बढाना ( )

ब— तने की रक्षा करना ( )

स— छाया प्रदान करना ( )

द— पौधों के लिये भोजन तैयार करना ( )

२७— पेड़ के कितने भाग होते हैं ?

अ— ६ [ ]

ब— ५ ( )

स— ४ ( )

द— ७ ( )

२८— जीवाणु अपनी संख्या किस प्रकार बढ़ाते हैं ?

अ— कोशिका विभाजन द्वारा ( )

ब— प्रजनन द्वारा ( )

स— जनन द्वारा ( )

द— कोई सत्य नहीं ( )

२९— कांस का पौधा किस वर्ग में आता है ? [ ५ ]

अ— शैवाल ( )

ब— कवक ( )

स— ब्रायोफाइटा ( )

द— टेरिडोफाइटा ( )

३०— अनावृत्त बीजी पौधे की प्रमुख विशेषता है-

अ— यह समुद्र के किनारे पाये जाते है ( )

ब— इनका विकास बगैर बीज के होता है ( )

स— इन पौधों में फल एवं फूल नहीं लगते ( )

द— इनके बीज शल्क कक्ष में होते है ( )

३१— पेनिसिलियम क्या है ?

अ— यह दवा है ( )

ब— यह फफूंदी है ( )

स— यह इन्जेक्सन है ( )

द— कोई सही नहीं है ( )

३२— शैवाब कहां पाये जाते है ?

अ— जमीन के अन्दर ( )

ब— पानी के अन्दर ( )

स— नम स्थानों पर ( )

द— गर्म स्थानों में ( )

३३— मनुष्य के मुंह में दांतों की संख्या कितनी होती है ?

अ— १६ [सोलह] ( )

ब— ३२ [बत्तीस] [ ]

स— १८ [अट्ठारह] [ ]

द— ४० [चालीस] [ ]

३४— लार में पाये जाने वाले इन्जाइ को क्या कहते है ?

अ— टायलिन [ ]

ब— ट्रिप्सिन [ट्रिप्सिन] [ ]

स— पेप्सीन [ ]

द— लाईपेस [ ]

३५— पित्त को निर्मित करने वाला अंग है-

अ— पैंक्रिअस [ ]

ब— यकृत [ ]

स— फेफड़ा [ ]

द— वृक्क [ ]

३६– मनुष्य के हृदय में कुल कितने भाग होते हैं ?

अ– २ [ ]

ब– ३ [ ]

स– ४ [ ]

द– १ [ ]

३७– मनुष्य के शरीर में वृक्क किस स्थान पर होता है ?

अ– हृदय के बगल में [ ]

ब– उदरगुहा में रीढ़ की हड्डी के दोनों ओर [ ]

स– आमाशय के बगल में [ ]

द– मस्तिष्क के पास [ ]

३८– मस्तिष्क के नीचे स्थित ग्रन्थि को क्या कहते है ?

अ– पीयुस ग्रान्थि [ ]

ब– अवर ग्रन्थि [ ]

स– पैंक्रिअस ग्रन्थि [ ]

द- अग्नाशय [ ]

३९– रक्त का प्रमुख कार्य क्या है ?

अ– शरीर को गति देना ( )

ब– सांस लेने में मदद करना ( )

स– $O_2$ तथा भोजन का स्थानान्तरण ( )

द– कोई सत्य नही ( )

४०– किस सर्प में जहर अधिक पाया जाता है ?

अ– धामिन ( )

ब– करंत ( )

स– अजगर ( )

द– कोबरा ( )

४१– हाथ में पायी जाने वाली हड्डी को क्या कहते हैं ?

अ– फीमर ( )

ब– रेडियन्स तथा अल्ना ( )

स– इलियम ( )

द– कशेरू ( )

४२– बुखार नापने वाले यंत्र को क्या कहते हैं ?

अ– बैरो मीटर ( )

ब– लेक्टोमीटर ( )

स– पाइरोमीटर ( )

द– थर्मामीटर ( )

४३– कौन सी प्रति क्रिया रसायनिक परिवर्तन है ?

अ– लोहे पर जंग लगना (मोर्चा) ( )

ब– लोहें को गर्म करना ( )

स– लोहे पर तेजाब पड़ना ( )

द– नाल को नाल चुम्बक में बदलना ( )

४४– वह छोटी सी छोटी रचनायें जिनसे मिलने पर शरीर निर्मित होता है कहलाती हैं–

अ– जीव द्रव्य ( )

ब– कोशिकायें ( )

स– ऊतक [ ]

द– कोई सत्य नहीं ( )

४५– पौधे रात्रि में कौन सी गैस निकालते हैं ?

अ– $O_2$ ( )

ब– $CO_2$ ( )

स– $N_2$ ( )

द– $H_2$ ( )

४७– नीला लिटमस पेपर क्षार में डालने पर कैसा हो जाता है ?

अ– लाल ( )

ब– काला [ ]

स– नीला ( )

द– पीला ( )

४७– काजू किस प्रकार के फल अन्तर्गत आता है ?

अ– शुष्क फल ( )

ब– सरस फल ( )

स– गूदे दार फल ( )

द– कोई सत्य नहीं ( )

४८– मनुष्य स्वांस क्रिया में बातावरण से कौन सी गैस लेता हैं ?

अ– $CO_2$ [ ]

ब– $O_2$ ( )

स– $N_2$ ( )

द– $H_2$ ( )

४९– केले के पौधे का निर्माण किस विधि द्वारा होता है ?

अ– बीज द्वारा ( )

ब– कलम के द्वारा ( )

स– कायिक जनन ( )

द– कोई सत्य नहीं ( )

५०– चना कैसा बीज है ?

# सामाजिक अध्ययन उपलब्धि परीक्षण

## कक्षा—८

छात्र का नाम ... ... ... ... ... ... ... —

विद्यालय का नाम ... ... ... ... ... ... ...

ग्राम तथा जिला ... ... ... ... ... ...

निम्नलिखित निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा दिये गये प्रश्नों को हल करना प्रारम्भ ..

**निर्देश—**

१– आपको प्रत्येक खण्ड के सभी प्रश्नों को हल करना है ।

२– प्रश्नों के उत्तर का सही ज्ञान होने पर ही देना है अंदाज से नहीं ।

३– नीचे जो प्रश्न दिये गये हैं उनके चार चार सम्भावित उत्तर दिये गये हैं । इन चार उत्तरों में से एक उत्तर सही है । सही उत्तर के आगे कोष्टक में ( √ ) का चिन्ह अंकित करना है ।

**उदाहरण—**

दिल्ली के लाल किले का निर्माण किस शासक के शासन काल में हुआ था ?

अ– इल्तुतमिश [ ]

ब– अलाउद्दीन खिल्जी [ ]

स– अकबर [ ]

द– शाहजहां [ ]

[१] खण्ड–अ

१– भारत में प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम किस समय हुआ था ?

अ– १९२६ ( )

ब– १८५७ ( )

स– १९४७ ( )

द– १९५२ ( )

२– आजाद हिन्द फौज का संगठन किसने किया था ?

अ– महात्मा गांधी ( )

ब– सरदार भगत सिंह ( )

स– सुभाष चन्द्र बोस ( )

द– चन्द्रशेखर आजाद ( )

३– १९२० ई० में हुये असहयोग आन्दोलन का नेतृव किसने किया था ?

अ– जवाहर लाल नेहरु ( )

ब– गगांधर तिलक ( )

स– जयप्रकाश नारायण ( )

द– महात्मा गांधी ( )

४– ताज महल को किसने बनवाया था ?

अ– अकबर ( )

ब– जहांगीर ( )

स– शाहजहां ( )

द– औरंगजेब ( )

५– कुशीनगर का ऐतिहासिक महत्व है । क्योंकि ?

अ– यहां भगबान बुद्ध का जन्म हुआ था ( )

ब– यहां राजीव गांधी का जन्म हुआ था ( )

स– यहां भगवान बुद्ध की मृत्यु हुयी थी ( )

द– यह सभी गलत है । ( )

६– सिधु घाटी की सभ्यता किससे सम्बन्धित है । ?

अ– हस्तिनापुर ( )

ब– मोहन जोदड़ो ( )

स– मथुरा ( )

द– दिल्ली ( )

७– बोद्ध धर्म के सस्थापक थे ( )

अ– महावीर स्वामी ( )

ब– गौतम बुद्ध ( )

स– शँकराचार्य ( )

द– कोई नहीं [ ]

८– गुप्त वंश का महान शासक था ?

अ– चन्द्र गुप्त विक्रमादित्य ( )

ब– अशोक ( )

स– हर्ष वर्धन ( )

द– इल्तु मिश [ )

९– किस काल को स्वर्ण युग कहा जाता है । ( )

अ– मौर्य काल ( )

ब– मुगल काल ( )

स– गुप्त काल ( )

द– कोई नहीं ( )

१०– हर्ष के समय में कौन विदेशी यात्री भारत आया था ?

अ– ह्वेन सांग ( )

ब फाह्यान ( )

स– इलबतूता ( )

द– हिटलर ( )

११– सिकन्दर ने भारत आक्रमण में सबसे महत्वपूर्ण युद्ध किया

अ– पोरस से ( )

ब– चन्द्र गुप्त से ( )

स– कोई से भी नहीं ( )

१२– सम्राट अशोक किस वंश के शासक थे ? ( )

अ– गुप्त वंश ( )

ब– मौर्य वंश ( )

स– नन्द वशं )

द– मुगल वंश ( )

१३– मुगल वंश का प्रमुख शासक था

अ– अकबर ( )

ब– बाबर ( )

स– औरंजेब ( )

द– शाहजहां ( )

१४– राणा प्रताप और अकबर के मध्य किस स्थान पर भयंकर युद्ध हुआ ?

अ– ताली कोट ( )

ब– पानीपत ( )

स– हल्दी घाटी ( )

द– दिल्ली ( )

१५- इतिहास में किस साम्राट को पागल साम्राट कहा गया है ?

अ- अलाउद्दीन खिल्जी ( )

ब- मुहम्मद तुगलक ( )

स- टोडरमल ( )

द- अकबर ( )

१६- मुहम्मद बिन तुगलक ने किसके सिक्के चलाये थे ? ( )

अ- चांदी के ( )

ब- चमड़े के ( )

स- सोने के ( )

द- तांबे के ( )

१७- मुगल साम्राज्य के पतन का कौन उत्तरदायी था ? ( )

अ- औरंगजेब ( )

ब- चंगेज खां ( )

स- मीर जाफर ( )

द- बहादुरशाह ( )

१८- सती प्रथा का अन्त किसने किया ?

अ- महात्मा गांधी ( )

ब- स्वामी बिवेकानन्द ( )

स- राजा राममोहन राय ( )

द- सुभाष चन्द्र बोस ( )

१९- हिन्दुओं से जजिया कर लेना किस शासक ने बन्द कर दिया ?

अ- मुहम्मद तुगलक ( )

ब- जहांगीर ( )

स- अकबर ( )

द- शाहजहां ( )

२०- पानी पत का तीसरा युद्ध किस किस के मध्य हुआ था ?

अ- मराठों और अहमदशाह ( )

ब- हुमायूं और शेरशाह सूरी ( )

स- अंग्रेजों एवं मराठों ( )

द- अंग्रेज और हुमायूं ( )

## खण्ड–ब

१- निम्न में से कौन सा देश सबसे बड़ा है ?

अ- भारत ( )

ब- पाकिस्तान ( )

स- अफगानिस्तान ( )

द- श्री लंका ( )

२– हिमालय का सर्वोच्च शिखर कहां पर स्थित है ?

अ– भारत ( )

ब– नेपाल ( )

स– भूटान ( )

द– चीन ( )

३— प्रथम एवरेस्ट विजेता कौन था ?

अ— माधव सिंह ( )

ब— जोगिन्दर सिंह ( )

स– शेरपातेन सिंह ( )

द– तेजबहादुर ( )

४– भारत में कहां पर बर्षा सबसे अधिक होती है ?

अ– देहरादून ( )

ब– नैनीताल ( )

स— शिमला ( )

द - चेरापूंजी ( )

५ – भारत में किस प्रदेश में गन्ने की पैदावार अधिक होती है ?

अ– उ० प्र० ( )

ब बिहार ( )

स– महाराष्ट्र ( )

द– कर्नाटक ( )

६– भारत के कौन से स्थान पर रेलवे इजंन का निर्माण होता है ?

अ– गोरखपुर [ ]

ब— इलाहाबाद [ ]

स– वाराणसी [ ]

द– बम्बई [ ]

७– रिहन्दबांध किस राज्य में स्थित है ?

अ– विहार ] ]

ब– उडीसा [ ]

स – इलाहाबाद [ ]

द– उ० प्र० [ ]

८— भारत में जलपोत निर्माण का बड़ा केन्द्र कौन है ?

अ– कोचीन [ ]

ब– विशाखापटनम [ ]

स– मद्रास [ ]

द– बम्बई [ ]

९– निम्नलिखित में से किस राज्य की जनसंख्या अधिक है ?

अ– उत्तर प्रदेश ( )
ब– बिहार ( )
स– मध्य प्रदेश ( )
द– केरल ( )

१०– भारत की राजधानी कहां पर स्थित है ?

अ– लखनऊ ( )
ब– बम्बई ( )
स– कलकत्ता ( )
द– दिल्ली ( )

११– कौन सा देश सबसे अधिक गेहूं का उत्पादन करता है ?

अ– अमेरिका ( )
ब– रूस ( )
स– जापान ( )
द– भारत ( )

१२– कच्चे रेशम का सर्वाधिक उत्पादन कहां पर होता है ?

अ– भारत ( )
ब– चीन ( )
स– जापान ( )
द– रूस ( )

१३– संसार में दिन कब बराबर होते हैं ?

अ– २३ सितम्बर ( )
ब– २१ जून ( )
स– २१ दिसम्बर ( )
द– १४ जनवरी [ ]

१४– उत्तर प्रदेश में जिलों की संख्या कितनी है ?

अ– ५४ ( )
ब– ५६ ( )
स– ५२ ( )
द– ४५ ( )

१५– जापान के निकट बहने वाली धारा को क्या कहते हैं ?

अ– क्यूरोसीवो ( )
ब– गल्फस्ट्रीम ( )
स– क्यूराइल ( )
द– कोई सत्य नहीं ( )

## खण्ड—स

१— नगरपालिका का मुख्य कार्य किस स्तर की शिक्षा व्यवस्था करना है ?

अ— प्राथमिक स्तर ( )
ब— पूर्व माध्यमिक स्तर [ ]
स— उच्चतर माध्यमिक स्तर [ ]
द— उच्च स्तर [ ]

२— लोकतंत्र में सत्ता किसके हाथ होती है ?

अ— सरकार द्वारा मनोनीत सदस्यों के हाथ [ ]
ब— राज्य कर्मचारियों के हाथ [ ]
स— जनता के प्रतिनिधियों के हाथ [ ]
द— कोई सत्य नहीं [ ]

३— लोकसभा का कार्यकाल कितना होता है ?

अ— ४ वर्ष [ ]
ब— ५ वर्ष [ ]
स— ६ वर्ष [ ]
द— १० वर्ष [ ]

४— प्रधान मंत्री की नियुक्ति कौन करता है ?

अ— राष्ट्रपति ( )
ब— उप राष्ट्रपति ( )
स— राज्यपाल ( )
द— लोक सभा के सदस्य ( )

५— राष्ट्रपति का चुनाव किसके द्वारा होता है ?

अ— संसद के दोनों सदनों द्वारा ( )
ब— सांसदों व विधायकों द्वारा ( )
स— सांसदों द्वारा ( )
द— विधायकों द्वारा ( )

६— नागरिक शास्त्र में किसका वर्णन होता है ?

अ— नागरिकों के अधिकारों का ( )
ब— अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं का ( )
स— संविधान का ( )
द— कविताओं का ( )

७— मंत्रिपरिषद पर नियंत्रण का अधिकार किसे है ?

अ— ससद ( )
ब— लोक सभा ( )
स— राज्य सभा ( )
द— विधान सभा ( )

८— राष्ट्रपति के उम्मीदवार की आयु कितनी होनी आवश्यक है ?

अ— ६५ वर्ष ( )

ब— ३५ वर्ष ( )

स— ५५ वर्ष ( )

द— १८ वर्ष ( )

९— भारत का सर्वोच्च न्यायालय कहां पर स्थित है ?

अ— इलाहाबाद ( )

ब— लखनऊ ( )

स— दिल्ली ( )

द— भोपाल ( )

१०— लोक सभा के सदस्यों का निर्वाचन कितने वर्षों के लिए किया जाता हैं ?

अ— ४ वर्ष ( )

ब— ५ वर्ष [ ]

स— ६ वर्ष ( )

द— ७ वर्ष ( )

११— लोक सभा को समय से पूर्व भंग करने का अधिकार किसे है ?

अ— प्रधान मंत्री ( )

ब— मुख्य मंत्री ( )

स— राष्ट्रपति ( )

द— मुख्य न्यायधीश ( )

१२— उपराष्ट्रपति का चुनाव कौन करता हैं ?

अ— राष्ट्रपति ( )

ब— प्रधान मंत्री ( )

स— सँसद के दोनों सदन ( )

द— जनता ( )

१३— देश की सुरक्षा का कार्य किसे दिया जाता है ?

अ— मुख्य मंत्री ( )

ब— प्रधान मंत्री ( )

स— सुरक्षा मंत्री ( )

द— विदेश मंत्री ( )

१४— भारत का सर्वप्रथम प्रधानमंत्री कौन था ?

अ— लाल बहादुर शास्त्री ( )

ब— डा० राजेन्द्र प्रसाद ( )

स— लाला लाजपतराय ( )

द— डा० राधाकृष्णन ( )

# सामाजिक-आर्थिक स्तर परिसूची (शहरी)

# (Socio-economic Status Scale

(Urban—Form A)

BY

**S. P. Kulshrestha**
Department of Education
**D. A. V. College Dehradun**

कृपया इन्हें भरिये –

नाम ........................... आयु ............ जन्म तिथि ............

कक्षा व वर्ग ........................... रौल नं० ............ तारीख ............

विद्यालय ..............................................................

घर का पूरा पता ..............................................................

## निर्देश

इस सूची का उद्देश्य तुम्हारे परिवार के सामाजिक-आर्थिक स्तर का निर्धारण करना है। अतः तुम अपने माता/पिता, भाई/बहिन के बारे में सही-सही सूचनायें भरो। विश्वास रखो, तुम्हारे द्वारा दी गयी सूचनायें गुप्त रखी जावेंगी और किसी को भी नहीं बताई जायेंगी। इस परिसूची में प्रत्येक प्रश्न के कई सम्भावित उत्तर दिये गये हैं—तुम इनमें से अपने परिवार के ऊपर लागू होने वाले उत्तरों को चुनो और उनके सामने बने गोलों में सही (✓) का निशान लगा दो।

National Psychological Corporation
Labh Chand Market, Raja Mandi, AGRA-2

१. तुम्हारे पिता/संरक्षक/माँ/भाई/बहिन किस प्रकार के व्यवसाय में कार्य करते हैं ?

| | संरक्षक पिता | माता | सबसे बड़ा भाई | सबसे बड़ी बहिन |
|---|---|---|---|---|
| (क) ऐसे व्यवसाय जिनमें उच्च शिक्षा की उपाधि की आवश्यकता पड़ती है। जैसे—वकील, एडवोकेट, प्रोफेसर, डाक्टर व इन्जीनियर आदि। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (ख) उच्च स्तरीय प्रशासनात्मक कार्यकर्त्ता या किसी बड़े व्यावसायिक संस्थान के मालिक/प्रबन्धक आदि। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (ग) ऐसे व्यवसाय जिनमें कम से कम स्नातक शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है। जैसे हाईस्कूल या इण्टर कालेज के शिक्षक, मैडीकल रिप्रेजेन्टेटिव आदि। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (घ) मध्यम वर्गीय व्यावसायिक कार्यों के मालिक/प्रबन्धक या पार्टनर तथा सेना के कमीशन्ड आफीसर। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (य) सामान्य व्यावसायिक या तकनीकी कार्य जैसे प्राइमरी या नर्सरी स्कूल शिक्षक, दुकानदार या सचिव आदि। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (र) कौशल युक्त व्यवसाय जैसे क्राफ्टमैन, लुहार, बढ़ई तथा बिजली वाला आदि। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (ल) सेवा व्यवसाय (Service worker) जैसे क्लर्क, टाइपिस्ट स्टेनो, पुलिसमैन, फायरमैन तथा सैना में नॉन कमीशन्ड अफसर। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (व) मध्यम श्रेणी के कौशल युक्त व्यवसाय। जैसे मशीन-आपरेटर आदि। (Semi-skilled Jobs) | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (स) बहुत मामूली कार्य (Unskilled Jobs)। जैसे सेवक, चपरासी, मजदूर, कृषक आदि। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |

२. तुम्हारे परिवार के सदस्यों की सबसे अधिक शिक्षा कहाँ तक हुई है ?

| | संरक्षक पिता | माता | सबसे बड़ा भाई | सबसे बड़ी बहिन |
|---|---|---|---|---|
| (क) कालेज शिक्षा के बाद कोई उच्चस्तरीय उपाधि जैसे Ph. D. या D. Litt. आदि। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (ख) स्नातकोत्तरीय शिक्षा (M. A., M. Sc., M. Com., M. Sc. (Ag.) आदि।) | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (ग) स्नातकीय शिक्षा (B. A., B. Sc., B. Com., B Sc. (Ag) आदि।) | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (घ) हायर सैकन्डरी/इन्टरमीडियेट | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (य) हाईस्कूल | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (र) मिडिल स्कूल | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (ल) प्राइमरी स्कूल | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (व) अनपढ़ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |

३. तुम्हारे परिवार के विभिन्न सदस्यों के पास कौन सी सबसे ऊँची व्यावसायिक उपाधियाँ हैं ?

| | संरक्षक पिता | माता | सबसे बड़ा भाई | सबसे बड़ी बहिन |
|---|---|---|---|---|
| (क) स्नातकोत्तरीय शिक्षा के बाद की व्यावसायिक उपाधि। (जैसे D. E. V. G. या D. M S. P., D. P. R. आदि।) | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (ख) स्नातक शिक्षा के बाद की व्यावसायिक उपाधि या डिप्लोमा। (जैसे B. Ed.) | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (ग) हायर सैकन्डरी/इन्टर के बाद का व्यावसायिक डिप्लोमा। (जैसे शिक्षक का डिप्लोमा, इन्जीनियरिंग का डिप्लोमा आदि) | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (घ) हाईस्कूल की शिक्षा के बाद प्राप्त प्रशिक्षण उपाधि। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (य) मिडिल स्कूल के बाद की प्रशिक्षण उपाधि। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (र) सामान्य प्रशिक्षण उपाधि। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (ल) कोई भी प्रशिक्षण या व्यावसायिक उपाधि नहीं है। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |

४. आपके परिवार की कुल मासिक आय कितनी है ?

(क) २००० से अधिक ☐
(ख) १५०१ रुपये से २००० तक ☐
(ग) १००१ रुपये से १५०० तक ☐
(घ) ५०१ रुपये से १००० तक ☐
(य) २०१ रुपये से ५०० तक ☐
(र) १०१ रुपये से २०० तक ☐
(ल) ५० रुपये से १०० तक ☐
(व) ५० रुपये से कम ☐

५. आपके परिवार पर कितना रुपया उधार है और कितना रुपया जमा है ?

| रुपया | बैंक में जमा | पोस्ट आफिस में जमा | उधार | एक दम जरूरत पड़ने पर कितना धन इकट्ठा कर सकते हैं। |
|---|---|---|---|---|
| (क) २००० से अधिक | ▭ | ▭ | ▭ | ▭ |
| (ख) १५०१ से २००० तक | ▭ | ▭ | ▭ | ▭ |
| (ग) १००१ से १५०० तक | ▭ | ▭ | ▭ | ▭ |
| (घ) ५०१ से १००० तक | ▭ | ▭ | ▭ | ▭ |
| (य) २०१ से ५०० तक | ▭ | ▭ | ▭ | ▭ |
| (र) १०१ से २०० तक | ▭ | ▭ | ▭ | ▭ |
| (ल) ५० से १०० तक | ▭ | ▭ | ▭ | ▭ |
| (व) ५० से कम | ▭ | ▭ | ▭ | ▭ |
| (स) बिलकुल नहीं | ▭ | ▭ | ▭ | ▭ |

६. आपका मकान—
(क) स्वयं का है। ▭
(ख) स्वयं किराये पर हैं पर घर का मकान किराये पर उठा है। ▭
(ग) अपने मकान का एक भाग किराये पर उठा रखा है। ▭
(घ) अपना मकान नहीं है, किराये पर रहते हैं। ▭

७. आपका मकान किस प्रकार का है ?
(क) कई मंजिल वाला या बड़ा बंगला। ▭
(ख) छोटा बंगला ▭
(ग) पक्का मकान ▭
(घ) साधारण मकान ▭

८. स्कूल में—
(क) तुम्हारी फीस माफ है। ▭
(ख) तुम्हारे भाई-बहिनों की फीस माफ है। ▭
(ग) फीस माफ कराने की जरूरत नहीं है। ▭

९. तुम तथा तुम्हारे भाई/बहिन किस प्रकार के स्कूल में पढ़ते हैं ?
(क) कन्वेन्ट स्कूल या अन्य अंग्रेजी माध्यम का स्कूल ▭
(ख) राजकीय स्कूल ▭
(ग) राजकीय सहायता प्राप्त स्कूल ▭
(घ) प्राईवेट स्कूल ▭

१०. तुम्हारे घर में कौन-कौन से नौकर कार्य करते हैं ?
(क) आफिस में कार्य करने वाले चपरासी ▭
(ख) रसोइया ▭
(ग) आया ▭
(घ) माली ▭
(र) बर्तन मांजने वाला ▭
(ल) सामान्य घरेलू नौकर ▭
(व) कोई नौकर नहीं है। ▭

११. तुम्हारे पास कितने जोड़े—

| | दो से कम | ३-५ तक | ५ से अधिक |
|---|---|---|---|
| (क) कपड़े हैं— | ▭ | ▭ | ▭ |
| (ख) जूते हैं— | ▭ | ▭ | ▭ |

१२. तुम्हारे घर में नीचे लिखी चीजों में से जो चीजें मौजूद हों उनके सामने दिये गये गोलों में (√) सही का निशान लगाइये।
(क) कार ▭, मोटर साइकिल या स्कूटर ▭, रिक्शा ▭, साइकिल ▭
(ख) टेलीविजन ▭, रिकार्डप्लेयर ▭, रेडियो/ट्रांजिस्टर ▭, ग्रामोफोन ▭
(ग) रैफरीजरेटर ▭, सेफ ▭, स्टील अलमारी ▭
(घ) सोफासैट ▭, डाईनिंग टेबिल ▭, ड्रैसिंग टेबिल ▭
(य) उत्तम कुर्सी-मेज ▭, साधारण कुर्सी-मेज ▭
(र) बिजली का स्टोव ▭, वाटर बोइलर ▭, गैस का चूल्हा ▭, प्रैशर कुकर ▭,

(ल) दीवार घड़ी ▭, मेजघड़ी ▭, हाथ घड़ी ▭,

(व) वैक्यूम क्लीनर ▭, कॉफी परक्यूलर ▭, बिजली का आटोमैटिक प्रैस ▭, साधारण प्रैस ▭

(स) बिजली का पंखा ▭, मिक्सर (mixer) ▭, ग्राइन्डर ▭, सिलाई की मशीन ▭

(श) कैमरा ▭, टैलिस्कोप ▭, डिनर सैट ▭, टी सैट ▭, लैमन सैट ▭, पिकनिक सैट ▭,

(ह) डाइनिंग रूम ▭, ड्राइंग रूम ▭, अध्ययन कक्ष ▭, शयन कक्ष ▭, स्नानगृह ▭, शौचालय ▭,

**१३. तुम्हारे घर में किस प्रकार के समाचार पत्र/पत्रिका आती हैं ?**

(क) दैनिक ▭
(ख) साप्ताहिक ▭
(ग) मासिक ▭
(घ) त्रैमासिक ▭
(य) अर्धवार्षिक ▭
(र) वार्षिक ▭
(ल) कभी-कभी आती है ? ▭
(व) कभी नहीं ▭

**१४. तुम्हारे मोहल्ले या नगर में उत्सव होने पर तुम्हें या तुम्हारे परिवार के सदस्य को बुलाया जाता है ?**

(क) अक्सर बुलाया जाता है। ▭
(ख) कभी-कभी बुलाया जाता है। ▭
(ग) कभी नहीं बुलाया जाता है। ▭

**१५. तुम/तुम्हारे माता/पिता आदि किसके सदस्य/पदाधिकारी हैं ?**

(क) सामाजिक संस्थायें ▭
(ख) व्यावसायिक संस्थायें ▭
(ग) अन्य संस्थायें ▭
(घ) किसी संस्था के नहीं ▭

**१६. तुम जिस मोहल्ले में रहते हो उसमें अधिकतर—**

(क) बड़े-बड़े लोग रहते हैं। ▭
(ख) मध्यम वर्गीय लोग रहते हैं। ▭
(ग) क्लार्क या दुकान-सहायक जैसे लोग रहते हैं। ▭
(घ) साधारण वर्ग के लोग रहते हैं। ▭
(य) निम्न स्तरीय लोग रहते हैं। ▭

**१७. तुम्हारे बारे में अधिकतर लोग क्या सोचते हैं कि तुम**

(क) अत्याधिक प्रतिष्ठित परिवार के हो। ▭
(ख) कुछ अधिक प्रतिष्ठित परिवार के हो। ▭
(ग) मध्यम वर्गीय परिवार के हो। ▭
(घ) साधारण परिवार के हो। ▭
(य) निम्न स्तरीय परिवार के हो। ▭

**१८. क्या तुम्हारा परिवार जाति प्रथा में विश्वास रखता है ?**

(क) हां ▭ (ख) नहीं ▭ (ग) अनिश्चित ▭

**१९. यदि तुम्हें घर से बहुत दूर पढ़ने या नौकरी करने जाना पड़े तो क्या तुम्हारे माता पिता तुम्हें भेजना पसन्द करेंगे ?**

(क) हां ▭ (ख) नहीं ▭ (ग) अनिश्चित ▭

**२०. क्या तुम नयी चीजों को/नवीन विधियों को एक-दम स्वीकार कर सकते हो ?**

(क) हां ▭ (ख) नहीं ▭ (ग) अनिश्चित ▭

Total Score = [ ] Category [ ]

गोपनीय

FORM B. (Rural)

# सामाजिक-आर्थिक स्तर परिसूची

## (Socio-economic Status Scale)

निर्मित एवं मानकीकृत द्वारा

डा० एस० पी० कुलश्रेष्ठ

शिक्षण विभाग

डी० ए० वी० कालेज, देहरादून

---

कृपया इन्हें भरिये

नाम.................................... आयु....................................

ग्राम.................................... तहसील....................................

जिला.................................... तारीख....................................

पूरा....................................................................

---

### निर्देश

इस परिसूची में तुम्हारे परिवार के बारे में कुछ सूचनायें मांगी गयी हैं। अतः तुम अपने माता पिता, सबसे बड़े भाई/सबसे बड़ी बहिन के बारे में सही सूचनायें भरो। विश्वास रखो कि तुम्हारे द्वारा दी गयी सूचनायें गुप्त रखी जायेंगी और किसी भी हालत में किसी को भी नहीं बताई जायेंगी। इस परिसूची में प्रत्येक प्रत्येक के कई सम्भावित उत्तर दिये गये हैं—तुम इनमें से अपने परिवार के ऊपर लागू होने वाले उत्तरों को चुनो और उनके सामने बने गोलों में सही (√) का निशान लगा दो।

नेशनल साइकलॉजिकल कारपोरेशन राजामंडी, आगरा—२८२००२

| १—आप क्या काम करते हैं ? | माता | पिता | सबसे बड़ा भाई | सबसे बड़ी बहिन |
|---|---|---|---|---|
| (क) कोई काम नहीं करते | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (ख) कृषि-मजदूर | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (ग) पशुपालन, वन, मछली, शिकार व पौध लगाना आदि। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (घ) छोटे-छोटे घरेलू काम | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (य) घरेलू काम के अलावा अन्य प्रकार का सामान तैयार करना | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (र) निर्माण कार्य | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (ल) व्यापार एवं दुकानदारी | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (व) यातायात, संग्रहण तथा संचार | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (स) अन्य प्रकार के कार्य | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (इ) खेती | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |

२—आप किस जाति के हैं।

शूद्र ☐, वैश्य ☐, क्षत्री ☐, ब्राह्मण ☐

| ३—आप कितने पढ़-लिखे हैं ? | | | | |
|---|---|---|---|---|
| (क) बिल्कुल नहीं पढ़े | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (ख) केवल पढ़ सकते हैं | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (ग) पढ़ व लिख सकते हैं | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (घ) प्राइमरी | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (य) मिडिल | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (र) हाईस्कूल | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (ल) स्नातक | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |
| (व) स्नातकोत्तर | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ |

४—आप कितनी संस्थाओं के (राजनीतिक, सामाजिक, ग्रामीण व सांस्कृतिक आदि) सदस्य हैं ?

- (क) किसी के नहीं ☐
- (ख) एक संस्था के ☐
- (ग) एक से अधिक संस्था ☐
- (घ) पदाधिकारी ☐
- (य) बड़े सार्वजनिक नेता ☐

५—आपका कैसा घर है ?

- (क) अपना घर नहीं है ☐
- (ख) झोंपड़ी ☐
- (ग) कच्चा ☐
- (घ) कच्चा-पक्का ☐
- (य) पक्का ☐
- (र) पक्का बड़ा ☐

६—आपके घर में क्या-क्या चीजें हैं ?

कैमरा☐, घड़ी☐, अलमारी☐, साईकिल☐, दीवार घड़ी☐, रेडियो☐, कुर्सी मेज☐, सिलाई मशीन☐, स्टोव☐, मोटर-साइकिल☐, उन्नतशील कृषि यन्त्र☐, बैलगाड़ी☐, अन्य☐, हाथी☐, घोड़ा☐, ऊँट☐

७—आपके परिवार की औसत मासिक आमदनी कितनी है ?

(क) ५० रुपये से कम ▭
(ख) ५० से १०० रुपये के बीच ▭
(ग) १०१ व २०० रुपये के बीच ▭
(घ) २०१ व ३०० रुपये के बीच ▭
(य) ३०१ व ४०० के बीच ▭
(र) ४०१ व ५०० के बीच ▭
(ल) ५०१ व ७०० के बीच ▭
(व) ७०० व १००० के बीच ▭
(स) १००० रुपये से ऊपर ▭

८—आपके पास कितनी जमीन है ?

(क) नहीं है ▭
(ख) १ बीघा से कम ▭
(ग) १ व ५ बीघा के बीच ▭
(घ) ६ व २० बीघा के बीच ▭
(य) २१ व ५० बीघा के बीच ▭
(र) ५१ व ७५ बीघा के बीच ▭
(ल) ७५ व १०० बीघा के बीच ▭
(व) १०० बीघा से ऊपर ▭

९—आपका परिवार कैसा है ?

(क) एकाकी ▭
(ख) संयुक्त ▭

१०—आपके परिवार के कितने सदस्य हैं ?

(क) ३ या ३ से कम ▭
(ख) ३ व ५ के बीच ▭
(ग) ५ से ऊपर ▭

११—आपके पास कितने बच्चे हैं ?

(क) नहीं हैं ▭
(ख) केवल लड़कियाँ हैं ▭
(ग) लड़के व लड़कियाँ दोनों हैं ▭
(घ) केवल लड़के हैं ▭

१२—आपके घर में कितने जानवर हैं

(क) नहीं हैं ▭
(ख) २ से कम हैं ▭
(ग) ३ व ५ के बीच ▭
(घ) ५ से अधिक ▭

१३—आपके घर पर दूध देने वाले जानवर कितने हैं ?

| | भैंस | गाय | बकरी |
|---|---|---|---|
| (क) नहीं हैं | ▭ | ▭ | ▭ |
| (ख) २ से कम | ▭ | ▭ | ▭ |
| (ग) २ व ३ के बीच | ▭ | ▭ | ▭ |
| (घ) ३ से अधिक | ▭ | ▭ | ▭ |

१४—क्या आप—

(क) खुद खेती करते हैं। ▭
(ख) दूसरों से कराते हैं। ▭

१५—क्या आपको परिवार नियोजन में विश्वास है ?
हाँ ▭, नहीं ▭, अनिश्चित ▭

१६—क्या आपके घर पत्र-पत्रिकायें आती हैं।
हाँ ▭, कभी-कभी ▭, नहीं ▭

१७—गाँव में कोई विशेष बात या घटना होने पर आपकी राय ली जाती है।
नहीं ▭, कभी-कभी ▭, बहुधा ▭

१८—क्या आपके घर नौकर रहता है ?
हाँ ▭ नहीं ▭

१९—क्या आप कृषि के नये ढंगों, फसल की नई किस्मों आदि को एकदम स्वीकार कर लेते हैं ?
(क) हाँ ▭
(ख) अनिश्चित ▭
(ग) नहीं ▭

२०—आपके परिवार का कितना रुपया जमा है, उधार है या जरूरत पड़ने पर एकदम इकट्ठा कर सकते हैं।

| धन | जमा | उधार | एकदम जरूरत पड़ने पर इकट्ठा कर सकना |
|---|---|---|---|
| (क) ५० रु० से कम | ▭ | ▭ | ▭ |
| (ख) ५० व १०० रु० के बीच | ▭ | ▭ | ▭ |
| (ग) १०१ व २०० रु० के बीच | ▭ | ▭ | ▭ |
| (घ) २०१ व ३०० रु० के बीच | ▭ | ▭ | ▭ |
| (य) ३०१ व ४०० रु० के बीच | ▭ | ▭ | ▭ |
| (र) ४०१ व ५०० रु० के बीच | ▭ | ▭ | ▭ |
| (ल) ५०१ व ७०० रु० के बीच | ▭ | ▭ | ▭ |
| (व) ७०१ व १००० रु० के बीच | ▭ | ▭ | ▭ |
| (स) १००० रुपये से अधिक | ▭ | ▭ | ▭ |

Total Score = [ ] Category [ ]